Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 23 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, मंगलवार 02 जुलाई 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

जब भूत और भविष्य अव्यक्त हो जाते हैं, तो आत्मा व्यक्त हो जाती है।

When past and future become inexpressible the soul expresses itself.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

संक्षिप्त समाचार

दो दिन में 28,534 यात्रियों ने किये बाबा बर्फानी के दर्शन

जम्मू (आरएनएस)। जम्मू से सोमवार को 6,461 यात्रियों का एक और जत्था पवित्र अमरनाथ गुफा के लिए रवाना हुआ। यात्रा के पहले दो दिन में 29 और 30 जून को 28 हजार से ज्यादा तीर्थयात्रियों ने बाबा बर्फानी के दर्शन किए हैं। अधिकारियों ने बताया कि पिछले दो दिन में 28,534 श्रद्धालुओं ने गुफा मंदिर के अंदर दर्शन किए। एक अधिकारी ने कहा, आज जम्मू के भगवती नगर यात्री निवास से 6,461 यात्रियों का एक और जत्था दो सुरक्षा काफिलों में घाटी के लिए रवाना हुआ। इनमें से 2,321 यात्री 118 वाहनों के काफिले में सुबह 3.15 बजे उत्तरी कश्मीर के बालटाल आधार शिविर के लिए रवाना हुए।

महाराष्ट्र में बारिश के बीच सड़क पर टहलता दिखा मगरमच्छ

रत्नागिरी (आरएनएस)। महाराष्ट्र के रत्नागिरी में बारिश के बीच सड़क पर एक मगरमच्छ टहलता दिखा, जिससे लोगों में दहशत फैल गई। घटना का एक वीडियो भी सामने आया है। वीडियो चिपलुण के चिंचानाका क्षेत्र का है। आशंका जताई जा रही है कि मगरमच्छ शिव नदी से सड़क पर आया होगा। सोशल मीडिया पर सामने आए वीडियो में करीब 6 फिट का मगरमच्छ रात में वाहनों के बीच चलता दिख रहा है। महाराष्ट्र में हर साल बारिश होने पर रत्नागिरी के शिव नदी में पानी उफान पर आता है, जिससे नदी से जानवर बाहर आ जाते हैं।

देश में लागू हुए तीन नए कानून, तीन साल के भीतर न्याय, मॉब लिंचिंग के लिए भी प्रावधान

नई दिल्ली (आरएनएस)। भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता और भारतीय साक्ष्य अधिनियम सोमवार से देश में लागू हो गए।

गृह मंत्रालय के मुताबिक, इस बदलाव से एक ऐसी प्रणाली स्थापित होगी जिससे तीन साल में किसी भी पीड़ित को न्याय मिल सकेगा। तीनों कानून संसद ने पिछले साल शीतकालीन सत्र में पारित किए थे। नए कानून देश में ब्रिटिश राज से चले आ रहे इंडियन पीनल कोड (आईपीसी), दंड प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) और एविडेंस एक्ट की जगह आए हैं।

नए कानून में बलात्कार के लिए धारा 375 और 376 की जगह धारा 63 होगी। सामूहिक बलात्कार की धारा 70 होगी। हत्या के लिए धारा 302 की जगह धारा 101 होगी। लोकसभा ने इन तीनों विधेयकों को 20 दिसंबर और राज्यसभा ने 21 दिसंबर को पारित किया था।

भारतीय न्याय संहिता, 2023 में 21 नए अपराधों को जोड़ा गया है। इसमें एक नया अपराध मॉब लिंचिंग का भी है। इसके अलावा 41 विभिन्न अपराधों में सजा बढ़ाई गई है, 82 अपराधों में जुर्माना बढ़ा है, 25 अपराध ऐसे हैं जिनमें न्यूनतम सजा की शुरुआत की गई है। छह अपराधों में सामुदायिक सेवा को दंड के रूप में स्वीकार किया गया है और 19 धाराओं को निरस्त किया गया है। इसी तरह भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 2023 के अंतर्गत 170 धाराएं होंगी। कुल 24 धाराओं में बदलाव किया है। नई धाराएं और उपाधाराए जोड़ी गई हैं।

सरकार का मानना है कि नए कानून लागू होने से न्याय जल्दी मिलेगा और तय समय के अंदर चार्जशीट फाइल हो सकेगी। साक्ष्य जुटाने के लिए 900 फॉरेंसिक वैन देशभर के 850 पुलिस थानों के साथ जोड़ी जा रही हैं। गरीबों के लिए न्याय महंगा नहीं होगा।

गृह मंत्रालय के मुताबिक नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 में नौ नए सेक्शन और 39 नए सब सेक्शन जोड़े गए हैं। इसके अलावा 44 नई व्याख्याएं और स्पष्टीकरण जोड़े हैं और 14 धाराओं को निरस्त किया है।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने ये विधेयक संसद में रखे थे, जिन्हें ध्वनिमत से पारित किया गया। पिछले साल 25 दिसंबर को राष्ट्रपति ने इन्हें मंजूरी दी थी। विधेयक पर चर्चा के दौरान केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने राज्यसभा में कहा था कि विधेयक का उद्देश्य दंड देना नहीं है, इसका उद्देश्य न्याय देना है। उन्होंने कहा था कि इन विधेयकों की आत्मा भारतीय है। व्यास, बृहस्पति, कात्यायन, चाणक्य, वात्स्यायन, देवनाथ ठाकुर, जयंत भट्ट, रघुनाथ शिरोमणि अनेक लोगों ने जो न्याय का सिद्धांत दिया है उसको इसमें उतारा गया है। सरकार का मानना है कि यह कानून स्वराज की और बड़ा कदम है। गृह मंत्री ने महात्मा गांधी का जिक्र करते हुए कहा था कि गांधी जी ने शासन परिवर्तन की लड़ाई नहीं लड़ी, उन्होंने स्वराज की लड़ाई लड़ी थी। ये कानून लागू होने से तारीख पर तारीख का जमाना चला जाएगा। तीन साल में किसी भी पीड़ित को न्याय मिल जाए ऐसी न्याय प्रणाली इस देश के अंदर प्रतिस्थापित होगी। उन्होंने कहा कि इस बिल में इतनी दूरदर्शिता रखी गई है कि आज मौजूद सारी तकनीक से लेकर आने वाले सौ वर्षों की तकनीक, सभी को सिर्फ नियमों में परिवर्तन करके समाहित किया जा सकेगा।

इसमें राजद्रोह कानून के अंग्रेजी प्रावधान को समाप्त कर दिया गया है। सरकार के खिलाफ कोई भी बोल सकता है, लेकिन देश के खिलाफ अब नहीं बोल सकते हैं। देश के खिलाफ बोलने या साजिश करने पर सजा का प्रावधान किया गया है।

गृह मंत्री अमित शाह ने बताए नए आपराधिक कानूनों के फायदे

नई दिल्ली। देश में आज से 3 नए आपराधिक कानून लागू हो गए हैं। इस संबंध में गृह मंत्री अमित शाह ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कानूनों के बारे में और विस्तृत जानकारी दी।उन्होंने कहा कि औपनिवेशिक कानून का दौर अब खत्म हो गया है, देश में दंड की जगह न्याय मिलेगा और देरी की जगह त्वरित सुनवाई होगी।उन्होंने जनता को बधाई देते हुए कहा कि आजादी के 77 साल बाद आपराधिक न्याय प्रणाली पूरी तरह से स्वदेशी हो रही है। शाह ने कहा, तीनों नए कानून मध्य रात्रि से काम कर रहे हैं। भारतीय दंड संहिता की जगह भारतीय न्याय संहिता आ चुकी है। सबसे पहले हमने इसमें संविधान की आत्मा के तहत दफाओं और अध्यायों की प्राथमिकता तय की है। मॉब लिंचिंग के लिए कानून में कोई प्रावधान नहीं था, नए कानून में मॉब लिंचिंग को समझाया गया। राजद्रोह ऐसा कानून था, जो अंग्रेजों ने अपनी सुरक्षा के लिए बनाया था। इसे हमने खत्म कर दिया।

आज का दिन ऐतिहासिक, दंड के स्थान पर न्याय को प्राथमिकता देने वाले कानून देशभर में लागू : मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय

मुख्यमंत्री ने तीन नए आपराधिक कानूनों पर आधारित पुस्तक का किया विमोचन

नए कानून लागू होते ही 2 एफआईआर और एक मर्ग हुआ दर्ज

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने कहा है कि आज 1 जुलाई 2024 हमारे देश के लिए एक ऐतिहासिक दिन है। आज से देश भर में तीन नए आपराधिक कानून लागू हो रहे हैं। ये सभी कानून डेढ़ सौ वर्ष पहले अंग्रेजों द्वारा लागू कानूनों के स्थान पर प्रभावशील होंगे। यह परिवर्तन हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और गृहमंत्री श्री अमित शाह के दृढ़ संकल्पों को दर्शाता है। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय आज अपने निवास कार्यालय रायपुर में गृह विभाग द्वारा नवीन आपराधिक कानूनों पर आधारित पुस्तिका के विमोचन के मौके पर यह बातें कही।

मुख्यमंत्री श्री साय ने गृह विभाग के अधिकारियों की सराहना करते हुए कहा कि आप सभी ने जागरूकता और प्रशिक्षण की दृष्टि से बहुत अच्छा प्रयास किया है। ये तीनों कानून सभी नागरिकों को न्याय प्रदान करने के उद्देश्य से बनाए गए हैं और प्रदेश में इसका बेहतर क्रियान्वयन हो, यह सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता एवं भारतीय साक्ष्य अधिनियम के नाम में ही इनके उद्देश्य भी समाहित हैं। इनमें दंड के स्थान पर न्याय को प्राथमिकता दी गई है। ये कानून भारत सरकार की न्याय और सुरक्षा की गारंटी को पूरा करने की ओर एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा।

गौरतलब है कि मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय और उपमुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा के निर्देश पर पूरे प्रदेश के पुलिस थानों में आज के दिन को उत्सव की तरह मनाया जा रहा है। इन कानूनों की जानकारी देने के उद्देश्य से व्यापक स्तर पर लोगों को जागरूक करने की दिशा में पहल की जा रही है।

विमोचन कार्यक्रम में अपर मुख्य सचिव श्री मनोज पिंगुआ और पुलिस महानिदेशक श्री अशोक जुनेजा ने नए कानूनों के प्रदेश स्तर पर बेहतर क्रियान्वयन के लिए किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी। न्याय दिलाने के उद्देश्य की पूर्ति के लिए अंतर्विभागीय समन्वय के साथ विवेचना और कार्यवाही पर जोर दिया। अधिकारियों ने बताया कि नए कानूनों के अंतर्गत दो एफआईआर और एक मर्ग दर्ज हो चुका है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री के सचिव द्वय श्री राहुल भगत, श्री बसव राजू एस. एवं गृह विभाग के अधिकारीगण भी उपस्थित थे।

गौरतलब है कि नवीन कानून में मुख्यत: औपनिवेशिक कानूनों में बदलाव, महिला सुरक्षा एवं न्याय, आतंकवाद, संगठित अपराध एवं भारत की सम्प्रभुता, एकता एवं अखण्डता के विरूद्ध अपराध, पीड़ित केन्द्रित कानूनी प्रावधान, अनुसंधान में वैज्ञानिक तकनीक, डिजिटल एवं इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्य के प्रावधान, न्यायालयीन प्रक्रिया से संबंधित प्रावधान शामिल किए गए हैं। भारतीय दंड संहिता 1860 के स्थान पर भारतीय न्याय संहिता 2023 को अधिसूचित किया गया। भारतीय दण्ड प्रक्रिया संहिता 1973 के स्थान पर भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 को अधिसूचित किया गया है और भारतीय साक्ष्य अधिनियम 1872 के स्थान पर भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023 को अधिसूचित किया गया है।

प्रदीप्त कुमार मिश्रा ने क्षेत्रीय कार्यकारी निदेशक (पश्चिमी क्षेत्र-II और यूएसएससी) का पदभार संभाला

रायपुर (विश्व परिवार)। श्री प्रदीप्त कुमार मिश्रा ने 01 जुलाई, 2024 को एनटीपीसी नवा रायपुर के क्षेत्रीय कार्यकारी निदेशक (पश्चिमी क्षेत्र-II और यूएसएससी) का पदभार संभाला। इससे पहले, श्री मिश्रा एनटीपीसी केन्द्रीय कार्यालय में कार्यकारी निदेशक (ईंधन प्रबंधन) के रूप में पदस्थ थे।

वीएसएसयूटी (यूसीई), बुर्ला से इलेक्ट्रिकल इंजीनियर, श्री मिश्रा 1986 में एक कार्यकारी प्रशिक्षु के रूप में एनटीपीसी में शामिल हुए। अपने श्रेय के लिए, श्री मिश्रा ने पेंसिल्वेनिया विश्वविद्यालय से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। उनके पास विद्युत रखरखाव, तकनीकी सेवाओं, रखरखाव, प्रचालन और रखरखाव और ईंधन प्रबंधन के क्षेत्रों में समृद्ध और विविध अनुभव है। उन्होंने लगभग 38 वर्षों के करियर में कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया और एनटीपीसी विंध्याचल, सिम्हाद्री, दादरी, एनसीआर मुख्यालय और केन्द्रीय कार्यालय में काम किया।

उनके समृद्ध और विविध अनुभव के साथ, एनटीपीसी पश्चिमी क्षेत्र-द्वद्व मुख्यालय (नवा रायपुर) और यूएसएससी (नवा रायपुर, सीपत और सिम्हाद्रि) आने वाले दिनों में उनके मार्गदर्शन और कुशल नेतृत्व से बहुत लाभान्वित होंगे।

नए आपराधिक कानून 99 फीसदी कॉपी और पेस्ट, कुछ बदलाव असंवैधानिक : चिदंबरम

नई दिल्ली (आरएनएस)। एक जुलाई यानी आज से देश में भारतीय दंड संहिता (इंडियन पीनल कोड), दंड प्रक्रिया संहिता (कोड ऑफ क्रिमिनल प्रोसीजर) और भारतीय साक्ष्य अधिनियम (इंडियन एविडेंस एक्ट) की जगह तीन नए कानून भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस), भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस) और भारतीय साक्ष्य अधिनियम (बीएसए) लागू हो गए हैं। जिसको लेकर सत्ता पक्ष और विपक्ष की तरह से प्रतिक्रियाओं का दौर शुरू हो गया है। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पी. चिदंबरम ने तीन नए आपराधिक कानूनों के लागू होने के बीच केंद्र सरकार की आलोचना की। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, आईपीसी, सीआरपीसी और एविडेंस एक्ट की जगह लेने वाले तीन आपराधिक कानून आज से लागू हो गए हैं। 90-99 प्रतिशत तथाकथित नए कानून कट, कॉपी और पेस्ट है, जो मौजूदा तीन कानूनों में कुछ संशोधनों के साथ पूरा किया जा सकता था। लेकिन इसे एक बेकार प्रक्रिया में बदल दिया गया। हां, नए कानूनों में कुछ सुधार लाए गए हैं और हमने उनका स्वागत किया है। इन्हें संशोधन के रूप में पेश किया जा सकता था। उन्होंने आगे लिखद्र, दूसरी ओर कई खराब प्रावधान भी हैं। कुछ बदलाव प्रथम दृष्टया असंवैधानिक हैं।

महतारी वंदन योजना की पांचवी किश्त जारी

मुख्यमंत्री साय ने 70 लाख माताओं-बहनों के खाते में 653 करोड़ 85 लाख रुपए की राशि अंतरित की

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने महतारी वंदन योजना की पांचवीं किश्त एक जुलाई को जारी कर दी है। इस योजना अंतर्गत लगभग 70 लाख माताओं-बहनों के खाते में 653 करोड़ 85 लाख रुपए की राशि अंतरित हुई है।

उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री श्री साय ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की गारंटी के अनुरूप विवाहित माताओं-बहनों को हर महीने महतारी वंदन योजना के अंतर्गत 1000 रूपए देने का संकल्प लिया था। शपथ लेने के तीन महीने के भीतर ही इस महती योजना पर काम शुरू हो गया। प्रशासनिक अमले ने तेजी से सर्वे का काम पूरा करते हुए हितग्राही महिलाओं से फार्म भरवाए और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 10 मार्च को महतारी वंदन योजना की पहली किश्त जारी की थी। इसके पश्चात नियमित रूप से यह किश्त जारी की जा रही है। नियमित रूप से यह राशि आने की वजह से महिलाएं काफी खुश हैं। कुछ महिलाएं अपने घरेलू बजट को इससे व्यवस्थित कर पा रही हैं, कुछ महिलाएं इस राशि को अपनी बच्चों की पढ़ाई-लिखाई में खर्च कर रही हैं तथा कुछ भविष्य के लिए निवेश कर रही हैं। महतारी वंदन योजना के क्रियान्वयन में सुशासन के मूल्य स्पष्ट झलकते हैं। डीबीटी के माध्यम से राशि का अंतरण हो रहा है इससे पूरी प्रक्रिया पारदर्शी है। बीते दिनों जनदर्शन में बहुत सी महिलाएं आयी उन्होंने अपने आवेदन दिए साथ ही महतारी वंदन योजना को लेकर अपनी खुशी भी जाहिर की। इन महिलाओं ने मुख्यमंत्री से कहा कि विष्णु का सुशासन हमारे जीवन में बहुत सुख-समृद्धि लेकर आया है। इसके पहले महिलाओं को लेकर इतनी अच्छी योजना हमारे राज्य में क्रियान्वित नहीं की गई थी। इससे हमारे सपने पूरे हो रहे हैं।

छत्तीसगढ़ में मक्का और सोयाबीन को बढ़ावा देने के लिए पर्याप्त अवसर केंद्र करेगा पूरी मदद : शिवराज सिंह चौहान

किसानों और कृषि क्षेत्र के हित में छत्तीसगढ़ को हरसंभव सहायता देती रहेगी केंद्र सरकार- केंद्रीय कृषि मंत्री श्री चौहान

दलहन, तिलहन, बागवानी आदि को बढ़ावा देने पर दिल्ली में केंद्र-राज्य के बीच बैठक में हुई चर्चा

दिल्ली (पीआईबी)। देश में कृषि क्षेत्र की तेजी से प्रगति के उद्देश्य से केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने राज्यवार चर्चा की पहल की है, जिसके तहत आज नई दिल्ली स्थित कृषि भवन में छत्तीसगढ़ के कृषि मंत्री श्री रामविचार नेताम सहित आए उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल के साथ केंद्रीय मंत्री ने बैठक की। इस दौरान छत्तीसगढ़ में दलहन, तिलहन, बागवानी आदि को बढ़ावा देने के साथ ही कृषि एवं किसान कल्याण से जुड़े अन्य अनेक विषयों पर चर्चा हुई। इस दौरान केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में किसानों व कृषि क्षेत्र का हित हमारे लिए सर्वोपरि है और इसी के तहत छत्तीसगढ़ को केंद्र सरकार हरसंभव सहायता देती रहेगी।

केंद्रीय मंत्री श्री चौहान की छत्तीसगढ़ के मंत्री श्री नेताम के साथ प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, राष्ट्रीय कृषि विकास योजना, दलहन, तिलहन, बागवानी, नमो ड्रोन दीदी, आयल पाम मिशन सहित भारत सरकार की अन्य योजनाओं व कार्यक्रमों पर चर्चा हुई। केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने कहा कि छत्तीसगढ़ के किसानों को केंद्र के स्तर पर कोई समस्या नहीं आने दी जाएगी, इसके लिए केंद्र व राज्य सरकार मिल-जुलकर काम करते रहेंगे। श्री चौहान ने आश्वासन दिया कि छत्तीसगढ़ के विकास के लिए केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण विभाग अपने स्तर पर पूरा सहयोग देगा। उन्होंने दलहन व तिलहन को प्रोत्साहित करने की केंद्र सरकार की नीति का उल्लेख भी किया। श्री चौहान ने कहा कि छत्तीसगढ़ में मक्का व सोयाबीन को बढ़ावा देने के लिए पर्याप्त अवसर उपलब्ध है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि खरीफ सीजन में खाद-बीज आदि आदानों की पर्याप्त उलब्धता रहेगी। इसके लिए उन्होंने संबंधित अधिकारियों को दिशा-निर्देश दिए। इस अवसर पर केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण सचिव श्री संजीव चोपड़ा सहित केंद्र व राज्य के कृषि एवं बागवानी विभागों के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

राहुल गांधी के हिंदू वाले बयान पर घमासान, पीएम मोदी ने कहा- पूरे हिंदू समाज को हिंसक कहना बहुत गंभीर विषय

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह बोले- माफी मांगें नेता प्रतिपक्ष

नई दिल्ली (आरएनएस)। संसद में धनवाद प्रस्ताव पर चर्चा के दौरान राहुल गांधी के हिंदू वाले बयान पर संसद में घमासान मचा हुआ है. राहुल गांधी के पीएम मोदी और बीजेपी पूरा हिंदू समाज नहीं होने वाले बयान पर सत्ता पक्ष के सदस्यों ने हंगामा शुरू कर दिया. पीएम मोदी ने अपनी सीट पर खड़े होकर कहा कि हिंदू को हिंसक कहना गलत है. पीएम मोदी ने कहा कि पूरे हिंदू समाज को हिंसक कहना गंभीर बात है. इस पर केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने कहा कि राहुल गांधी को अभय की बात करने का कोई हक नहीं है. इन्होंने इमरजेंसी के दौरान पूरे देश को भयभीत करा. इनको सदन में माफी मांगनी चाहिए. उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने देश में आपातकाल लगाकर बंद कर दिया था. इस धर्म पर करोड़ों लोग गर्व से हिंदू कहते हैं. मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि इस्लाम में अभय मुद्रा पर एक बार वो इस्लामिक विद्वानों की राय लें.

राहुल गांधी के बयान पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि तेज आवाज में बोलने और शोर शराबा कर के इतने बड़े मुद्दे को दबाया नहीं जा सकता है. विपक्ष के नेता ने कहा है कि जो अपने आप को हिंदू कहते हैं वो हिंसा करते हैं. इस देश में करोड़ों लोग अपने आप को गर्व से हिंदू कहते हैं, क्या वो सभी हिंसा करते हैं? हिंसा की भावना को किसी धर्म के साथ जोड़ना, इस सदन में और वो भी संवैधानिक पद पर बैठे व्यक्ति द्वारा गलत है. इसी के साथ अमित शाह ने राहुल गांधी से माफी मांगने की मांग भी की.

राहुल गांधी के भाषण के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपनी चेयर से खड़े होकर कहा कि मुझे लोकतंत्र ने सिखाया है कि विपक्ष के नेता को गंभीरता से लेना चाहिए. इसके बाद राहुल गांधी ने कहा कि ये जो मैंने अयोध्या पर बोला है, अनुराग ठाकुरजी अयोध्या की बात कर रहे थे, उस पर की है.

राहुल गांधी के भाषण के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपनी चेयर से खड़े होकर कहा कि मुझे लोकतंत्र ने सिखाया है कि विपक्ष के नेता को गंभीरता से लेना चाहिए. इसके बाद राहुल गांधी ने कहा कि ये जो मैंने अयोध्या पर बोला है, अनुराग ठाकुरजी अयोध्या की बात कर रहे थे, उस पर की है.

राज्यसभा में मल्लिकार्जुन खड़गे ने सरकार पर जमकर साधा निशाना, पेपर लीक समेत उठाये ये मुद्दे

नई दिल्ली (आरएनएस)। राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव के बीच सोमवार को राज्यसभा में जमकर हंगामा हुआ. राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे ने राष्ट्रीय पात्रता-सह-प्रवेश परीक्षा पर चल रहे विवाद और विपक्षी नेताओं की गिरफ्तारी सहित विभिन्न मुद्दों पर सरकार को बीजेपी पर निशाना साधा. राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के अभिभाषण पर बहस के दौरान राज्यसभा में अपने भाषण के दौरान खड़गे ने कहा कि, पीएम मोदी ने भारत को शर्मिंदा किया. वे घमंडिया गठबंधन कहते थे, वे कहते थे कि मोदी है तो कुछ भी संभव है. लेकिन बीजेपी का अहंकार 2024 के लोकसभा चुनाव के बाद टूट गया.

कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे ने चुनावी रैलियों के दौरान पीएम मोदी के धन के पुनर्वितरण, मंगलसूत्र, आरक्षण और मुजरा समेत अन्य मुद्दों पर कांग्रेस के खिलाफ की गई टिप्पणियों को लेकर भी प्रधानमंत्री मोदी पर निशाना साधा. उन्होंने पीएम मोदी की एक अकेला सब पे भारी टिप्पणी पर भी कटाक्ष किया और कहा, एक अकेले पर आज कितने लोग भारी हैं, चुनाव ने दिखा दिया कि देश का संविधान और जनता सब पर भारी है. चुनावों ने साबित कर दिया कि संविधान और जनता हर चीज पर भारी हैं.

डिप्टी सीएम विजय शर्मा ने किया सहसपुर लोहरा में नव निर्मित थाना भवन का लोकार्पण

साथ ही मनाया गया 3 नए कानूनों के लागू होने का उत्सव

रायपुर (विश्व परिवार)। 1 जुलाई, 2024 जिला कबीरधाम के थाना सहसपुर लोहरा में आज एक महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें छत्तीसगढ़ के उप मुख्यमंत्री, माननीय श्री विजय शर्मा, ने नव निर्मित थाना भवन का लोकार्पण किया। इस अवसर पर जिले के पुलिस अधीक्षक डॉ. अभिषेक पल्लव (भा पु से), अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री विकास कुमार (भापुसे), जिला पुलिस के अधिकारी, पुलिसकर्मी, और क्षेत्र के सम्मानित नागरिक उपस्थित रहे।

साथ ही आज से तीन नए आपराधिक कानून देशभर में लागू हो रहे हैं। इसमें आज से 1860 में बनी आईपीसी की जगह भारतीय न्याय संहिता 1898 में बनी सीआरपीसी की जगह भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता और 1872 के इंडियन एविडेंस एक्ट की जगह भारतीय साक्ष्य अधिनियम ले लेगी। इस नए कानून की शुरुआत होते ही जिला कबीरधाम के थाना रेंगाखार में एक स्नड्ढक्र दर्ज किया गया जिसे BNS के तहत दर्ज किया गया जो पीड़ित के आवेदन पर नए कानून के तहत दर्ज होने वाला देश का पहला FIR है.

स्वागत भाषण के दौरान पुलिस अधीक्षक डॉ. अभिषेक पल्लव ने नए थाना भवन के बारे में जानकारी दी कि यह भवन पुलिस हाउसिंग कारपोरेशन द्वारा मानकों का पालन करते हुए बनाया गया है। उन्होंने कहा, नया थाना भवन न केवल आधुनिक सुविधाओं से लैस है बल्कि इससे पुलिसकर्मियों की कार्यक्षमता में भी वृद्धि होगी।

इसके साथ ही, डॉ. पल्लव ने आज से लागू होने वाले तीन नए महत्वपूर्ण कानूनों के बारे में उन्होंने कहा, ये नए कानून हमारी न्याय प्रणाली को और अधिक पारदर्शी और प्रभावी बनाएंगे, जिससे आम नागरिकों को न्याय मिलने में और भी आसानी होगी।

उद्घाटन समारोह में बोलते हुए, उप मुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा ने कहा, नव निर्मित थाना भवन से क्षेत्र में कानून व्यवस्था और अधिक सुदृढ़ होगी। इससे पुलिस की कार्यक्षमता में वृद्धि होगी और नागरिकों को त्वरित और प्रभावी सेवा प्रदान की जा सकेगी।

उप मुख्यमंत्री ने इन नए कानूनों के लागू होने पर खुशी जताते हुए कहा, ये कानून भारतीय न्याय प्रणाली में एक नई क्रांति लाएंगे। इससे न केवल अपराधों की जांच में तेजी आएगी बल्कि दोषियों को जल्द से जल्द सजा भी मिल सकेगी। नए कानूनों के माध्यम से आम नागरिकों को न्याय पाना और भी आसान होगा।

भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (क्चहृस्स्) का उद्देश्य नागरिक सुरक्षा में सुधार लाना है। इसके तहत नागरिकों के अधिकारों और कर्तव्यों का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है, जिससे कानून का पालन करना और उसकी रक्षा करना आसान होगा।

भारतीय न्याय संहिता (क्चहृस्) का मुख्य उद्देश्य न्याय प्रणाली को अधिक प्रभावी और त्वरित बनाना है। इससे मामलों की सुनवाई में तेजी आएगी और न्यायालयों में लंबित मामलों की संख्या कम होगी।

डीएसपी ललिता मेहर ने छात्रों को पढ़ाई और करियर की संभावनाओं के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी

रायपुर (विश्व परिवार)। डीएसपी ललिता मेहर जी ने छात्रों को उनके भविष्य की पढ़ाई और करियर की संभावनाओं के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी।

कच्छ गुर्जर क्षत्रिय समाज युवा मंडल द्वारा स्टेशन रोड स्थित समाज भवन में रविवार को कैरियर काउंसलिंग प्रोग्राम आयोजित कराया गया जिसमे विशेष अतिथि के रूप में डीएसपी ललिता मेहर जी ने विभिन्न शैक्षिक विकल्पों, करियर के मार्गों, और सफलता प्राप्त करने के तरीकों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने छात्रों को समय प्रबंधन, लक्ष्य निर्धारण, और मेहनत के महत्व के बारे में भी बताया।

इस अवसर पर दीपश्री चौहान मैम (असिस्टेंट प्रोफेसर), राज किरण सर (गोल्ड मेडलिस्ट) इंद्रा निर्मलकर सर (विज्ञान) ने मुख्य रूप से छात्रों को अलग अलग पढ़ाई के क्षेत्र की जानकारी दी एवं बच्चो को व्यक्तिगत परामर्श भी किया।

कार्यक्रम में युवा मंडल प्रमुख- चेतन परमार, महामंत्री- रजत चावड़ा, मंत्री- प्रतीक चौहान, मंत्री- कौशिक परमार, एडवोकेट गौरव चावड़ा, रूपेश चौहान, अनंत चौहान, निहाल परमार एवं समाज के सभी सम्मानीय सदस्य मौजूद रहे।

CHHATTISGARH STATE POWER GENERATION CO. LTD.
(A Govt. of Chhattisgarh Undertaking) CIN: U40108CT2003SGC015821
No.15-06/S&P/W/TN-96/24/1702 Marwa, dtd. 28-06-2024
NOTICE INVITING E-TENDER NO TN-96/2024 : -
Online bids are invited by the undersigned through CSPCL e-bidding system (SAP SRM) from experienced firms for work as mentioned below for 2x500MW, ABVTPS, CSPGCL, Janjgir-Champa:-

S. No	Tender Specification No.	Rfx No. (E-Tender No.)	Particulars	Last Date/Time of submission of bid.	Tender Fee (Rs.)	EMD (Rs.)
01.	15-06/S&P/ EE-II/W/ T-154/24	8100037810	Work contract for Supply, installation testing commissioning of 2Nos. HOT dip Galvenized 20 Mtr, Highmast pole with LED light fittings of 300 watt to be installed near Ash Dyke area of AHP of 2x500MW, ABVTPS, CSPGCL, Janjgir-Champa.	25.07.2024 15:30 Hrs	Rs. 590/- (500 + GST @18%)	Rs. 9,100/-
02.	15-06/S&P/ EE-III/W/ T-155/24	8100037790	Work contract for offline calibration of 400 & 220 KV CT and CVT associated with ABT Energy Meter of GT1, Gt2, ST1 and ST2 of 2x500 MW, ABVTPS, CSPGCL, Janjgir-Champa.	25.07.2024 15:30 Hrs	Rs. 590/- (500 + GST @18%)	Rs. 13,850/-
03.	15-06/S&P/ EE-III/W/ T-156/24	8100037791	Work contract for periodic cleaning work of all the cable trays of boiler and TG building and all the cable cellar rooms of BTG area at 2x500 MW, ABVTPS, CSPGCL, Janjgir-Champa.	26.07.2024 15:30 Hrs	Rs. 590/- (500 + GST @18%)	Rs. 9,500/-
04.	15-06/S&P/ EE-III/W/ T-157/24	8100037792	Work contract for calibration of various transmitters, gauges and temperature elements installed at different location in BTG area of 2x500MW, ABVTPS, CSPGCL, Janjgir-Champa.	26.07.2024 15:30 Hrs	Rs. 590/- (500 + GST @18%)	Rs. 12,100/-
05.	15-06/S&P/ EE-III/W/ T-158/24	8100037794	Work Order for Comprehensive Maintenance of Equipment & Instrument and providing assistance to various Expert Service Engineers During COH of Unit#2 in BTG C&I Area of 2x500 MW, ABVTPS, CSPGCL, Janjgir-Champa.	29.07.2024 15:30 Hrs	Rs. 590/- (500 + GST @18%)	Rs. 11,000/-
06.	15-06/S&P/ EE-III/W/ T-159/24	8100037828	Work contract for Supply and installation of Hook type adjustable design fabricated canopy for Oil skids, Knife Gates and SADC station installed at boiler area of 2x500MW, ABVTPS, CSPGCL, Janjgir-Champa.	29.07.2024 15:30 Hrs	Rs. 590/- (500 + GST @18%)	Rs. 6,700/-

The bidder shall deposit the requisite Tender Fee & EMD amount online through our e-bidding portal before due date and time. For other details, please visit our website www.cspc.co.in/CSPGCL/Ebidding/Ebidding web portal. Any Extension/ Corrigendum / amendments, if required, shall be displayed on above websites only.
Superintending Engineer (Contract) O/o The Addl. Chief Engineer (S&P) ABVTPS, CSPGCL, Janjgir-Champa
// SAVE ELECTRICITY FOR THE BENEFIT OF SELF & NATION //
SAMVAD- 40640/ 1

कार्यालय संपदा अधिकारी
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, संपदा प्रबंधन प्रक्षेत्र राज. परि., नवा रायपुर
प्रथम एवं पंचम तल, व्यवसायिक परिसर (दक्षिण-पुर्व कार्नर), सेक्टर-27, नवा रायपुर, अटल नगर
फोन नं.-0771-4016094 E-mail ID:- em-zone2@yahoo.com

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि निम्नालिखित हितग्राहियों को लीज में छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा आबंटित है, उक्त भवन/फ्लैट को फ्री-होल्ड के लिए निर्धारित प्रारूप में आवेदन प्रस्तुत किया गया है, जिनका फ्री-होल्ड संपरिवर्तन किया जाना है।

अत: इस आम सूचना प्रकाशन की तिथि से 15 दिवस के अंदर कोई आपत्ति हो तो मय दस्तावेज के साथ अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में कार्यालयीन दिवस में प्रस्तुत करें। निर्धारित अवधि के पश्चात कोई भी आपत्ति स्वीकार नहीं होगी।

क्र.	आबंटी का नाम	पिता/पति का नाम	भवन क्रमांक	कॉलोनी का नाम
1	श्रीमति सरोजा मनहरण राठौर	श्री मनहरण राठौर	भूखण्ड क्रमांक-49	विशेष आवासीय योजना धरमपुरा, रायपुर

संपदा अधिकारी
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र राजधानी परियोजना
नवा रायपुर, अटल नगर

चिकित्सक दिवस के अवसर श्री नारायणा हॉस्पिटल एवं महिला चेम्बर के संयुक्त तत्वाधान में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया

रायपुर (विश्व परिवार)। महिला चेम्बर अध्यक्ष श्रीमती मधु अरोड़ा बताया कि आज 1 जुलाई 2024 को चिकित्सा दिवस के उपलक्ष्य में श्री नारायणा हॉस्पिटल एवं महिला चेंबर के संयुक्त तत्वाधान में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन श्री नारायणा हास्पीटल, देवेन्द्रनगर, रायपुर में किया गया जहां महिला चेम्बर के सदस्यों एवं आमजनों द्वारा रक्तदान किया गया।

रक्तदान शिविर में डॉ. प्रीतम अग्रवाल-चिकित्सा अधीक्षक, हड्डी रोग विशेषज्ञ, कंधे एवं घुटने के विशेषज्ञ, डॉ. ए. चंद्रा राव-वरिष्ठ गहन विशेषज्ञ, डॉ. धनंजय प्रसाद- पैथोलॉजी एवं ब्लड बैंक प्रमुख, डॉ. अंकिता पटेल-बच्चों का चिकित्सक, डॉ.नयन सिंह-आपातकालीन प्रभारी, श्री अतुल सिंघानिया-प्रबंध निदेशक, डॉ. मेघा खेमका प्रशासनिक अधिकारी श्री नारायणा हास्पीटल, रायपुर ने अपना भरपूर सहयोग दिया।

श्रीमती अरोरा ने बताया कि चिकित्सक दिवस के उपलक्ष्य में स्वैच्छिक रक्तदान हेतु लोगों में जागरूकता लाने तथा रक्तदान करने से होने वाले लाभ की जानकारी देने श्री नारायणा हॉस्पिटल एवं महिला चेम्बर द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जहां रक्तदान के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हेतु रक्तवीरों एवं चिकित्सकों का महिला चेम्बर द्वारा सम्मान किया गया। श्रीमती अरोरा ने आगे कहा कि समाज के प्रति अपने दायित्व का निर्वहन करते हुए जब बड़ी जिम्मेदारी कंधे पर सवार होती है तो संघर्षों का सामना, राह में रुकावटें बनना सहज है, परंतु वही आपको जीवन वृहद प्रबंधन का गुण भी सिखाती है। स्वैच्छिक रक्तदान शिविर के माध्यम से आज चिकित्सक दिवस के अवसर पर महिला चेम्बर उन समस्त चिकित्सकों का धन्यवाद ज्ञापित करती है जो दूसरों की जिंदगी बचाने एवं संवारने में अपना पूरा जीवन लगा देते हैं।

इस अवसर पर महिला चेम्बर अध्यक्ष श्रीमती मधु अरोरा, महामंत्री पिंकी अग्रवाल, कोषाध्यक्ष प्रेरणा भट्ट, मीडिया प्रभारी इंदिरा जैन, हेमल शाह, सोमा घोष, मनीषा तरवानी, सपना दिवेदी, रंजना अग्रवाल, रश्मि वाधवा एवं डॉ. प्रिया जोशी आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

शत-प्रतिशत बच्चों को शिक्षा से जोड़े : केदार कश्यप

रायपुर (विश्व परिवार)। वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री श्री केदार कश्यप आज नारायणपुर जिले के विभिन्न विद्यालयों में शाला प्रवेशोत्सव कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने नवप्रवेशित विद्यार्थियों का मुंह मीठा कराकर शाला प्रवेश कराया और तिलक चंदन लगाकर आत्मीय स्वागत किया। श्री कश्यप ने इस मौके पर विद्यार्थियों को गणवेश एवं पाठ्यपुस्तक प्रदान किया।

शाला प्रवेशोत्सव कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मंत्री श्री कश्यप ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के मंशा के अनुरूप स्कूल जाने योग्य शतप्रतिशत बच्चों को शिक्षा से जोड़ा जाएगा। उन्होंने कहा कि शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षा के साथ-साथ प्रदेश के लोगों का निरंतर विकास सरकार की प्राथमिकता में है।

उन्होंने कहा कि जिले के हर गांवों में विद्यालय खोला गया है। प्रदेश के अन्य जिलों की तरह नारायणपुर जिले के बच्चों के प्रतिभा को निखारने का कार्य किया जा रहा है। उन्होंने बच्चों को उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि आप लोग भविष्य के निर्माता हैं। जिले के विभिन्न विद्यालयों के बच्चों के प्रतिभा को निखारने के लिए खेल खेल में शिक्षा और स्मार्ट क्लास रूम का भी स्थापित किया जा रहा है।

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.), फोन नं.- 0771-4903223
Email Id: eocghbzone02@gmail.com

आम-सूचना

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है, कि छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल द्वारा सामान्य आवास योजनांतर्गत, **कचना फेस-।।,** रायपुर में स्थित **2बी.एच.के. फ्लैट क्रमांक-38 ब्लॉक-02, चतुर्थ तल, श्री श्यामल कुमार मित्रा पिता स्व. श्री एच.एन. मित्रा एवं श्रीमती सर्बानी मित्रा पति श्री श्यामल कुमार मित्रा** के नाम पर स्ववित्तीय आधार पर आबंटित है। आबंटी द्वारा उक्त फ्लैट का पूर्ण मूल्य जमा कर अपने पक्ष में दिनांक 19.11.2015 को लीजडीड पंजीकृत करने उपरांत फ्लैट का आधिपत्य प्राप्त कर लिया गया है। मूल आबंटी **श्री श्यामल कुमार मित्रा पिता स्व. श्री एच.एन. मित्रा** की मृत्यु दिनांक 14.04.2024 को हो जाने के कारण उनकी धर्मपत्नी व सह आबंटी **श्रीमती सर्बानी मित्रा पति स्व.श्री श्यामल कुमार मित्रा** द्वारा अपने पति के नाम के स्थान पर उनके पुत्र **श्री अंकुश मित्रा पिता स्व. श्री श्यामल कुमार मित्रा,** निवासी- 2बी. एच.के फ्लैट-38, ब्लॉक-02, हाऊसिंग बोर्ड कलोनी **कचना फेस।।,** रायपुर (छ.ग) का नाम जोड़ने हेतु आवेदन पत्र, शपथ पत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र एवं उनके पुत्र का सहमति पत्र इस कार्यालय में प्रस्तुत कर उक्त फ्लैट का नामांतरण **श्रीमती सर्बानी मित्रा पति स्व. श्री श्यामल कुमार मित्रा एवं श्री अंकुश मित्रा पिता स्व. श्री श्यामल कुमार** मित्रा के पक्ष में किये जाने हेतु अपना सहमति प्रस्तुत किया गया है।

अत: उक्त फ्लैट के नामांतरण के संबंध में किसी व्यक्ति शासकीय/ अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय बैंक अथवा वित्तिय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो सूचना प्रकाशन दिनांक के **15 दिवस** के अंदर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम-सूचना

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा **कबीर नगर कॉलोनी,** रायपुर में निर्मित **168 LIG (G+6) FLATS** भवन योजना के अंतर्गत दुकानों/ भूखण्डों/ भवनों में से भूखण्ड/ भवन क्रमांक **LIG FLATS BC-4/204 श्रीमती बलजीत कौर पति श्री हरजीत सिंह** को भाड़ाक्रय/ पूर्णमूल्य आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा दिनांक **29.12.2018** को विक्रय विलेख निष्पादित कर लिया गया।

आबंटी उक्त भवन के विक्रय हेतु दिनांक **06.06.2024** को निष्पादित विक्रय इकरारनामा की छायाप्रति प्रस्तुत कर भवन **श्रीमती मनु सोनी पिता श्री अनुराग सोनी** के नाम से विक्रय करने के लिए विक्रय अनुमति की मांग की हैं।

अत: किसी भी व्यक्ति शासकीय/ अर्द्धशासकीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/ भवन के **विक्रय के संबंध में** किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आमसूचना प्रकाशन के **15 दिन** के अन्दर समक्ष उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नही की जावेंगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

एन.एम.डी.सी. लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
बैलाडिला ऑयरन ओर माइन्स, बचेली कॉम्पलेक्स, जिला दंतेवाड़ा 494 553 (छत्तीसगढ़)
टेलीफोन नं. 07857-230079/230751, फैक्स : 07857-231253, 09406489851
ईमेल : bld5materials@nmdc.co.in; alokkujha@nmdc.co.in
Corporate Identity Number : L13100AP1958GOI001674 /GST Regn. # 22AAACN7325A1Z5
एनएमडीसी NMDC

निविदा आमंत्रित करने के लिए सूचना

निम्नलिखित विवरण अनुसार बचेली कॉम्पलेक्स पोस्ट बचेली-494553, जिला दंतेवाड़ा (छत्तीसगढ़) के लिए निम्नलिखित मदों के लिए निविदा आमंत्रित की गई है।

आइटम का विवरण	टेण्डर दस्तावेज का डाउनलोड और प्रर्दशन	प्रस्ताव प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि/समय	प्रस्ताव खोलने की अंतिम तिथि/समय	निविदा शुल्क	ईएमडी (रू. में)
ओपन टेण्डर संदर्भ नं. **NMDC/Bacheli/ Material Management/2/24-25/ET: 263**				**Date: 02.07.2024**	
हमारे एन.एम.डी.सी. लिमिटेड अपोलो सेन्ट्रल अस्पताल, बचेली को एक वर्ष की अवधिए बाद में बढा कर एक और वर्ष के लिए विभिन्न दवाइयां आपूतिकर्त्ताओं से "आपातकालीन दवाइयों की आपूर्ति"	02.07.2024 से 23.07.2024 3.00 PM तक	23.07.2024 3.00 PM तक	23.07.2024 3.30 PM तक	कुछ नहीं	Rs. 2,00,000/-

टेण्डर की सम्पूर्ण जानकारी के लिए कृपया हमारे वेबसाइट http://www.nmdc.co.in और सेंट्रल पब्लिक प्रोक्युरमेंट पोर्टल (सीपीपी) www.eprocure.gov.in और एमएसटीसी पोर्टल https://www.mstcecommerce.com/. पर प्राप्त कर सकते हैं। बोलीदाता अपना प्रस्ताव केवल ऑन-लाईन माध्यम से एमएसटीसी पोर्टल में करे।

संभावित बोलीदाताओं को निविदा दस्तावेजों को डाउन लोड करना चाहिए और केवल एमएसटीसी पोर्टल पर ऑन-लाईन के माध्यम से उसी तिथि के अनुसार ऑफर प्रस्तुत करें।

नोट :- किसी भी परिशिष्ट/ परिशिष्ट/बोली स्पष्टीकरण/ समय विस्तार केवल /शुद्धि केवल वेबसाइट पर जारी किया जायेगा और कोई अलग से प्रेस अधिसूचना जारी नहीं की जायेगी। भावी बोलीदाताओं को समय-समय पर उपरोक्त वेबसाईटों पर जाएं और आगे की के लिए नं. 07857-230751, 09406489851 पर सम्पर्क करे, यदि कोई हो तो।

उप महाप्रबंधक (सामग्री)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./12616/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 01-07-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 12616
वार्ड का नाम- 5 - बंजारी माता मंदिर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 5 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR105B00156** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **1. NIRMALA GUPTA 2. NIDHI GUPTA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAM VILASH GUPTA, PANKAJ GUPTA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **DARSHANA DEVI AGRAWAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **NARESH KUMAR AGRAWAL** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./12618/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 01-07-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 12618
वार्ड का नाम- 5 - बंजारी माता मंदिर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 5 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR105D00082** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **PRABHAKAR RAO** पिता/पति, श्री/श्रीमती **NARSING RAO** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **MANISHA SACHDEV** पिता/पति, श्री/श्रीमती **KRIRPAL SACHDEV** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /12643/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 30-06-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 12643
वार्ड का नाम- 2 - पं. जवाहर लाल नेहरू वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 2 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR802K00293** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SULOCHNA SHARMA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **KALICHARAN SHARMA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SHUBHANGI VERMA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAMESH PRASAD VERMA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री अरूण ध्रुव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (8)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /12645/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 30-06-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 12645
वार्ड का नाम- 2 - पं. जवाहर लाल नेहरू वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 2 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR801T00338** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **MESARS JAGDAMBA SALES PVT. LTD. DIR. PRANITA AGRAWAL W/O ARVIND AGRAWAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MESARS JAGDAMBA SALES PVT. LTD. DIR. PRANITA AGRAWAL W/O ARVIND AGRAWAL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **MS. JAGDAMBA STEEL PIPES AND LOGISTICS PROP- ARVINDKISHANLAL AGRAWAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MS. JAGDAMBA STEEL PIPES AND LOGISTICS PROP- ARVIND KISHANLAL AGRAWAL** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री अरूण ध्रुव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (8)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./12629/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2024
रायपुर दिनांक : 01-07-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 12629
वार्ड का नाम- 14- रमण मंदिर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 14 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR223B00054** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **JIYANDLAL ANDANI DINESH JAGDISH** पिता/पति, श्री/श्रीमती **GINDAMAL ANDANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्री प्रेमचंद अंदानी** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पिता- स्व. श्री गिन्डलमल अंदानी** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत दानपत्र**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./12500/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2024
रायपुर दिनांक : 01-07-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 12500
वार्ड का नाम- 27- रमण मंदिर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 27 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR220C00196** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **DAMYANTI PHITHALIYA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE. KISHOR CHAND PHITHALIYA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SHRI DIPESH TANK** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O KISHORE TANK** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./11583/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 29-06-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 11583
वार्ड का नाम- 50 - रानी दुर्गावती वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 50 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR445Q00139** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **RAJKUMARI CHHABRA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **HARISH KUMAR CHHABRA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SMT. VINITA TRIVEDI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O SHRI APURV TRIVEDI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री दिनेश कोसरिया
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम-सूचना

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा **कबीर नगर कॉलोनी,** रायपुर में निर्मित **एम.आई.जी. स्टैण्ड** भवन योजना के अंतर्गत दुकानों/ भूखण्डों/ भवनों में से भूखण्ड/ भवन क्रमांक **एम.आई.जी. स्टैण्ड 254 फे-1 श्रीमती माधवी तिवारी पति श्री अतुल कुमार तिवारी** को भाड़ाक्रय/ पूर्णमूल्य आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा दिनांक **25.11.2021** को विक्रय विलेख निष्पादित कर लिया गया।

आबंटी उक्त भवन के विक्रय हेतु दिनांक **10.05.24** को निष्पादित विक्रय इकरारनामा की छायाप्रति प्रस्तुत कर भवन **श्रीमती मदालसा परस्ते पति श्री जय कुमार परस्ते** के नाम से विक्रय करने के लिए विक्रय अनुमति की मांग की हैं।

अत: किसी भी व्यक्ति शासकीय/ अर्द्धशासकीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/ भवन के **विक्रय के संबंध में** किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आमसूचना प्रकाशन के **15 दिन** के अन्दर समक्ष उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नहीं की जायेंगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर मंगलवार 02 जुलाई 2024

दो क्विंटल गांजा भरा था, दो सौ एक पैकेट्स बनाये गये थे

कार से हो रही थी तस्करी, घोघरी में पकड़ाया 16 लाख का गांजा

सक्ती(विश्व परिवार)। कार से गांजा की तस्करी की जा रही थी जिसे हसौद डभरा के बीच घोघरी के पास पकड़ा गया तो इसे 201 पैकेट में 2 क्विंटल गांजा भरा मिला। जिसकी कीमत 16 लाख 8 हजार रुपये बताई जा रही है। पुलिस को देखते ही ड्राइवर ने खोया नियंत्रण, खंभे से टकराई कार के खम्भे से कार टकरा गई। डभरा पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार 27 जून को मुखबिर से सूचना मिली कि एक सफेद रंग की लग्जरी कार में मादक पदार्थ गांजा लेकर हसौद से डभरा की ओर मेन रोड से आ रहा है। सूचना मिलते ही डभरा पुलिस हरकत में आई और पकड़ने के लिए टीम तैनात कर दी। पुलिस अधीक्षक को भी इसकी सूचना दे दी गई और कार्रवाई के लिए टीम रवाना की

गई। ग्राम घोघरी में नाकाबंदी के दौरान कार क्रमांक सीजी 13 एक 6113 में यह गांजा बरामद किया गया है। बताया जा रहा है कि ग्राम घोघरी मेन रोड में जैसे ही चालक ने पुलिस को देखा घबरा गया और बिजली भाग निकले दो युवक कार के खंभे से टकराते ही दो लोग भागने लगे तब पुलिस ने उनको घेराबंदी भी की लेकिन दोनों युवक भागने में सफल रहे। जिसमे विधिवत कार्रवाई करते हुए उक्त पुलिस थाना डभरा थाना इभरा जिला तक्त कोतमा अनूपपुर से एक आरोपी को पकड़ा गया एसपी अंकिता शर्मा निर्देश पर प्रकरण के आरोपी अनिल कुमार सेन पिता अशोक कुमार साकिन वार्ड नं. 11 बाजार दफई भालूमाड़ा थाना कोतमा जिला अनूपपुर (म.प्र.) हाल मुकाम खमतराई हाउसिंग बोर्ड थाना सरकण्डा जिला बिलासपुर (छ.ग.) को हिरासत में लेकर पूछताछ की। उसने जुर्म स्वीकार किया। आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया गया। कार के अंदर मे रखे अवैध मादक पदार्थ गांजा 201 पैकेट ब्राउन कलर का पन्नी सेलो टेप से बंधा हुआ बरामद किए। प्रत्येक पैकेट में एक किलो गांजा है। पुलिस ने बताया कि प्रत्येक पैकेट की कीमत करीब 8 हजार रूपये है। कुल 16 लाख 8 हजार रूपयों के गांजा को बरामद किया गया है। कार को जब्त कर धारा 20 (बी) एन.डी.पी.एस. एक्ट पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया।

सहायक राजस्व निरीक्षक अवध बिहारी को सेवानिवृत्ति पर दी गई विदाई

अकलतरा(विश्व परिवार)। नगर पालिका में पदस्थ सहायक राजस्व निरीक्षक अवध बिहारी तिवारी 16 वर्ष की सेवा के बाद आज सेवानिवृत्त हुए। मूलत: राज्य परिवहन निगम से शासकीय सेवा प्रारंभ कर प्रतिनियुक्ति में नगर पालिका में पदस्थ हुए थे उनके सेवा निवृत्त होने पर कार्यालयीन कर्मचारियों द्वारा उनके लिए बिदाई समारोह का आयोजन किया गया जिसमें प्रमुख रुप से उपस्थित पालिका अध्यक्ष शांति भारते एवं मुख्य नगर पालिका अधिकारी सौरभ तिवारी ने उनके कार्य के प्रति समर्पण एवं जिम्मेदारी से कार्य करने की सराहना करते हुए उनकी दीर्घायु जीवन की कामना की तथा स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया। इस अवसर पर कार्यालय में पदस्थ कर्मचारियों के साथ ही नगर पालिका में कार्यरत् कर्मचारी शामिल हुए। समारोह का संचालन एवं आभार प्रदर्शन शेखर उपाध्याय ने किया।

एस ई सी एल मुख्यालय में अर्धनग्न प्रदर्शन की महिलाओं ने दी चेतावनी

कोरबा(विश्व परिवार)। अर्जित भूमि पर रोजगार प्रदान नहीं किये जाने के कारण विरोध प्रदर्शन की सूचना भू-विस्थापित परिवार की महिलाओं के समूह ने एसईसीएल बिलासपुर के सीएमडी को दी है। इन्होंने कहा है कि मांग पूरी न होने पर कारगिल विजय दिवस के दिन मुख्यालय में अर्धनग्न प्रदर्शन किया जाएगा। भू-विस्थापितों ने बताया है कि एसईसीएल की विभिन्न परियोजनाओं कुसमण्डा. गेवरा, दीपका आदि में उनकी भूमि के अर्जन उपरांत आज तक रोजगार से षडयंत्रपूर्वक वंचित रखा गया है। एसईसीएल के अधिकारियों की मिलीभगत से हमारी भूमि में गलत व्यक्तियों को रोजगार दिया गया है साथ ही उनकी विधिवत जांच न करते हुए उन्हें संरक्षण प्रदान किया गया है जिसके विरूद्ध विगत कई वर्षो से लगातार अपने रोजगार हेतु प्रयासरत हैं। कई आंदोलन कर चुके परन्तु एसईसीएल प्रबंधन से आश्वासन के अलावा कोई हल नहीं मिला। एसईसीएल प्रबंधन के इस निरंकुश एवं तानाशाही रवैये से क्षुब्ध होकर सभी महिला भूविस्थापित 26 जुलाई कारगिल विजय दिवस के दिन एसईसीएल मुख्यालय के समक्ष अर्धनग्न प्रदर्शन करने को मजबूर हैं। भू-विस्थापित रोजगार एकता महिला किसान अध्यक्ष कमलेश्वरी, भू-विस्थापित सह संयोजक ज्योति महंत, प्रदेश सचिव तारामणी, जिला सचिव शशि, प्रदेश सचिव कांति देवी, प्रदेश अध्यक्ष संजय रचनाकर सहित गायत्री देवी, सीमा साहू, चंदा केंवट, पवारा बाई आदि ने कहा है कि 25 जुलाई तक एसईसीएल मुख्यालय बिलासपुर (छ.ग.) द्वारा लंबित समस्त रोजगार प्रकरणों को वन टाईम सेटलमेंट कर निराकृत नहीं किया गया तो 26 जुलाई कारगिल विजय दिवस के दिन हम सभी एसईसीएल के विभिन्न परियोजनाओं में लंबित पुराने प्रकरणों के भूविस्थापित परिवार के महिला सदस्य एसईसीएल मुख्यालय बिलासपुर में अर्धनग्न प्रदर्शन करेंगे जिसकी समस्त जवाबदारी एसईसीएल प्रबंधन विशेष कर डॉ. प्रेम सागर मिश्रा अध्यक्ष सहप्रबंधन निर्देशक एसईसीएल बिलासपुर की होगी।

चार वर्षों से अधूरे प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास को पूर्ण करा रहे है जनपद सीईओ

बलौदाबाजार(विश्व परिवार)। जनपद पंचायत बलौदा बाजार में जब से मुख्य कार्यपालन अधिकारी का स्थानांतरण होकर पदस्थ हुवे हैं तब से लेकर आज तक लगातार अपने सभी 106 ग्राम पंचायत में पहुंचकर सभी शासकीय योजनाओं की सफल क्रियान्वयन करते करते हुए प्रतिदिन क्षेत्र का दौरा कर रहे हैं और सभी अपूर्ण कार्यों को निर्धारित समय में पूर्ण करने के लिए ग्राम पंचायत सरपंच सचिवो को निर्देशित कर रहे हैं ग्राम पंचायत सकरी के पंचायत सचिव हरिकिशन वर्मा द्वारा जानकारी दिया गया कि जनपद पंचायत बलौदा बाजार के मुख्य कार्यपालन अधिकारी एमएल मंडावी कार्यक्रम अधिकारी अविनाश पैकरा ब्लॉक समन्वय पूजा करकेट्टा अभियंता सुरेंद्र सोनखुटिया तकनीकी सहायक लालिनी वर्मा अश्वनी थावाहित के साथ ग्राम पंचायत सकरी पहुंचकर ग्राम पंचायत में चल रहे सभी सांसद मद विधायक मद प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना ग्राम उत्कर्ष योजना 15 वित जिला जनपद ग्राम पंचायत महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना एवं फिजिकल सेल्स इलाज मैनेजमेंट के साथ-साथ सभी कार्यों को कार्य स्थल पर जाकर निरीक्षण कर रहे हैं एवं ग्राम पंचायत में चल रहे आंगनबाड़ी निर्माण महिला सदन निर्माण प्रार्थना सभा गली कॉक्रीटीकरण नाली निर्माण सहित सभी चल रहे कार्यों का निरीक्षण कर समय सीमा में पूर्ण करने का निर्देश दिया गया।

ग्रामसभा की बैठक में पैसों के लेन देन की बात पर गाली-गलौज

कोरबा(विश्व परिवार)। ग्रामसभा की बैठक में पैसों के लेन-देन की बात पर गाली-गलौज करते हुए पिता ने अपनी ही पंच पुत्री के साथ मारपीट की। उसके पति के साथ पिता के सहयोगी ने भी मारपीट कर गला दबाने का प्रयास किया। जानकारी के अनुसार मामला पसान थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत लैंगा का है। 27 जून को शाम करीब 4 बजे पंचायत में ग्रामसभा की बैठक रखी गई थी। बैठक में पंच की हैसियत से श्रीमती बाई सारथी 35 वर्ष निवासी कन्या आश्रम के पीछे लैंगा शामिल हुई थी। पति श्यामलाल भी बैठक में उपस्थित था। बैठक के दौरान पैसों के लेनदेन को लेकर पंच श्रीमती बाई के पिता श्यामलाल पेन्द्रो ने गाली-गलौज करते हुए हाथ-झापड़ से पुत्री के साथ मारपीट किया। पिता के साथ आये संत कुमार सारथी ने पंच के पति के साथ हाथ-मुक्के से मारपीट कर गला पकड़ कर गिरा दिया और गला दबाने की कोशिश करने लगा। बीच में आने पर मार कर फेंक देने की धमकी दी। घटना के दौरान सरपंच संत कली आयाम, उप सरपंच संगीता केशरवानी, शिव प्रसाद तंवर आदि ने बीच-बचाव किया। मामले में श्रीमती बाई की रिपोर्ट पर श्यामलाल पेन्द्रो व संत कुमार के विरुद्ध धारा 294, 323 , 34, 506 भादवि के तहत जुर्म दर्ज कर विवेचना की जा रही है।

ताप विद्युतगृह कोरबा के नौ अधिकारी एवं कर्मचारी हुए सेवानिवृत्त

कोरबा(विश्व परिवार)। डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी ताप विद्युतगृह कोरबा के नौ अधिकारी एवं कर्मचारी सेवानिवृत्त होने पर उन्हें कंपनी द्वारा दीर्घ सेवा सम्मान से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डीएमपीएम के कार्यपालक निदेशक हेमंत सचदेवा ने की और सभी सेवानिवृत्त नौ अधिकारियों एवं कर्मचारियों को स्मृति चिन्ह एवं प्रमाण पत्र से सम्मानित कर भावभिनी विदाई देकर उनके उज्ज्वल एवं सुदीर्घ, स्वस्थ जीवन की शुभकामनाएं प्रेषित की गई। इस अवसर पर कार्यपालक निदेशक श्री सचदेवा ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज हमारे नौ साथी शासकीय सेवा से सेवानिवृत्त हो रहे हैं, उनके अनुभव से हम बिजली उत्पादन की क्षमता को और आगे बढ़ाने के लिए प्रेरणा लेंगे। उन्होंने कहा कि किसी भी कंपनी या संस्था की सफलता बेहतर टीम पर निर्भर होती है। जो आज सेवानिवृत्त हो रहे हैं वे कर्तव्यनिष्ठ होकर कंपनी को आगे बढ़ाने में अपनी महती भूमिका निभाते रहे। उन्होंने सभी सेवानिवृत्त अधिकारियों अधीक्षण अभियंता अमित चटर्जी, संयंत्र निज सहायक दुर्गाशंकर दीक्षित, सीबी बेनर्जी -वरिष्ठ परिवेक्षक, श्रीमती पूर्णिमा श्रीवास्तव (मानव संसाधन), लखनलाल मरावी-वरिष्ठ परिवेक्षक, गुरूनंदन प्रसाद राजवाड़े-वरिष्ठ रसायनिज्ञ, संत कुमार साहू-कनिष्ठ परिवेक्षक, लक्ष्मीनारायण पांडेय-कनिष्ठ परिवेक्षक एवं इख्तियार खान-संयंत्र सहायक को सेवानिवृत्ति पर शुभकामनाएं देते हुए उनकी बेहतर सेवा के लिए बधाई दी। इन सभी अतिथियों को फूल मालाओं -बूके एवं स्मृति चिन्ह तथा प्रमाण पत्र देकर विदाई दी गई। इस अवसर पर सभी सेवानिवृत्त अधिकारियों-कर्मचारियों को विभाग के युनियन नेताओं ने भी बधाई दी। सभी सेवानिवृत्त अधिकारी-कर्मचारियों ने अपने अनुभव भी मंच पर साझा किया। सम्मान समारोह का आयोजन सीनियर क्लब के सभागार में आयोजित किया गया था। कार्यक्रम का संचालन श्री साहू ने किया।

कोरबा में सूदखोरी के खिलाफ पुलिस कार्रवाई

कोरबा(विश्व परिवार)। सूदखोरी की जाल में फंसकर ब्लैकमेलिंग व प्रताड़ना के शिकार हो रहे लोगों को राहत देने के लिए पुलिस कप्तान सिद्धार्थ तिवारी के मार्गदर्शन में कोरबा पुलिस सूदखोरों के खिलाफ ऑपरेशन प्रहार चलाते हुए ताबड़तोड़ कार्यवाही कर रही है। शहर के मानिकपुर व सीएसईबी पुलिस चौकी में ऐसे दो मामले दर्ज हुए हैं। एक में मुड़ापार निवासी चर्चित सूदखोर इरफान कुरैशी उर्फ मोनू व उसके परिचित सलमान कुरैशी तो दूसरे में अम्बे फर्नीचर पावर हाउस रोड कोरबा के सुधीर अग्रवाल, अरूण आईकीम कोरबा के राकेश तिवारी के साथ ही विशी अग्रवाल एवं विशाल सोनी को आरोपी बनाया गया है।

सीएसईबी पुलिस चौकी में

आनन्द तिवारी, उम्र करीब 55 वर्ष आत्मज स्व श्री तुलसी प्रसाद तिवारी निवासी स्व्र/1033 सीएसईबी कालोनी कोरबा जो कि शासकीय प्राथमिक शाला करुमौहा विकासखण्ड कोरबा जिला कोरबा में प्रधानपाठक है उनकी रिपोर्ट दर्ज की गई है। जिसके अनुसार माह मार्च 2020 में उन्हें घरेलु कारणों से रकम की आवश्यकता होने पर परिचित गजानंद राठौर निवासी ढोढ़ीपारा कोरबा के माध्यम से मुझे इरफान कुरैशी उर्फ मोनू के बारे में पता चला कि वह 10 प्रतिशत मासिक ब्याज पर रकम देने का काम करता है। तब दिनांक 25/03/2020 को इरफान कुरैशी उर्फ मोनू से 50.000- / (रूपए पचास हजार) 10 प्रतिशत मासिक ब्याज पर प्राप्त किया। उक्त रकम के एवज में बतौर गारंटी इरफान कुरैशी उर्फ मोनू ने 2 कोरा चेक हस्ताक्षर कराकर तथा उक्त बैंक खाते का एटीएम कार्ड को रख लिया। साथ ही नौकरी लगवाने के नाम पर रकम प्राप्त कर रहा हूं कहकर जबरन दबाव बनवाकर शपथ पत्र भी बनवाया है। रुपयों की सख्त आवश्यकता होने के कारण उन्होंने उक्त शपथ पत्र में हस्ताक्षर कर दिया। तद्उपरांत इरफान कुरैशी उर्फ मोनू ने प्रतिमाह 5000/- मासिक ब्याज राशि वसूलता रहा। किस्त अदायगी के दौरान माली हालत खराब हो जाने पर वे 1-2 माह ब्याज की राशि नहीं दे सके तब इरफान कुरैशी ने जबरन दबावपूर्वक वर्ष 2021 में अपना या अपने परिचित्त का एक मोबाईल नंबर लिंक करवाया था तथा उस नंबर पर यूपीआई चालू कर लगातार मेरे खाते से ब्याज की रकम वसूलता रहा। बाद में दिनांक 22/08/2023 को उन्हें अपने आख के ईलाज हेतु रकम की आवश्यकता पड़ने पर पुन: इरफान कुरैशी उर्फ मोनू से 50,000- / (रूपए पचास हजार) 10 प्रतिशत मासिक ब्याज पर प्राप्त किया हूं। उक्त रकम के एवज में बतौर गारंटी इरफान कुरैशी उर्फमोनू ने 6 कोरे चेक पर हस्ताक्षर कराकर तथा उनकी पत्नि के बैंक खाते का 3 नग कोरा चेक उनकी पत्नि से हस्ताक्षर कराकर रख लिया। साथ ही नौकरी लगवाने के नाम पर रकम प्राप्त कर रहा हूं कहकर जबरन दबाव बनवाकर शपथ पत्र भी बनवाया है। ब्याज कर रकम जमा करने में असफल होने पर पुन: इरफान कुरैशी उर्फ मोनू ने उनके कार वाहन क्र छत्त12च्य-1281 का विक्रीनामा अपने नाम पर बनवा लिया है। माह मई 2024 से इरफान कुरैशी और उसका रिस्तेदार सलमान कुरैशी मिलकर घर आकर मेरे परिचित गजानंद राठौर के घर बुलवाकर तथा राह चलते आते जाते व्याज सहित मूल राशि 700000/- रुपये की मांग करते आ रहे है तथा नहीं देने गाली गुप्तार कर तुमको घर से उठाकर ले जायेंगे कहकर धमकी देते आ रहे है। आनन्द तिवारी के अनुसार अब वे एवं उनका परिवार काफी आतंकित है तथा डरे हुए है। अभी हाल ही में मुझे समाचार पत्र के माध्यम से उन्हें जानकारी मिली थी कि इरफान कुरैशी उर्फ मोनू को मानिकपुर चौकी पुलिस के द्वारा इसी तरह के मामले में गिरफ्तार कर जेल भेजा गया है।

संक्षिप्त समाचार

विकलांग जनों की सेवा हेतु हम हमेशा तैयार- हितानंद

कोरबा(विश्व परिवार)। क्या आपने कभी सोचा है कि अगर घर का मुखिया पैरों से लाचार हो जाए तो घर को कौन चलाएगा। ऐसा ही वाकया वार्ड क्रमांक 35 में हुआ। जहां एक गरीब व्यक्ति लक्ष्मण चौहान जो कि घर-घर घूम कर ब्रेड बेचने का काम करता था। बीमारी की वजह से इसका एक पर नहीं रहा। जिससे उसकी आजीविका का साधन समाप्त हो गया, घर का गुजर बसर भी बड़ी मुश्किल से हो पा रहा था। आए दिन वह कई लोगों के पास सहायता के लिए दौड़ता रहा। लोगों ने कई प्रकार से उसकी मदद भी की। अपने वार्ड के पार्षद एवं नेता प्रतिपक्ष हितानंद अग्रवाल जी के यहां भी वह सहायता के लिए पहुंचा। हितानंद अग्रवाल ने सामर्थ्य विकास योजना के तहत प्रयास कर उसके जीवकोपार्जन के लिए इलेक्ट्रॉनिक ट्राई साइकिल उपलब्ध कराई। आज लक्ष्मण चौहान साइकिल पाकर बेहद खुश है। पूछने पर उसने बताया कि पैर न होने की वजह से वह अपना काम नहीं कर पा रहा था। इलेक्ट्रॉनिक ट्राई साइकिल मिलने से उसके जीवन में नई किरण आई है, अब वह अपना पुराना काम इस साइकिल के माध्यम से कर सकेगा। बातचीत में हितानंद अग्रवाल ने बताया कि विकलांग जनों की सेवा हेतु हम हमेशा तैयार हैं, जब लक्ष्मण चौहान सहायता के लिए उनके पास पहुंचा और अपने परिवार की स्थिति बताई तो उनसे रहा नहीं गया। उन्होंने तुरंत समाज कल्याण विभाग में संपर्क कर उसे योजना का लाभ दिलाया।

वाट्सएप स्टेटस देख मारा चाकू

बिलासपुर(विश्व परिवार)। वाट्सएप स्टेटस लगाने को लेकर ट्रक के हेल्पर ने अपने साथी की पिटाई कर दी, साथ ही उस पर चाकू से हमला कर दिया। हमले में घायल हेल्पर ने इलाज के बाद घटना की शिकायत तारबाहर थाने में की है। इस पर पुलिस ने जुर्म दर्ज कर मामले को जांच में लिया है। गतौरा में रहने वाले अनिमेश जगत ट्रक में हेल्परी का काम करते हैं। उन्होंने पुलिस को बताया कि गुरुवार को वे पंधी स्थित राइस मिल से चावल लेकर तारबाहर एफसीआइ गोदाम आए। दूसरे दिन करीब तीन बजे वे चावल खाली कर ट्रक को तारबाहर पुराना आइल डिपो के पास ले आए। यहां पर ट्रक खड़े कर ड्राइवर देवप्रसाद नवरंग अपने घर चला गया। हेल्पर ट्रक में ही सो रहा था। रात करीब तीन बजे दूसरे ट्रक का हेल्पर करण राज उसके पास आया। उसने कुछ दिन पहले लगाए वाट्सएप स्टेटस को लेकर अनिमेश से गाली-गलौज की, साथ ही उनके पेट में नुकीले हथियार से मार दिया। हमले में घायल हेल्पर ने घटना की जानकारी ड्राइवर को देकर जिला अस्पताल में इलाज कराया। इसके बाद उन्होंने घटना की शिकायत तारबाहर थाने में की है। शिकायत पर पुलिस ने जुर्म दर्ज कर मामले को जांच में लिया है।

अज्ञात वाहन ने सायकल सवार युवक को रौंदा

गौरेला-पेंड्रा-मरवाही(विश्व परिवार)। गौरेला थाना क्षेत्र के गिरवर गांव के पास एक दर्दनाक सड़क हादसा हुआ है. अज्ञात वाहन ने साइकिल सवार युवक का सिर कुचल दिया, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई. घटना की सूचना पर पुलिस और 112 नंबर की टीम मौके पर पहुंची और मर्ग कायम कर लिया है. इस घटना को लेकर स्थानीय लोगों में गुस्सा है. घटनास्थल पर लोगों की भीड़ जमा हो गई जिसकी वजह से लंबा जाम लग गया है. मृतक युवक गिरवर गांव का ही निवासी बताया जा रहा है. फिलहाल पुलिस युवक का पहचान करने में जुटी हुई है. गौरेला पुलिस ने मृतक युवक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है. मामले में आगे की कार्रवाई जारी है.

कोरबा में पकड़ी गई मध्यप्रदेश की शराब

कोरबा(विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री अजीत वसंत के निर्देश पर और सहायक आयुक्त आबकारी श्री सौरभ बख्शी के मार्गदर्शन में आज दिनांक 29/06/2024 को डॉ सुकांत पांडेय आबकारी उपनिरीक्षक द्वारा मुखबिर से प्राप्त सूचना के आधार पर बिलासपुर अंबिकापुर हाईवे में चकचकावा पहाड़ी थाना कटघोरा* के पास घेराबंदी कर अनुपपुर से चोटिया पसान रास्ते से आ रही वाहन बोलेरो को रोका गया।वाहन में नवीन शिवहरे एवम् मनोज खटिक उपस्थित मिले,वाहन की तलाशी लिए जाने पर 6 पेटी सिग्नेचर,5 पेटी मैकडॉवेल्स ठुथ 1 पाव,5 पेटी रॉयल स्टेज पाव,03 पेटी ब्लेंडर प्राइड पाव कुल 164.16 बल्क ली मदिरा बरामद की गयी।आरोपीयों के विरुद्ध छत्तीसगढ़ आबकारी अधिनियम की धारा 34(1)(क),34(2),36,59(क) के तहत अपराध पंजीबद्ध कर आरोपियों जेल दाखिल करने की कार्यवाही की जा रही है। उपरोक्त कार्रवाई में आबकारी उपनिरीक्षक डॉ सुकान्त पांडेय,आशीष उप्पल आबकारी मुख्य आरक्षक अजय तिवारी नगर सैनिक राजेश दुबे,प्रजेश सिंह एवम् अंबिका का सराहनीय योगदान रहा.

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर मंगलवार 02 जुलाई 2024

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय

शेख हसीना आना कई मायनों में सुकूनकारी

भारत में नई सरकार के गठन के बाद भारत की द्विपक्षीय राजकीय यात्रा पर बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना आना कई मायनों में सुकूनकारी है। उनकी यात्रा का उद्देश्य दोनों देशों के दरम्यान के घनिष्ठ संबंधों को और आगे बढाना है। दोनों देशों ने समुद्र क्षेत्र समेत कई अन्य अहम क्षेत्रों में संबंधों को बढ़ावा देने के लिए दस समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं, जिसमें डिजिटल क्षेत्र में संबंध प्रगाढ़ करने व हरित साझेदारी के साथ समुद्र विज्ञान, स्वास्थ्य व चिकित्सा, आपदा प्रबंधन व मत्स्य पालन भी इसमें शामिल है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा नए क्षेत्रों में सहयोग के वास्ते भविष्य के लिए एक दृष्टिकोण तैयार किया है, जिससे दोनों देशों के युवाओं को लाभ मिलेगा। हसीना ने भारत को विसनीय मित्र बताते हुए 1971 में बांग्लादेश की स्वतंत्रता में भारत सरकार व भारतीयों के योगदान को याद किया। भारत की पड़ोसी पहले की नीति के तहत बांग्लादेश महत्त्वपूर्ण भागीदार है। दोनों देश जल्द नई रेल सेवा व बस सेवा भी चालू करने पर सहमत हैं। पंद्रह दिनों के भीतर हसीना का यह दूसरा भारत दौरा है। कहा जा रहा है, इस करीबी से चीनी सरकार चिंतित हो सकती है। हालांकि बांग्लादेश के चीन के साथ भी अच्छे संबंध हैं। वह कच्चे माल के मामले में उसका प्रमुख व्यापारिक साझेदार है। इसके बाद हसीना चीन भी जा रही हैं, परंतु भारत ने भी पिछले आठ वर्षों में बांग्लादेश के बुनियादी ढांचे के विस्तार में मदद के लिए आठ मिलियन डॉलर का कर्ज दिया है। 2022-23 के दौरान दोनों देशों के दरम्यान 15.9 बिलियन डॉलर का व्यापार हुआ, जिसके मौजूदा वर्ष में तीव्र गति से बढने की उम्मीद है। गौर करने वाली बात है कि बांग्लादेश भारत का सबसे बड़ा डेवलपमेंट पार्टनर भी है। हालांकि दोनों ही देश जलवायु परिवर्तन के बदलावों के चलते जनसांख्यकीय व आर्थिक उथल-पुथल झेल रहे हैं। और ये मसले वाकई दोनों ही देशों के लिए परेशानी का सबब हैं। इस समझौते को विकसित भारत 2047 व स्मार्ट बांग्लादेश 2041 के व्यापक दृष्टिकोण से देखा जा रहा है। बांग्लादेशी नौजवानों के लिए भारत सिर्फ बेहतरीन जीवन व रोजगार की स्वप्नगाह भर नहीं है।

राहुल का कद भी बढ़ा एवं राजनीतिक कौशल भी

ललित गर्ग

राहुल गांधी इस बार उत्तर प्रदेश के रायबरेली लोकसभा क्षेत्र से निर्वाचित हुए हैं। इससे पहले वह लोकसभा में केरल के वायनाड और उत्तर प्रदेश के अमेठी का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। वह पांचवीं बार लोकसभा पहुंचे हैं। इस बार के लोकसभा चुनाव ने कांग्रेस पार्टी को पुनर्जीवन दिया है। राहुल गांधी लोकसभा में प्रतिपक्ष के नेता बन गये हैं, यह उनका पहला संवैधानिक पद है, इससे पहले वे कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे हैं। इस बड़े पद के साथ उनकी जिम्मेदारियां भी बढ़ जायेंगी। दस वर्षों बाद लोकसभा में प्रतिपक्ष के नेता का पद मिला है। वैसे इस बार के चुनाव एवं चुनाव में मिली शानदार जीत के बाद राहुल गांधी का न केवल आत्मविश्वास बढ़ा है, बल्कि उनमें राजनीतिक कौशल एवं परिपक्वता भी देखने को मिल रही है, इससे यह प्रतीत होता है कि वे प्रतिपक्ष नेता के पद के साथ न्याय करते हुए अपनी राजनीति को चमकायेंगे एवं रसातल में जा चुकी कांग्रेस को सुदृढ़ करेंगे। वैसे देखा गया है कि प्रतिपक्ष के नेता बनने वाले अधिकांश लोग प्रधानमंत्री तक पहुंचे हैं। लेकिन राहुल गांधी को इसके लिये अभी लम्बा संघर्ष करना होगा, परिपक्व राजनीति एवं देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी को साबित करना होगा। निश्चित ही राहुल गांधी का कद बढ़ा है और अब वे स्वल्प समय में ही कद्दावर नेता की तरह राजनीति करने लगे हैं। राहुल को देशभर में निकाली यात्राओं एवं चुनाव प्रचार में निभाई सशक्त भूमिका ने मजबूती दी है। राहुल की राजनीति को चमकाने में कन्याकुमारी से कश्मीर तक की 'भारत जोड़ो यात्रा' के अलावा मणिपुर से मुंबई तक की 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अब प्रतिनेता के रूप में उनकी एक नई यात्रा शुरु हो रही है जो उन्हें नई राजनीतिक ऊंचाई दे सकती है। देश को 10 साल बाद राहुल गांधी के रूप में विपक्ष का नेता मिला है, जो संसदीय राजनीति के लिए एक अच्छी खबर है। इससे लोकतंत्र को मजबूती मिलेगी एवं जनता की आवाज को जोरदार तरीके से उठाने एवं सरकार की नीतियों-योजनाओं पर तीखी नजर रखने एवं प्रभावी सवाल उठाने की स्थितियों को बल मिलेगा। लेकिन विपक्ष की नुमाइंदगी का मतलब यह नहीं कि वह हर मामले में सत्ता पक्ष के खिलाफ हो, बल्कि यह है कि वह हमेशा जनता के साथ हो और उसकी ओर से मुद्दे उठाए। नेता प्रतिपक्ष पद से सरकार के साथ ही विपक्ष पर भी जवाबदेही का दबाव बढ़ता है। राहुल की सुविधाएं बढ़ने के साथ जिम्मेदारियां भी बढ़ गयी है। 16वीं और 17वीं लोकसभा में कांग्रेस या अन्य विपक्षी दलों के पास इस पद के लिए आवश्यक 10 प्रतिशत सदस्य नहीं थे। कांग्रेस ने इस बार लोकसभा चुनाव में 99 सीट जीतकर इस पद को हासिल किया है। नेता प्रतिपक्ष के तौर पर राहुल गांधी केंद्रीय सतर्कता आयोग, केंद्रीय सूचना आयोग और राष्ट्रीय मानवाधिकार से जुड़े चयन के अलावा लोकपाल, मुख्य चुनाव आयुक्त और चुनाव आयुक्तों, केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) निदेशक जैसी प्रमुख नियुक्तियों पर महत्वपूर्ण पैनल के सदस्य भी होंगे। प्रधानमंत्री इन पैनल के प्रमुख होते हैं। नेता प्रतिपक्ष के रूप में राहुल गांधी को लोकसभा में पहली पंक्ति में सीट मिलेगी। यह सीट डिप्टी स्पीकर की सीट के बगल वाली होगी। इसके अलावा संसद भवन में सचिवीय तथा अन्य सुविधाओं से युक्त एक कमरा भी मिलेगा। विपक्ष के नेता को औपचारिक अवसरों पर कुछ विशेषाधिकार भी प्राप्त होते हैं। एक केन्द्रीय मंत्री को मिलने वाली सभी सुविधाएं राहुल गांधी को मिलेगी। राहुल गांधी इस बार उत्तर प्रदेश के रायबरेली लोकसभा क्षेत्र से निर्वाचित हुए हैं। इससे पहले वह लोकसभा में केरल के वायनाड और उत्तर प्रदेश के अमेठी का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। वह पांचवीं बार लोकसभा पहुंचे हैं। इस बार के लोकसभा चुनाव ने कांग्रेस पार्टी को पुनर्जीवन दिया है। इस बार के चुनाव परिणाम ने कांग्रेस एवं उसके नेता राहुल को मनोवैज्ञानिक लाभ पहुंचाया है, जो उनके लिए एक बड़ी उपलब्धि बनी है। इससे कांग्रेस ने अपना आत्मविश्वास फिर से पा लिया है, जो कोई छोटी बात नहीं। और यह राहुल और प्रियंका गांधी की गतिविधियों में साफ झलकता है। साथ ही, अब इस बात को लेकर भी कांग्रेस में कोई दुविधा नहीं रह गई है कि गांधी परिवार ही सर्वोच्च है और पार्टी पर उसका पूरा नियंत्रण होगा। इसका यह भी मतलब है कि टीम-राहुल का सभी मामलों में फैसला अंतिम होगा। पार्टी अध्यक्ष पद छोड़ने के बाद से राहुल के पास कांग्रेस की कोई जिम्मेदारी नहीं थी। सदन के भीतर पहली बार वह कोई पद संभालने जा रहे हैं। ऐसे में राहुल के सामने चुनौती होगी कि वह किस तरह पूरे विपक्ष को साथ लेकर चलते हुए रचनात्मक विरोध की भूमिका को आकार देते हैं। कांग्रेस का सबसे बड़ा काम दलित और पिछड़े मतदाताओं ने यूपी में जो उनकी मदद की है, उनका विश्वास बनाए रखने का है। यह बड़ी सचाई है कि आज भी देश के महत्त्व के राज्यों में भाजपा को क्षेत्रीय दल शिकस्त दे रहे हैं। अगर क्षेत्रीय दलों के साथ कांग्रेस का गठजोड़ बना रहे, तो ही भाजपा पर दबाव आएगा। बड़ा सच यह भी है कि न भाजपा बदली है ना उसकी विचारधारा। भाजपा एवं नरेन्द्र मोदी को भले ही चुनावों में पूर्ण बहुमत न मिला हो, लेकिन वह ही आज ताकतवर है। यह भी समझना होगा कि भाजपा विपक्ष की ताकत से नहीं, बल्कि सरकार की बड़ी गलतियों एवं पार्टी के अति उत्साह से नुकसान में पहुंची है। यह भी एक तथ्य है कि मुस्लिमों के सक्रिय-समर्थन के बिना कांग्रेस को कामयाबी नहीं मिल सकती थी। निश्चित ही मुसलमानों के वोट की अहमियत कुछ-कुछ सीटों पर हार-जीत का फैसला कर गई है। भाजपा अपनी आगे की रणनीति इसी आधार पर बनाएगी और वो पिछले चुनावों के जैसी ही होगी। मतलब कि भाजपा कोई नई भाषा नहीं बोलने वाली है। वह आरोप लगाती रहेगी कि कांग्रेस अल्पसंख्यकों का तुष्टीकरण करती है। कांग्रेस के सामने चुनौती होगी कि वो इस आरोप को अपने पर आने न दे, ताकि भाजपा हिंदुओं के हितों की एकमात्र रक्षक है, ऐसा दावा ना कर सके। कांग्रेस को इस हिंदू-मुस्लिम राजनीतिक बवंडर से बचने के लिये अपनी रणनीति को बनाना होगा। बिना हिन्दू वोट के कांग्रेस सफल राजनीतिक पारी नहीं खेल सकती है। इसके साथ ही कांग्रेस को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व की सफलता और निष्फलता का सही आकलन कर लेना जरूरी है। जनता के समक्ष अपना आत्मविश्वास बढ़ाए रखना अच्छी बात है, लेकिन मोदी आज जिस जमीन पर खड़े हैं, जनता के बीच उनकी जो स्वीकार्यता है उसका सही आकलन करना कांग्रेस की आगे की रणनीति के लिए बेहद जरूरी होगा। राहुल गांधी सदन में विपक्ष की मजबूत आवाज बनकर उभरेंगे, इसमें सन्देह नहीं है। पक्ष एवं विपक्ष के बीच एक संतुलन बनना लोकतंत्र की खूबसूरती है एवं अपेक्षा भी है।

विशेष लेख

मतदाताओं ने मोदी को बदलने का मैसेज दिया

हरिशंकर व्यास

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तीसरी शपथ को बीस दिन हो गए है। केबिनेट, संसद की बैठक, स्पीकर चुनाव और राष्ट्रपति का अभिभाषण सब हो गया है। तो सोचे, क्या आपको कोई एक भी क्षण, एक भी घटना, एक भी चेहरा, एक भी जुमला और एक भी ऐसा परिवर्तन दिखलाई दिया जिससे लगा मानों ताजा हवा का झौका हो। क्या केबिनेट में कुछ नया, ताजा दिखा? क्या प्रधानमंत्री दफ्तर, सरकार की आला नौकरशाही में कोई परिवर्तन झलका? ऐसी कोई नई प्राथमिकता, नया मुद्दा, नया विषय प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति के मुंह से निकला जिससे लगे कि जिन बातों (रोजगार, महंगाई, बेहाल जिंदगी, नौजवान आबादी, किसान, मजदूर, मध्यवर्ग आदि) पर मतदाताओं ने मोदी के चार सौ पार के नारे को नकारा, तो उससे सबक सीख कर जिंदगी के रियल मसलों पर मोदी ३०में नया कुछ बनने की संभावना है? इस बात को इस तरह भी रख सकते है कि मतदाताओं ने नरेंद्र मोदी को बदलने का मैसेज दिया, विपक्ष में दम भरा तो शासन और राजनीति में आम रायसे, सबसे सलाह करके, सबसे पूछ कर निर्णय का नया सिलसिला बनना चाहिए था या नहीं? उस नाते क्या नरेंद्र मोदी को अपने को रिइंवेंट नहीं करना था? भाषण कम करके, विपक्ष से पंगा कम ले और सर्वानुमति बना कर राज करने का नया अंदाज। मैं, मैं भगवान, मैं महान की बजाय हम, एनडीए, भाजपा और पक्ष-विपक्ष सब एक ही देश के अंशधारी है, यह सोचते हुए सबका साझा,सबका साथ, और सबके विकास की जुमलेबाजी को नई तरह से गढ़ा जाना चाहिए था। मतलब प्रधानमंत्री खुद ही विपक्ष से बात करके, विपक्षी नेताओं को बुलाकर आम राय से ऐसा स्पीकर बनाते जिससे संसद की आभा बढ़ती। बुद्धी, मेघा, अंग्रेजी-हिंदी की भाषागत प्रवीणताओं और व्यवहार से वैश्विक जमात, मंच और संगठनों में भारत की उपस्थिति मौजूदगी हो तो दुनिया को लगे कि सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश का स्पीकर कैसा भव्य व्यक्तित्व लिए हुए है। क्या आपको लगता है ऐसी कोई भी चिंता या दिल-दिमाग में सोच का परिवर्तन नरेंद्र मोदी३०में आया है? असलियत में बीस दिनों में नरेंद्र मोदी ने हर वास्तनिकता से मुंह चुराया है। चुनाव नतीजों के बाद नरेंद्र मोदी ने न तो भाजपा के पदाधिकारियों से सीधे-सीधे बात की और न भाजपा संसदीय दल की बैठक बुला कर उसमें नतीजों और नए नेता के चुनाव पर विचार किया। न ही संघ परिवार के पदाधिकारियों को बुला कर उनके साथ विचार, सलाह और परस्पर विश्वास बनाने जैसी कोई पहल की। विपक्ष और विपक्ष की सबसे पार्टी कांग्रेस के अध्यक्ष से सीधी बात करने की हिम्मत नहीं दिखाई। राजनाथसिंह को आगे करके सहयोगी दलों और विपक्षी नेंताओं से दिखावे का सलाह-मशविरा था। किया वही जो मन में था।सभी निर्णय उसी ढर्रे में जो पिछले कार्यकाल से चला आ रहा है। इसलिए भाजपा के भीतर या सरकार में या संसद में वही होगा जो पहले होता आया है। नई सरकार का पालने में बीस दिनों के लक्षण वही है जो दस सालों का ढर्रा है। यह स्वभाविक है इसलिए क्योंकि नरेंद्र मोदी के लिए तीसरी दफा शपथ लेना ही परम संतोष याकि यह लक्ष्य प्राप्त है देखों, देखों मैंने जवाहरलाल नेहरू की तरह लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने का कीर्तिमान बना लिया। मुझे इतिहास वैसे ही याद रखेगा जैसे नेहरू को रखता है।मतलब जैसे गांव, पंचायत में होता है कि यदि कोई सरंपच, लगातार दस-पंद्रह साल लगातार पद पर बना रहे तो वह और उसका परिवार अपने को इलाके का राजा हुआ मानता है और एसडीओ, बीडीओं तथा लोग सब उसके अंहम के कसीदे काढ़ते है। वैसे ही मनोभाव में नरेंद्र मोदी अपने प्रधानमंत्रित्व का तीसरा टर्म इस सोच में पूरा करेंगे कि जब तीसरी बार बन गए है तो ऐसा होना उनके 2014 से अपनाएं तौर-तरीकों और शासन की बदौलत ही तो है। इसलिए ढर्रा याकि यथास्थिति याकि बासी कढ़ी ही भारत का अमृत है। हिंदुओं और भक्तों की परम सिद्धी है तो कुछ बदलने की, या नया कुछ करने की भला क्या जरूरत है? शपथ हो गई है न। इसका अहसास कराने के लिए ही नरेंद्र मोदी ने शपथ समारोह को ज्यादा भीड़भरा और भारत के भीड़ चरित्र को उद्घाटित करने वाला बनाया। फिर बिना किसी एजेंडे के जबरदस्ती जी-7 की बैठक में भी चले गए।

देश में महंगाई से लड़ने की कोशिश

सतीश सिंह

महंगाई और विकास के बीच संतुलन साधने के लिए मौद्रिक नीति समिति ने अपनी समीक्षा में रेपो दर को 6.5 प्रतिशत के दर पर यथावत रखा है। इसके पहले फरवरी, 2023 में इसमें बढ़ोतरी की गई थी। भारतीय रिजर्व बैंक मुख्य तौर पर रेपो दर में बढ़ोतरी करके महंगाई से लड़ने की कोशिश करता है। जब रेपो दर अधिक होता है तो बैंकों को रिजर्व बैंक से महंगी दर पर कर्ज मिलता है, जिसके कारण बैंक भी ग्राहकों को महंगी दर पर कर्ज देते हैं। ऐसा करने से अर्थव्यवस्था में मुद्रा की तरलता कम हो जाती है और लोगों की जेब में पैसे न होने की वजह से वस्तुओं की मांग में कमी आती है और वस्तुओं व उत्पादों की कीमत अधिक होने के कारण इनकी बिक्री में कमी आती है, जिससे महंगाई में गिरावट दर्ज की जाती है। इसी तरह अर्थव्यवस्था में नरमी रहने पर विकासात्मक कायरे में तेजी लाने के लिए बाजार में मुद्रा की तरलता बढ़ाने की कोशिश की जाती है और इसके लिए भी रेपो दर में कटौती की जाती है, ताकि बैंकों को रिजर्व बैंक से सस्ती दर पर कर्ज मिले और सस्ती दर पर कर्ज मिलने के बाद बैंक भी ग्राहकों को सस्ती दर पर कर्ज दें। मौजूदा समय में महंगाई दर सरकार और रिजर्व बैंक के लिए चिंता का सबब है। केयर एज रेटिंग के अनुसार कर्ज दर के नरम नहीं होने के बावजूद वित्त वर्ष 2023-24 में ऋण वृद्धि दर 16 प्रतिशत के आसपास रही है, और वित्त वर्ष 2024-25 में इसके 14 से 14.5 प्रतिशत के बीच रहने का अनुमान है। ऐसी स्थिति भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए बेहद सकारात्मक है। हालांकि, इसे अपवाद वाली स्थिति कहा जा सकता है। बहरहाल, कर्ज देने की रफ्तार में तेजी बनी रहने के कारण आर्थिक गतिविधियों और विकास दर, दोनों में तेजी आ रही है। इसी वजह से रिजर्व बैंक ने वित्त वर्ष 2025 के लिए अपने विकास अनुमान को 7.00 प्रतिशत से बढ़ाकर 7.2 प्रतिशत कर दिया है। वित्त वर्ष 2023-2024 की चौथी तिमाही में जीडीपी वृद्धि दर 7.8 रही जबकि पिछले साल की समान तिमाही में 6.1 प्रतिशत रही थी। वहीं, वित्त वर्ष 2023-24 में जीडीपी वृद्धि दर 8.2 प्रतिशत रही जो रिजर्व बैंक के अनुमान से 1.2 प्रतिशत अधिक है यानी रिजर्व बैंक ने वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान जीडीपी वृद्धि दर का अनुमान 7 प्रतिशत लगाया था। पिछले वित्त वर्ष में जीडीपी वृद्धि दर 7 प्रतिशत रही थी। सांख्यिकी मंत्रालय के अनुसार विनिर्माण और खनन के क्षेत्र में मजबूत प्रदर्शन से आलोच्य अवधि में विकास दर तेज रही। विनिर्माण क्षेत्र में 9.9 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है, जो वित्त वर्ष 2022-23 में माइनस 2.2 प्रतिशत रही थी। खनन क्षेत्र में वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान 7.1 प्रतिशत की दर से वृद्धि हुई, जो वित्त वर्ष 2022-23 में 1.9 प्रतिशत रही थी। उल्लेखनीय है कि विनिर्माण क्षेत्र रोजगार सृजन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। खुदरा महंगाई अभी भी चिंता की बात है। मई महीने में थोक महंगाई बढ़कर 15 महीनों के ऊपरी स्तर 2.61 प्रतिशत के स्तर पर पहुंच गई जबकि फरवरी, 2023 में यह 3.85 रही थी। वहीं, अप्रैल 2024 में यह 1.26 प्रतिशत रही जो 13 महीने का उच्चतम स्तर था। मार्च, 2024 में यह 0.53 रही और फरवरी महीने में 0.20 प्रतिशत। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय ने 12 जून, 2024 को खुदरा महंगाई का आंकड़ा जारी किया था, जिसके अनुसार मई महीने में खुदरा महंगाई 4.75 प्रतिशत रही जो 12 महीने का निचला स्तर था। अप्रैल महीने में खुदरा महंगाई में कुछ कमी आई थी, लेकिन वह मई महीने से थोड़ी अधिक 4.83 प्रतिशत के स्तर पर थी। जून, 2023 में खुदरा महंगाई 4.81 प्रतिशत थी जबकि जुलाई, 2023 में यह 4.44 प्रतिशत रही थी। महंगाई का सीधा संबंध पर्चेजिंग पावर या खरीदने की क्षमता से है। उदाहरण के लिए यदि महंगाई दर 6 प्रतिशत है, तो अर्जित किए गए 100 रुपये का मूल्य सिर्फ 94 रुपये होगा। इसलिए महंगाई के स्तर के अनुरूप निवेशकों को निवेश करना चाहिए अन्यथा उन्हें प्रतिफल कम मिलेगा। महंगाई का बढ़ना-घटना उत्पाद की मांग-आपूर्ति पर निर्भर करता है। अगर लोगों के पास पैसे ज्यादा होंगे तो ज्यादा उत्पाद खरीदेंगे और ज्यादा उत्पाद खरीदने से मांग बढ़ेगी और मांग के मुताबिक आपूर्ति नहीं होने पर उत्पादों की कीमत बढ़ेगी। इस तरह, बाजार महंगाई के दुष्चक्र में फंस जाएगा। बाजार में पैसों का अत्यधिक बहाव या उत्पाद की कमी महंगाई का कारण बनता है। वहीं, अगर मांग कम होगी और आपूर्ति ज्यादा होगी तो महंगाई कम होगी। ग्राहक खुदरा बाजार से सामान खरीदते हैं और बाजार में मौजूद उत्पादों की कीमत में हुए बदलाव को मापने का काम उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) करता है। उत्पाद और सेवाओं के लिए जो औसत मूल्य चुकाया जाता है, सीपीआई उसी को मापता है। कच्चे तेल, उत्पादों की कीमतों, निर्माण की लागत के अलावा कई अन्य चीजें भी होती हैं, जो खुदरा महंगाई दर को तय करने में अहम भूमिका निभाती हैं। वर्तमान में लगभग 300 उत्पाद ऐसे हैं, जिनकी कीमतों के आधार पर खुदरा महंगाई दर तय होती है। इस तरह, किसी की क्रय शक्ति को निर्धारित करने में मुद्रास्फीति महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मुद्रास्फीति बढ़ने पर वस्तु एवं सेवा, दोनों की कीमतों में इजाफा होता है, जिससे व्यक्ति की खरीददारी क्षमता कम हो जाती है, और वस्तुओं एवं सेवाओं की मांग कम होती है। फिर, उनकी बिक्री कम हो जाती है, उनके उत्पादन में कमी आती है, कंपनी को घाटा होता है, कामगारों की छंटनी होती है, रोजगार सृजन में कमी आती है, आदि। इससे आर्थिक गतिविधियां धीमी पड़ जाती हैं, और विकास की गति बाधित होती है। विगत कुछ महीनों से उधारी ब्याज दर के उच्च स्तर पर बने रहने के बावजूद ऋण वितरण में तेजी है और विकास दर की रफ्तार भी तेज बनी हुई है। वैसे, ऐसी स्थिति अपवाद वाली है। एचएसबीसी इंडिया का पीएमआई आंकड़ा मई, 2024 में 57.5 प्वॉइंट रहा, जो अप्रैल, महीने में 58.8 प्वॉइंट था, वहीं, कंपोजिट पीएमआई मई, 2024 में 60.50 प्वॉइंट था, जो अप्रैल 2024 में 61.50 प्वॉइंट रहा था।

कांग्रेस की हालत सुधरी,लेकिन इतिहास रचने से रह गई

उमेश चतुर्वेदी

सोलहवीं और सत्रहवीं लोकसभा के चुनाव नतीजों की तुलना में देखें तो अठारहवीं लोकसभा चुनाव में कांग्रेस की 99 सीटों पर जीत बड़ी कही जा सकती है। इस पर कांग्रेस नेताओं का इतराना स्वाभाविक भी है। स्वाधीनता आंदोलन की प्रतिनिधि माने जाते रहे राजनीतिक दल का शीर्ष नेतृत्व इस तरह खुश हो रहा है, मानो उसने बड़ा तमगा हासिल कर लिया हो। लेकिन क्या यह कामयाबी इतनी बड़ी है कि पार्टी को इसकी खुशी में झूमना चाहिए? देश पर सबसे ज्यादा और तकरीबन सभी राज्यों में सबसे अधिक वक्त तक जिस पार्टी की सरकार रही हो, क्या उसके लिए यह जीत बड़ी मानी जा सकती है? 1885 में एओ ह्यूम ने कांग्रेस की स्थापना यह सोचकर नहीं की थी कि आने वाले दिनों में वह उनकी ही नस्ल के शासन के खिलाफ उठ खड़ी होगी, बल्कि भारतीय आजादी की मांग के साथ हुंकार भरने लगेगी। ह्यूम ने यह भी शायद ही सोचा होगा कि अंग्रेजी सरकार के खिलाफभारतीयों के गुस्से के तार्किक इजहार के लक्ष्य से स्थापित कांग्रेस उन्हीं की प्रतिनिधि पार्टी बन जाएगी। पहले तिलक और बाद में गांधी का स्पर्श पाकर कांग्रेस ने जैसे अपना चोला बदल लिया। इसका फल उसे आजादी के बाद मिला और तीस सालों तक लगातार वह शासन में रही। उसे पहली बार 1977 में झटका लगा। लेकिन वह जल्द ही वापसी करने में कामयाब रही। ऐसे ही अल्पकालिक झटके उसे, 1989 और 1996 में भी लगे। 1998 में लगे झटके के ठीक अगले साल वह वापसी करती दिखी, लेकिन उसी साल हुए चुनावों के बाद पांच साल के लिए बाहर हो गई। कांग्रेस के इतिहास में यह पहला मौका रहा, जब उसे लगातार पांच साल के लिए सत्ता से बाहर रहना पड़ा। 2004 में अल्पमत से ही सही उसने वापसी की और दस साल तक गठबंधन का सरकार चलाया। लेकिन 2014 के चुनावों में उसकी ऐतिहासिक हार हुई और वह महज 44 सीटों पर सिमट गई। देश पर सबसे ज्यादा वक्त शासन करने वाली पार्टी को नेता प्रतिपक्ष तक का पद नहीं मिला और यही स्थिति 2019 में भी रही, बेशक आठ सीटें बढ़ गईं। दिलचस्प यह है कि गांधी-नेहरू परिवार के चश्म-ए-चिराग के हाथों में पूरी कमान थी। इससे पार्टी में निराशा फैलना स्वाभाविक था, जिसे कांग्रेस अध्यक्ष पद से राहुल गांधी के इस्तीफे से चरम अभिव्यक्ति मिली। पांच साल पहले के आम चुनावों की तुलना में 2024 में कांग्रेस को 99 सीटें मिली हैं। दिलचस्प यह है कि इनमें पिछली बार जीती गईं, 13 सीटें शामिल नहीं हैं। क्योंकि तेरह सीटें कांग्रेस हार चुकी है। फिर भी पार्टी ऐसे उछल रही है, मानो उसने तीन सौ सीटें जीत ली हो। पार्टी कुछ वैसे ही खुश नजर आ रही है, जैसे चार दशक पहले के चुनाव में मिली जीत से प्रसन्न थी। इंदिरा की हत्या की पृष्ठभूमि में हुए 1984 के आम चुनावों में पार्टी को 415 सीटें मिली थीं। 99 सीटों की जीत वाली यह उस कांग्रेस की खुशी है, जिसे आपातकाल के गुस्से के बावजूद 1977 40 प्रतिशत से कुछ ज्यादा वोट और 189 सीटें मिली थीं। जबकि 2024 के चुनावों की तुलना 1977 से हो भी नहीं सकती। कांग्रेस के ही आला नेता राजीव गांधी ने देश को इक्कीसवीं सदी में तरक्की के साथ आगे बढ़ाने का संदेश दिया था। इक्कीसवीं सदी में कूटनीतिक, आर्थिक और सामरिक मोर्चे पर देश काफी आगे बढ़ गया है। लेकिन कांग्रेस सौ सीटों का भी आंकड़ा नहीं छू पाई और उछल रही है। कांग्रेस से जुड़े आंकड़ों पर गौर करें तो पता चलेगा कि बुरे से बुरे दिनों में भी पार्टी सौ से ज्यादा संसदीय सीटें कब्जाती रही। 1996, 1998, 1999 और 2004 के चुनाव ऐसे रहे, जिनमें कांग्रेस दो सौ का आंकड़ा नहीं छू पाई, लेकिन सौ से नीचे भी नहीं गई। 1996 में 140 और 1998 में 141 सीटों पर ही सिमट गया था। पार्टी 1999 और 2004 के आम चुनावों में भी दो सौ की सीट संख्या को पार नहीं कर पाई। उसे क्रमशः 114 और 145 सीटें मिलीं। यह बात और है कि 2004 में बीजेपी उससे छह सीटें कम जीत सकी, इसलिए पार्टी को सरकार बनाने का मौका मिल गया। लेकिन अगले आम चुनाव में पार्टी ने ठीकठाक उछाल मारा और 206 सीटों पर पहुंच गई। तब से तीन चुनाव हो चुके हैं और वह सौ का आंकड़ा तक नहीं छू पाई है। चुनावी अभियान में जुबानी जंग होती रही है। लेकिन चुनाव बीतते ही उसे भुला दिया जाता है। लेकिन कांग्रेस की अकड़ देखिए। पार्टी अपने से करीब ढाई गुनी ज्यादा सीट जीतने वाली बीजेपी को नैतिक रूप से हारी हुई पार्टी बता रही है। जयराम रमेश कह चुके हैं कि पार्टी नैतिक और राजनीतिक रूप से चुनाव हार चुकी है। पार्टी की जुबानी खराश चुनाव बाद भी दूर होती नजर नहीं आ रही। नई सरकारें बनने के बाद विपक्ष की ओर से भी औपचारिक शुभकामना संदेश देने का चलन रहा है। लेकिन कांग्रेस की ओर से शुभकामनाएं तक नहीं भेजी गई हैं। विपक्षी दलों की ओर से शपथ समारोह में शामिल होने की परंपरा रही है। लेकिन कांग्रेस का आला नेतृत्व इससे दूर रहा। इससे संदेश यह गया कि पार्टी नेतृत्व अकड़ में है। सोशल मीडिया के दौर ने सामाजिक परिदृश्य को दो हिस्सों में साफ बांट दिया है। तटस्थता की अवधारणा कमजोर हुई है। सोशल मीडिया मंच पर वही सफल है, जो या तो पक्ष में है या विपक्ष में। दोनों पक्ष अपने-अपने तरीके से अपने लिए तर्क और कुतर्क गढ़ते रहते हैं। उनके समर्थकों को इससे लेना-देना नहीं कि तर्क है या कुतर्क है। इसी तरह राजनीति भी साफ खांचे में बंट गई है। राजनीति भी कुतर्क को तर्क के मुलम्मे में लपेटकर अपने उन्मादी समर्थकों को और ज्यादा उन्मादी बना रही है।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/धर्म समाज/देश
रायपुर, मंगलवार 02 जुलाई 2024
www.dvpnews.in
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

मुनि श्री संधानसागर जी महाराज ने किया केशलोंच

भोपाल (विश्व परिवार)। संत शिरोमणी आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के परस प्रभावक शिष्य मुनि श्री 108 संधान सागर जी महाराज ने मध्य - प्रदेश की राजधानी झिलो की नगरी भोपाल में उत्कृष्ट केशलोंच सम्पन्न किया। आपको बता दें मुनि श्री जी दीक्षा के बाद सदैव अपने गुरू विद्यासागर जी के साथ ही कैशलोंच करते थे। जो उत्कृष्ट रूप से दो माह का होता है। पूज्य श्री ने आचार्य भगवन का जो अन्तिम केशलोंच था उसी विधी अनुसार दो माह में अपने हाथों से सिद्धार्थ लेक सीरी से भोपाल मैं यह केशलोंच किया। यह भी ज्ञात हो कि एवं भीषण तपन के बाद भी मुनि श्री ने आसपास अपनी इस साधना को अक्षुण्ण बनाये रखा। पूज्य श्री की पारना हबीबगंज में निरंतराय सम्पन्न हुआ ऐसी कठिन तपश्चर्या के साधक पूज्य मुनि श्री गुणायतेन प्रणेता प्रमाणसागर जी के साथ साधनारत है।

बालक अभिषेक प्रशिक्षण अभियान प्रारंभ

जयपुर (विश्व परिवार)। श्री दिगंबर जैन मंदिर गायत्री नगर महारानी फार्म मन्दिर प्रबंध समिति के तत्वावधान में रविवार 30 जून 2024 प्रात: 6ः15 बजे मंदिर जी में बालक अभिषेक प्रशिक्षण अभियान पं. अजीत शास्त्री सांगानेर के निर्देशन एवं मंदिर प्रबंध समिति के अध्यक्ष कैलाश छाबड़ा की अध्यक्षता में प्रारंभ हुआ। मंदिर प्रबंध समिति के मंत्री राजेश बोहरा ने अवगत कराया कि मंदिरजी में बालक अभिषेक प्रशिक्षण अभियान प्रारंभ कराया गया है जिसके अंतर्गत 8 वर्ष से 15 वर्ष तक के बालकों को अभिषेक क्रियाएं सिखाई गयीं। इस अभियान के प्रारंभ में लगभग 15 बच्चे व उनके माता-पिता ने भाग लिया। युवा परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन के अनुसार इस अवसर पर प्रथम अभिषेक अशोक रावकां परिवार ने किया तथा सहयोग सबसे पहले मंदिर में बालक तविश जैन पाटनी पुत्र सुनील-शिल्पी जैन के आने पर सहयोग के रूप में प्रथम अभिषेक व शांति धारा की। सभी बालकों के मुकुट, तिलक व माला पहनाकर मंदिर प्रबंध समिति द्वारा स्वागत किया, सभी अभिषेक व शांति धारा करने वाले बालकों को श्रेष्ठी सारसमल पदमचंद झांझरी परिवार ने गिफ्ट देकर सम्मान किया। सभी मांगलिक क्रियाएं पं. अजीत शास्त्री के निर्देशन में हुई तथा कुशल संचालन मंदिर प्रबंध समिति के उपाध्यक्ष अरुण शाह द्वारा किया। इस अवसर पर समाज के गणमान्य महानुभावों के साथ काफी संख्या में महिला- पुरुष, बालक-बालिकायें आदि उपस्थित थे। **-उदयभान जैन**

आध्यात्मिक विशुद्ध ज्ञान वर्षायोग पोस्टर विमोचन

कोटा राजस्थान (विश्व परिवार)। श्रुत संवेगी मुनि 108 आदित्य सागर जी महाराज ससंघ का विहार कोटा चातुर्मास हेतु चल रहा है।आज सकल दिगंबर जैन समाज कोटा के पदाधिकारी एव श्री चंद्र प्रभु मंदिर समिति रिद्धि सिद्धि नगर के पदाधिकारियों नें प्रात: पांच बजे मुनि श्री का विहार पेच की बावड़ी तक करवाया। प्रवचन सभा में चातुर्मास के पोस्टर का विमोचन किया गया।सकल समाज अध्यक्ष विमल जी नान्ता नें बताया की मुनि श्री का भव्य मंगल प्रवेश 7 जुलाई प्रात: 7ः30 बजे माँ त्रिकुटा पाटन चौराहे से रिद्धि सिद्धि के लिये होगा। पाटन चौराहे से पूरा जुलुस भव्य शोभा यात्रा में परिवेर्तित हो जायेगा। सकल दिगंबर जैन समाज के पदाधिकारियों द्वारा मुनि श्री के पाद प्रक्षालन करके शोभायात्रा यात्रा का शुभारम्भ किया जायेगा। चातुर्मास समिति के महामंत्री पारस बज नें बताया की शोभायात्रा यात्रा में, 108 प्रवेश द्वार, पांच बैंड, तीन ऊँट गाडी, दो ट्रेक्टर पर झांकी, कई कारे और मोटरसाइकिल, सभी महिला मंडल, गुरुसेवा संघ परिवार, चंद्र प्रभु मंडल, सभी जैन सोशल ग्रुप्स, योवा प्रकोष्ठ, महिला प्रकोष्ठ, कई प्रशासनिक अधिकारी मुनि श्री की अगवानी करेंगे।

पढ़ाई की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान...पेज-08 का शेष

व्यावसायिक शिक्षा- बच्चों की स्किलिंग उद्योगों की जरूरत के मुताबिक हो : मुख्यमंत्री ने स्कूलों में व्यावसायिक पाठ्यक्रम को बेहतर गुणवत्ता के साथ संचालित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्रदेश के उद्योगों की जरूरत के मुताबिक बच्चों की स्किलिंग इस पाठ्यक्रम के माध्यम से हो, ताकि बारहवीं पास करने के बाद उन्हें वर्तमान और नए लगने वाले उद्योगों में आसानी से रोजगार के अवसर मिल सके। बच्चों को इसकी फिल्ड ट्रेनिंग भी दी जाए। गौरतलब है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के तहत कक्षा 6 से व्यावसायिक पाठ्यक्रम शुरू किए जाएंगे।

बैठक में जानकारी दी गई कि छत्तीसगढ़ में छात्र-शिक्षक अनुपात राष्ट्रीय स्तर से बेहतर है। राष्ट्रीय स्तर पर 26 बच्चों पर एक शिक्षक है, जबकि छत्तीसगढ़ में छात्र-शिक्षक अनुपात 21.84 है। बालवाड़ी के संबंध में जानकारी दी गई कि 5 से 6 आयु वर्ग के बच्चों के लिए प्रदेश में 9,438 बालवाड़ियां संचालित है। इस वर्ष 1132 बालवाड़ी प्रारंभ की जानी है। पीएम श्री योजना की समीक्षा के दौरान जानकारी दी गई कि प्रथम चरण में प्रदेश में यह योजना 211 स्कूलों में प्रारंभ की गई है। इस योजना के तहत प्रत्येक विकासखण्ड तथा नगरीय निकायों से एक-एक स्कूल का चयन कर उसे मॉडल स्कूल के रूप में विकसित किया जा रहा है। इस योजना में 198 स्कूलों में इस योजना को प्रारंभ करने के लिए प्रस्ताव भेजा गया है। स्कूलों में बेहतर अधोसंरचना के साथ किचन-गार्डन, एआई रोबोटिक्स, आईसीटी लैब की सुविधा के साथ ग्रीन स्कूल के रूप में विकसित किया जाएगा। बैठक में बताया गया कि इस बार अधिकांश स्कूलों में समर कैम्प का आयोजन किया गया, जिसमें बच्चों और शिक्षकों ने उत्साह से भाग लिया। विद्या समीक्षा केन्द्र के संबंध में बैठक में बताया गया कि स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा संचालित हितग्राहीमूलक योजनाओं की मॉनिटरिंग हेतु विद्या समीक्षा केन्द्र बनाया गया है। चरणबद्ध रूप से विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की उपस्थिति की ऑनलाईन मॉनिटरिंग, विद्यार्थियों के मूल्यांकन, मध्यान्ह भोजन योजना, शिक्षकों की पदोन्नति-स्थानांतरण, अवकाश आदि की मॉनिटरिंग की जाएगी। डाटा विश्लेषण हेतु सॉफ्टवेयर तैयार करने के लिए आईआईटी भिलाई के साथ एमओयू किया गया है। बैठक में प्रबंध संचालक समग्र शिक्षा श्री संजीव झा, संचालक लोक शिक्षण श्रीमती दिव्या उमेश मिश्रा, संचालक एससीईआरटी श्री राजेन्द्र कटारा, पाठ्यपुस्तक निगम के संचालक श्री कुलदीप शर्मा भी उपस्थित थे।

डोंगरगढ़ में मुनि संघ की गाजे-बाजे के साथ हुई भव्य अगवानी

डोंगरगढ़ (विश्व परिवार)। संत शिरोमणि 108 आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के शिष्य 108 मुनि श्री आगम सागर जी, 108 मुनि श्री पुनीत सागर महाराज जी एवं 105 एलक श्री धैर्य सागर जी महाराज जी कि मंगल अगवानी 30 जून 2024 को गाजे-बाजे के साथ रिम-झिम बारिश के बीच डोंगरगढ़ में प्रात: 8 बजे हुई। तत्पश्चात आदिनाथ भगवान का अभिषेक, शांतिधारा, आरती, आचार्य श्री कि संगीतमय पूजन हुई। आज मुनि संघ को श्री दिगम्बर जैन समाज डोंगरगढ़ के द्वारा चातुर्मास हेतु श्रीफल चढ़ाकर निवेदन किया गया। आज महाराज जी ससंघ कि आहार चर्या डोंगरगढ़ में हुई।

108 मुनि श्री पुनीत सागर महाराज जी ने कहा कि आज से लगभग 12 वर्ष पूर्व उन्होंने गुरु आज्ञा से 3 महाराजों का विहार चंद्रगिरी डोंगरगढ़ से महाराष्ट्र कि ओर हुआ था फिर उसके बाद मध्यप्रदेश आदि प्रान्तों का भ्रमण करके आज पुन: डोंगरगढ़ पधारे हैं। गुरु जी का सानिध्य हमें अल्प समय ही मिला। जब उनके अस्वस्थ्य होने कि खबर मिली तो हम लोगो ने चंद्रगिरी कि ओर विहार किया और जब सागर से दो गाँव पहले पहुंचे तो उनकी समाधी कि सूचना मिली जिसे सुनकर मन व्यथित हुआ आँखें द्रवित हो गयी और ऐसा लगा जैसे मै अनाथ हो गया हूँ। इस खबर को सुनकर विश्व के हर एक व्यक्ति कि आँखे द्रवित हुई होगी। ऐसी पवित्र आत्मा हमारे बीच नहीं रही उन्होंने उत्तम संलेखना कर अपना कल्याण किया अब हमें भी उनकी तरह ही उत्तम संलेखना करना है। 108 आचार्य श्री समय सागर महाराज जी उनके जैसे ही दिखते है, उनके जैसे ही चलते हैं और उनके जैसे ही रहते हैं। आज ही के दिन 30 जून को अजमेर में विद्याधर ने मुनि दीक्षा धारण कर विद्यासागर बने थे। उन्होंने जैसे ही अपने कपडे उतारना शुरू किया तो तीव्र वर्षा होना प्रारंभ हो गयी। वर्षा केवल उस नसिया के प्रांगण में ही हुई आस पास कही नहीं हुई जैसे वह वर्षा देवों ने कि हो। तिथि के अनुसार आषाढ़ शुक्ल पंचमी 11 जुलाई 2024 को यह दिन चंद्रगिरी में समाधी उपरांत यह पहला बड़ा कार्यक्रम 8 वर्ष से 16 वर्ष के बच्चों का उपनयन संस्कार होगा। जिसमे उनको जीवन में कैसे चलना चाहिये, धर्म का क्या महत्त्व है आदि महत्वपूर्ण जानकारी मिलेगी। उनको चांदी का ब्रासलेट दिया जायेगा जिसे वह अपने कलाई पर हमेशा पहनेंगे और जब भी कभी पाप कार्य करने कि सोचेंगे तो उनको यह ब्रासलेट याद दिलायेगा कि यह कार्य गलत है इसे नहीं करना चाहिये और हमेशा सद्कार्य करने कि प्रेरणा देगा। ऐसा ही उपनयन संस्कार कार्यक्रम आचार्य श्री के सानिध्य में 2 वर्ष पूर्व महाराष्ट्र के सिरपुर में हुआ था जहाँ उन्होंने स्वयं बच्चों के सर पर स्वस्तिक बनाकर किया था। महाराष्ट्र में एक परंपरा है जिसमे इस संस्कार के बाद बच्चे अपनी झोली फैलाकर उपस्थित लोगो के पास जाकर कहते हैं भिक्षामी देहि और उपस्थित लोग उनको इक्षानुसार पैसे, मिठाई आदि देकर उनका उत्साह वर्धन करते हैं। डोंगरगढ़ वालों का सौभाग्य है कि 2011 से लगातार अंतिम समय तक गुरु का सानिध्य आप लोगो को मिला। जिस प्रकार गुरु के चरणों में आने से सब दु:ख-दर्द दूर हो जाता था ऐसे ही उनकी समाधी स्थल में अच्छे मन से, अच्छे भाव से जाने से सब दु:ख-दर्द दूर हो जायेगा और सभी मनोकामना भी पूर्ण होगी।

108 मुनि श्री आगम सागर महाराज जी ने कहा कि हम डोंगरगढ़ 12 वर्ष बाद आये है परन्तु ऐसा लग रहा है कि कुछ दिन ही हुए है। डोंगरगढ़ कि कुछ महिलाये अपने धार्मिक कर्त्तव्यों का भली-भांति निर्वहन कर रही हैं जबकि पुरुष वर्ग में इसकी कमी है। उन्हें भी अपने धार्मिक कर्त्तव्यों का निर्वहन करना चाहिये। जहाँ धर्म का ह्रास हो वहाँ साधू का बोलना आवश्यक होता है। यहाँ से लगभग 8 किलोमीटर दूर कल आहार चर्या हुई मैंने देखा कि वहां केवल एक पुरुष था और बाकि महिलायें थी। इस बात का मुझे बहुत दु:ख हुआ, दु:ख मुझे इस बात का नहीं हुआ कि आप नहीं आये, दु:ख इस बात का हुआ कि वहाँ के लोग क्या सोच रहे होंगे कि यहाँ इनकी क्या वैल्यू है। मुझे पता है कि मेरे कर्म के अनुसार ही मुझे लोग मिलेंगे।

-निशु जैन

पैसा नरक की ओर ले जाएगा दान सदगति की ओर : मुनिश्री

सागर (विश्व परिवार)। आचार्य श्री विद्या सागर महाराज के 57 वें मुनि दीक्षा दिवस के अवसर पर भाग्योदय तीर्थ में मुनिश्री निष्पक्ष सागर महाराज ने कहा कि आचार्य श्री ने सागर वालों के लिए मानव चिकित्सा सर्वतोभद्र जिनालय दिया है। चिकित्सा 30 साल पहले शुरू हो गई थी और तीर्थ अब बन रहा है। पैसा का सदुपयोग करना है तो कर लो आपको दान देने पर सदगति मिलेगी, नहीं तो पैसा नरक की ओर ले जाएगा। मुनिश्री ने कहा आज गुरू उपकार दिवस है। उनकी दीक्षा के समय ही कह दिया था कि यह युवा ब्रह्मचारी मुनि दीक्षा के बाद आसमान की ऊंचाइयों को छुएगा। लेकिन मैं नहीं देख पाऊंगा क्योंकि वे ज्योतिषाचार्य थे। 10 वर्ष के दिगम्बरत्व के बाद आचार्य श्री विद्या सागर महाराज ने ऊंचाइयों को छूना शुरू कर दिया। गुरु के प्रति आचार्य श्री का समर्पण जबरदस्त था और हमेशा कहते थे कि गुरु उनके साथ हमेशा रहते है। भाग्योदय तीर्थ में जिनालय बनना सागर के लोगों का सपना है और परिकल्पना गुरुदेव की है इसलिए मुक्त हस्थ से दान दे। मुनिश्री निस्प्रह सागर, मुनिश्री निष्कंप सागर, मुनिश्री निष्काम सागर महाराज ने भी धर्मसभा को संबोधित किया। इस अवसर पर आचार्य भगवान की महापूजन हुई और महेश बिलहरा, आनंद स्टील, कुहू जैन दिल्ली, राजेंद्र केसली, मोनिका जैन दिल्ली ने शास्त्र भेंट किए। कार्यक्रम का संचालन मुकेश जैन ढाना ने किया। मुनि संघ भाग्योदय तीर्थ में विराजमान है।

भिलाई में आचार्य विद्यासागर जी महाराज पर विशाल संकलन की प्रदर्शनी, मोहला के तेजकरण को गुरु विद्या रत्न सम्मान

मोहला (विश्व परिवार)। रविवार को नेहरू नगर भिलाई में प्रदर्शनी लगा कर गुरु के महत्व के प्रति जागरूक कर चर्चा में आने वाले मोहला के तेजकरण जैन ने जैनाचार्य विद्यासागर के विराट व्यक्तित्व पर विशेष आवरण और महाप्रयाण के अखबारों की विशाल प्रदर्शनी लगाई।

आयोजक श्री दिगंबर जैन सभा नेहरू नगर द्वारा आचार्य विद्यासागर जी महाराज के दिनांक अनुसार 56 वे संयम वर्ष के अवसर पर यह एक दिवसीय प्रदर्शनी आयोजित की गई थी। जिसमे आचार्य विद्यासागर जी के महान् व्यक्तित्व और कृतित्व पर भारतीय डाक विभाग द्वारा अनुमोदित संपूर्ण भारत के विशेष आवरण जो किसी गैर राजनीतिज्ञ व्यक्ति पर इतनी बड़ी संख्या में पूरे भारत में पहली बार प्रकाशित हुए है। जिसे एक साथ देखने का अवसर दर्शको को मिला।

582 अखबारों का अंबार

तप और त्याग का तेजस्वी सूर्य 18 फरवरी की मध्य रात्रि में अस्त हो गया। पूरे भारत में इस शोक समाचार को अनेको अखबारों ने प्रकाशित किया। ऐसे 582 अखबारो को भी प्रदर्शनी में रखा गया जिसे देख दर्शक हतप्रभ रह गए।

वनांचल ग्राम मोहला के तेजकरण जैन ने गुरु और गाय के महत्व पर आधारित 44 वीं प्रस्तुति दी। जैन की कर्मठता की सराहना करते हुए दिगंबर जैन सभा भिलाई ने इस कार्य के लिए जैन को गुरु विद्या रत्न सम्मान से सम्मानित किया। प्रदर्शनी के आयोजन में श्री दानमल पोरवाल, मनीत जैन, रमेश नाहर, जितेंद्र जैन, क्षितिज जैन का विशेष योगदान रहा।

देश के सभी जैन तीर्थों के संरक्षण के लिए डिजिटाइजेशन GPS सर्वे GPS मैपिंग टैगिंग की केंद्रीय अल्पसंख्यक मंत्रालय से मांग

रायपुर (विश्व परिवार)। एनडीएमसी कन्वेंशन सेंटर, संसद मार्ग, नई दिल्ली में रविवार को वर्धमान परिवार सेवा ट्रस्ट द्वारा आयोजित कार्यक्रम में श्री विजय जैन जी द्वारा संकलित 2881 सचित्र जैन तीर्थों के संग्रह की पुस्तकों के सेट का विमोचन समारोह आयोजित हुआ।

सर्वोच्च जैन तीर्थ श्री सम्मेद शिखर जी की पवित्रता के लिए अनशन आंदोलन करने वाले और सभी प्राचीन जैन तीर्थों के संरक्षण हेतु सदैव प्रयत्नशील विश्व जैन संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संजय जैन ने कार्यक्रम में सहभागिता करते हुए केंद्रीय अल्पसंख्यक मंत्रालय, केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय और समस्त संस्थाओं से मांग करते हुए कहा कि देश के सभी जैन तीर्थों और धरोहर के संरक्षण के लिए उनका डिजिटाइजेशन त्नक्क सर्वे त्नक्क मैपिंग, टैगिंग कराया जाएं ताकि भविष्य में कोई भी अतिक्रमण ना कर सके। संजय जैन ने बताया कि केंद्रीय अल्पसंख्यक मंत्रालय द्वारा अल्पसंख्यक मुस्लिम समाज की सभी धार्मिक और सामाजिक स्थानों का त्नक्क सर्वे कराया जा चुका है लेकिन अभी तक अल्पसंख्यक जैन समाज के तीर्थों और धरोहरों का त्नक्क सर्वे आरंभ नहीं किया गया है जिसके कारण अनेकों धरोहरों पर अतिक्रमण किया जा चुका है। श्री संजय जैन ने नालंदा में प्रधानमंत्री और बिहार मुख्यमंत्री द्वारा यूनिवर्सिटी के उद्घाटन के अवसर पर नालंदा में प्राचीन समय में जैन धर्म के प्रचलन में होने और नालंदा विश्वविद्यालय में जैन शास्त्र पढ़ाने की जानकारी न देना भेदभाव का कारण समझ न आना बताया। **-आकाश जैन**

भगवान को आप अपना मानोगे तो ही वह आपके अपने होंगे : मुनि श्री वीरसागर जी महाराज

विदिशा (विश्व परिवार)। भगवान को आप अपना मानोगे तो ही वह आपके अपने होंगे, उपरोक्त उद्गार संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महामुनिराज के शिष्य निर्यापक श्रमण मुनि श्री वीरसागर जी महाराज ने श्री शांतिनाथ जिनालय में प्रात:कालीन धर्मसभा में व्यक्त किये मुनि श्री ने कहा कि जैसे सार्वजनिक सम्पत्ति हो, मंदिर हो, धर्मशाला हो को साफ सुथरा रखने की जिम्मेदारी को आप अपना नहीं मानते, वंही आपकी अपनी संपत्ति हो, आपका अपना घर हो, उसके रखरखाव की जिम्मेदारी को आप अपना समझते है, सरकारी संपत्ति और आपकी अपनी संपत्ति के प्रति जो भावों का अंतर होता है, वही परिणाम भगवान को सबका मानने में, और भगवान को अपना मानने में होता है, जब जब आपका मन भगवान को गुरु को मंदिर को सबका मानने का होगा, तब तब आपको भगवान में गुरु में अपनापन नजर ही नहीं आएगा, जिस दिन भगवान को, गुरु को अपना मानना शुरु कर दोगे तो वह आपके अपने हो जाऐंगे, और श्रद्धा से आपका मस्तक झुक जाएगा। उन्होंने उदाहरण देते हुये कहा कि जैसे आपका बच्चा यदि आप किसी पार्टी में जा रहे है और दस हजार की साड़ी पहने है और वह गंदगी कर देता है, तो आप उस तीन माह के बच्चे पर क्रोध नहीं करेंगे बल्कि सबसे पहले उसे साफ करेगे वंही यदि पड़ोसी का बच्चा यदि सामने से भी गंदगी करता है तो आपकी नाक सिकुड़ जाती है। **-अविनाश जैन**

भारतीय पोकर खिलाड़ी संतोष सुवर्णा ने इतिहास रचा, पोकर ब्रेसलेट के लिए अपनी दूसरी वर्ल्ड सीरीज और 45 करोड़ रुपए की इनामी राशि जीती

सुपर हाई रोलर इवेंट में संतोष की जीत ने उन्हें दुनिया की ऑल-टाइम मनी लिस्ट में टॉप 100 के बीच पहुँचा दिया है

संतोष की जीत को पोकरगो इंडिया के सोशल मीडिया हैंडल्स पर स्ट्रीम किया जाएगा

रायपुर (विश्व परिवार)। पोकर के भारतीय उस्ताद संतोष सुवर्णा ने वर्ल्ड सीरीज़ ऑफ पोकर (डब्ल्यूएसओपी) में अपना दूसरा ब्रेसलेट और ₹55 डब्ल्यूएसओपी2024 इवेंट में 45 करोड़ रुपए से ज्यादा की इनामी राशि जीतकर नया कीर्तिमान हासिल किया है। उन्होंने डब्ल्यूएसओपी में 3 दिन तक शानदार प्रदर्शन किया, जहाँ दुनिया के सर्वश्रेष्ठ पोकर प्लेयर्स के साथ उनका मुकाबला हुआ और आखिरकार वे इस प्रतिष्ठित इवेंट के विजेता बनकर उभरे।

संतोष सुवर्णा भारत में बेंगलुरु के रहने वाले एक सफल व्यवसायी हैं। पोकर के भारतीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सर्किट में वे एक जाने-माने खिलाड़ी भी हैं। शुरूआत में वे भारत में होने वाले टूर्नामेंट्स में मुकाबले किया करते थे, लेकिन फिर दुनिया के सबसे बड़े टूर्नामेंट्स और इवेंट्स में उन्होंने अपनी धाक जमाई।

वर्ल्ड सीरीज़ ऑफ पोकर में संतोष की जीत और इतिहास दर्ज करने पर बधाई देते हुए, बाज़ी गेम्स के संस्थापक एवं सीईओ नवकिरण सिंह ने कहा, मेरा मानना है कि भारतीय पोकर अपने सुनहरे दौर में जा रहा है और संतोष की जीत ने इस यकीन को पक्का कर दिया है। पिछले कुछ सालों में पोकर के प्रतिष्ठित वैश्विक टूर्नामेंट्स में हमने भारतीय खिलाड़ियों की संख्या में बढ़ोतरी देखी है। और इस तरह की जीत से साबित होता है कि भारत दुनिया के पोकर सर्किट्स पर अपना जलवा बिखेरने के लिए तैयार है। भारत को यह गौरव दिलाने के लिए संतोष को बहुत-बहुत बधाई।

संतोष की जीत को पोकरगो इंडिया की वेबसाइट और सोशल मीडिया हैंडल्स पर देखा जा सकता है। पोकरगो दुनिया का सबसे बड़ा प्लेटफॉर्म है, जहाँ पोकर से जुड़ा कॉन्टेंट मिलता है और इसकी आधिकारिक होस्टिंग भारत में पोकरबाज़ी के साथ मिलकर की जाती है। पोकरबाज़ी और पोकरगो इंडिया की भागीदारी से कॉन्टेंट भारतीय दर्शकों के लिए हिंदी जैसी क्षेत्रीय भाषाओं में भी मिल जाता है।

पोकर को दिमाग के एक खेल के तौर पर पहचाना जाता है और पोकरबाज़ी जैसे प्रमुख प्लेटफॉर्म्स भारत में पोकर का एक बहुआयामी इको सिस्टम बनाने की दिशा में काम कर रहे हैं। कंपनी ने पिछले कुछ वर्षों में उल्लेखनीय योगदान दिए हैं, जैसे कि कॉन्टेंट और एजुकेशनल मटेरियल रिलीज़ करना, ताकि प्लेयर्स को रणनीतिक तरीके से खेलने में मदद मिले। कंपनी भारत में पोकर टूर्नामेंट की संस्कृति को बढ़ावा भी दे रही है। इसने प्रमुख आईपी लॉन्च किए हैं, जैसे कि नेशनल पोकर सीरीज़ इंडिया। यह देश का सबसे प्रतिष्ठित पोकर इवेंट है। और जीओएटी (G.O.A.T) भारत में सबसे ज्यादा इनामी राशि वाला सबसे बड़ा टूर्नामेंट है।

वर्ल्ड सीरीज़ ऑफ पोकर में संतोष सुवर्णा की जीत भारत के खिलाड़ियों को प्रेरित एवं प्रोत्साहित करेगी, ताकि वे दुनिया में पोकर के नक्शे पर अपनी अलग पहचान बनाएँ।

भगवान महावीर फाउंडेशन ने लेखकों के लिए डॉ. नेमीचंद जैन मेमोरियल पुरस्कार के लिए नामांकन आमंत्रित किए हैं

रायपुर (विश्व परिवार)। यह पुरस्कार भगवान महावीर के उपदेशों पर किताबें लिखने वाले लेखकों को मान्यता देने के लिए स्थापित किया गया है। इसमें 2,00,000 रुपये का नकद पुरस्कार दिया जाता है।

चेन्नई स्थित भगवान महावीर फाउंडेशन, सामाजिक कल्याण के लिए प्रतिबद्ध व्यक्तियों और संस्थाओं को सम्मानित करने के लिए समर्पित एक प्रसिद्ध नॉन प्रॉफिट फाउंडेशन है। यह डॉ. नेमीचंद जैन मेमोरियल पुरस्कार के लिए नामांकन आमंत्रित कर रहा है। यह पुरस्कार उन लेखकों को मान्यता देता है, जिनकी किताबें हिंदी या अंग्रेजी में लिखी गई हैं और जो भगवान महावीर के शाश्वत ज्ञान को बढ़ावा देती हैं। इस पुरस्कार में 2,00,000 रुपये का नकद पुरस्कार, एक प्रशस्ति पत्र और एक स्मृति चिन्ह दिया जाता है।

फाउंडेशन ने 2024 में इस पुरस्कार की स्थापना की, जो भगवान महावीर के 2550वें निर्वाण महोत्सव के उपलक्ष्य में मनाया जाने वाला एक भव्य उत्सव है। इस महोत्सव में भगवान महावीर की शिक्षाओं पर प्रकाशित या अप्रकाशित उत्कृष्ट पुस्तकों को सम्मानित किया जाता है। नामांकित पुस्तकों की तीन प्रतियाँ (या अप्रकाशित पुस्तकों के मामले में पांडुलिपियाँ) 31 दिसंबर, 2024 तक फाउंडेशन को सियात हाउस, 961 पूनमल्ली हाई रोड, चौथी मंजिल, पुरासावलकम, चेन्नई-600084, तमिलनाडु में जमा करानी होंगी। इच्छुक लोग www.bmfawards.org पर जा सकते हैं या अधिक जानकारी और दिशा-निर्देशों के लिए nominations.bmfawards@gmail.com पर ईमेल कर सकते हैं।

पुरस्कार के बारे में बात करते हुए, भगवान महावीर फाउंडेशन के फाउंडर , श्री सुगल चंद जैन ने कहा कि भगवान महावीर की शिक्षाएँ आज की दुनिया में भी बहुत प्रासंगिक हैं।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर मंगलवार 02 जुलाई 2024

संक्षिप्त समाचार

बिजली गिरने से किसान की मौत, गांव में पसरा मातम

बलरामपुर(विश्व परिवार)। बलरामपुर रामानुजगंज शनिवार के शाम 4 बजे के करीब रामचंद्रपुर विकासखंड के ग्राम पीपरोल में बिजली गिरने से घर के अंदर ढाबे में बैठे किसान की मौत हो गई वही घर के बाहर किसान के बैल पर भी बिजली गिरा जिससे उसकी मौत हो गई। घटना से पूरे गांव में मातम पसर गया। घटना पर पुलिस ने मर्ग कायम कर शव का पोस्टमार्टम करा शव परिजनों सौप दिया। प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम पीपरोला के गम्हारपारा में रहने वाले किसान श्याम बिहारी गुप्ता पिता स्वर्गीय सुदेश्वर साहू उम्र 55 वर्ष शाम 4 के करीब अपने घर के अंदर ढाबे में थे। इसी दौरान बिजली के गिरने से उनकी स्थिति गंभीर हो गई जिसके बाद उन्हें रामानुजगंज 100 बिस्तर अस्पताल लाया गया। परंतु इसी दौरान उनकी मौत हो गई। बिजली गिरने से मृतक किसान श्याम बिहारी के घर के बाहर बैल की भी मौत हो गई। घटना की सूचना पर पूर्व जनपद उपाध्यक्ष संजय गुप्ता भी 100 बिस्तर अस्पताल पहुंचे उन्होंने घटना पर दुख व्यक्त किया।

मोटरसाइकल में अपने पिता के साथ बीएड परीक्षा दिलाने आ रही बच्ची को बस ने ठोका

गरियाबंद(विश्व परिवार)। रविवार को सुबह रायपुर से देवभोग जाने वाली शारदा बस की ठोकर से मोटरसाइकल चालक को गंभीर चोट लगी वही मोटरसाइकल के पीछे बैठी बच्ची के चेहरे में में चोटे आई है।घटना के विषय में मोटरसाइकल चालक के साथी ने बताया कि ग्राम कौन केरा निवासी योगेश्वर सेन अपनी बच्ची को गरियाबंद में आयोजित बीएड की परीक्षा में शामिल करने अपनी मोटरसाइकल से गरियाबंद आ रहा था।उसी दौरान रायपुर से देवभोग जाने वाली मां शारदा बस क्रमांक 5143 के द्वारा सामने चल रहे मोटरसाइकल को ठोक कर भाग दिया ,इस घटना में योगेश्वर का पैर में गंभीर चोट लगी साथ ही परीक्षा दिलाने आ रही मोटरसाइकल के पीछे बैठी बच्ची के चेहरे में चोटे आई है।

कन्हर नदी में युवक बहते-बहते बचा

रामानुजगंज(विश्व परिवार)। आज दोपहर के बाद कन्हर नदी उफान पर गया।जिसके बाद से एनीकट से लोगों का आना-जाना बंद हो गया इसी बीच शाम को 5:30 बजे के करीब एक युवक मस्ती में हाथ में मोबाइल देखते हुए एनीकट से जब झारखंड की ओर से छत्तीसगढ़ की ओर आने लगा तो दोनों ओर सैकड़ो लोगों की भीड़ लग गई सबकी सांस रुक गई। सैकड़ो लोग वीडियो बनाने लगे व चिल्लाने लगे सबको लगने लगा कि वह वह बह जायगा परंतु वह अपने मस्ती में मोबाइल देखते एनीकट पार कर गया। युवक रामचंद्रपुर क्षेत्र का था जो स्वजनों के साथ टेंपो से झारखंड के गोदरमाना बाजार करने आया था। टेंपो आमंत्रण धर्मशाला के सामने खड़ा करके गोदरमाना गया था। जब वह गोदरमाना एनीकट से हो कर गया था तब एनीकट के नीचे से पानी जा रहा था। परंतु दोपहर के बाद नदी में बाढ़ की स्थिति निर्मित हो गई और एनीकट की ऊपर से बनी जाने लगा। युवक ने बताया की गोदरमाना बाजार करने के दौरान काफी देर हो गया जिस कारण वह जल्दीबाजी में एनीकट से ही आ गया। कमर तक कहीं-कहीं पानी मोबाइल देखने की मस्ती में एनीकट कर गया पार..... जैसे ही युवक एनीकट से आना शुरू हुआ दोनों और देखते-देखते सैकड़ो लोगों की भीड़ उमड़ गई परंतु युवक सबसे बेखबर अपने मस्ती में मोबाइल देखते एनीकट पार कर गया। देखने वालों की सांसे रुकी..... युवक को एनीकट से आता देख दोनों और सैकड़ो लोगों की भीड़ लग गई सैकड़ो लोग वीडियो बनाने लगे वही दोनों ओर से लोग चिल्लाने लगे यहां तक की उसके स्वजन भी उसे देख तो सबकी सांस रुक गई जब वह एनीकट पार कर लिया तो सब ने राहत की सांस ली।

जैम एक्टिविटी वर्ल्ड ने खेल-खेल में बच्चों को बताई मनोरंजक बातें

धमतरी(विश्व परिवार)। कलेक्टर सुश्री नम्रता गांधी की पहल पर शिक्षा विभाग द्वारा बीते दिन कुरूद विकासखंड के ग्राम दरबा आदर्श प्राथमिक शाला के बच्चों को राजधानी रायपुर से आई संस्था जैम एक्टिविटी वर्ल्ड ने खेल-खेल में पढ़ाई के साथ-साथ अन्य मनोरंजक बातें बताई ।संस्था की प्रमुख सुश्री जयश्री ने बच्चों को जल चक्र को नए रूप में पपेट के माध्यम से बताया। जैम एक्टिविटी वर्ल्ड के सदस्य में बच्चों के साथ अनेक एक्टिवीटीयां आयोजित की। इस दौरान बच्चों को पेपर के माध्यम से पपेट बनाकर जल संरक्षण करने पानी की व्यर्थ ना बहाने आदि बातें सिखाई गई। कार्यक्रम के अंत में एक गीत पर संस्था के सदस्य और बच्चे में नृत्य पर झूमते नजर आए। स्कूल में पहली बार आयोजित ऐसे कार्यक्रम में शामिल होकर स्कूली बच्चे काफी उत्साहित नजर आए ।

बड़गई में जनसमस्या निवारण शिविर का आयोजन

भोंगापाल से बड़गई और कुलानार से बड़गई के बीच सड़क निर्माण की मिली स्वीकृति

कोंडागांव(विश्व परिवार)। नारायणपुर जिले की सीमा पर स्थित फरसगांव विकासखण्ड के दुरस्थ ग्राम बड़गई में शुक्रवार को जिलास्तरीय जनसमस्या निवारण शिविर का आयोजन किया गया। यहां 398 आवेदन प्राप्त हुए, जिनके त्वरित निराकरण के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए गए। इस अवसर पर विधायक, कलेक्टर, एसपी सहित जनप्रतिनिधियों ने वृक्षारोपण भी किया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के तौर पर क्षेत्रीय विधायक नीलकंठ टेकाम ने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की सरकार जनता की समस्याओं के निदान के लिए प्रतिबद्ध है तथा इसी कड़ी में जिला स्तरीय जनसमस्या निवारण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि जनता अपनी समस्याएं प्रशासन के समक्ष रख सके, इसके लिए अच्छा अवसर है। मुख्यमंत्री श्री साय स्वयं भी प्रति सप्ताह जनता की समस्याओं के समाधान के लिए जनदर्शन आयोजित कर रहे हैं। इसके साथ ही मेरे द्वारा भी प्रति दो सप्ताह में जनदर्शन किया जा रहा है। इसका उद्देश्य जनसमस्याओं का निराकरण है। श्री टेकाम ने कहा कि जनता की मांग पर आज इस शिविर में भोंगापाल से बड़गई कुलानार से बड़गई के बीच सड़क निर्माण की स्वीकृति प्रदान की गई है। इसके साथ ही बारदा नदी के किनारे विद्युतीकरण हेतु स्वीकृत कार्य पर भी तेजी से कार्य किया जाएगा। उन्होंने कहा कि बारदा और कोनगुड़ के बीच सीमा विवाद तथा दुगली में भूमि संबंधी विवाद का भी शीघ्रता से समाधान किया जाएगा।। उन्होंने इस अवसर पर लोगों को अधिक से अधिक वृक्षारोपण करने के साथ ही वृक्षों की रक्षा करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि यह अंचल कुछ वर्षों पूर्व अतिसंवेदनशील माना जाता था, किन्तु कुछ ही समय में इस क्षेत्र में बहुत बदलाव दिख रहा है। यह क्षेत्र अब अच्छी कृषि के लिए जाना जाता है। उन्होंने इस क्षेत्र को ऐतिहासिक बताया और कहा कि यह क्षेत्र अब तेजी से आगे बढ़ेगा। कलेक्टर कुणाल दुदावत ने इस अवसर पर कहा कि मुख्यमंत्री श्री साय के निर्देश पर जिला प्रशासन द्वारा सुशासन की ओर कदम बढ़ाया जा रहा है। इसी कड़ी में दुरस्थ अंचलों में जिलास्तरीय जनसमस्या निवारण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें सभी जिलास्तरीय अधिकारी उपस्थित रहते हैं। उन्होंने कहा कि जनता द्वारा दिए गए आवेदनों के निराकरण पर स्वयं के द्वारा निगरानी की जा रही है, जिससे लोगों की समस्याओं का समाधान हो। उन्होंने कहा कि नए शैक्षणिक सत्र के आरंभ के साथ ही शालाएं खुल गई हैं। शालाओं में शिक्षा के साथ ही पोषक आहार भी प्रदाय किया जाएगा, जिससे कोंडागांव जिले में सभी पोषित एवं स्वस्थ हों। उन्होंने सभी बच्चों को आयु अनुसार अवश्य स्कूल एवं आंगनबाड़ी केन्द्र भेजने की अपील की।

आंगनबाड़ी के संचालन को लेकर महिला व बाल विकास विभाग का किया गया समीक्षा

बीजापुर(विश्व परिवार)। कलेक्टर अनुराग पाण्डेय द्वारा महिला एवं बाल विकास विभाग का समीक्षा मिंगाचल सभा कक्ष में किया गया इस दौरान जिले में जिले में कुपोषण की दर में व्यापक कमी के लिए प्रयास पर चर्चा किया गया व नियद नेल्लानार क्षेत्र अंतर्गत आंगनबाड़ी के संचालन एवं विभाग द्वारा प्रदाय दी जाने वाली सेवाओं के संबंध में विस्तृत निर्देश देते हुए कहा गया कि ऐसे सभी क्षेत्र जहां पर वर्तमान में आंगनबाड़ी केन्द्र संचालित नही है, उन सभी स्थानों पर बेस लाईन सर्वे कर बच्चों एवं गर्भवती महिलाओं को पोषण आहार से लाभांवित किया जाना है। इन क्षेत्रों में बच्चों व महिलाओं के पोषण पर विशेष ध्यान देते हुए इनके व्यवहार परिवर्तन की दिशा में कार्य करना है, शासन की योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ दिलाया जाना है, कुपोषित बच्चों का चिन्हांकन सही रूप से हो इसका सतत् निगरानी करे, आंगनवाडी केन्द्र पर दी जाने वाली पोषण आहार सही रूप से मिलना चाहिए साथ ही स्वच्छता का विशेष ध्यान कार्यकर्ता एवं सहायिका रखे। प्रत्येक 15 दिवस में आंगनबाड़ी केन्द्र के समस्त बच्चों का वजन, उचाई का माप हो और गंभीर कुपोषित बच्चे, को पोषण पुनर्वास भर्ती किया जाना है एवं नियमित उन बच्चों के गृह भ्रमण कर परिवार के सदस्यों को परामर्श दिया जाना है ऐसे कार्यकर्ता जो कि आंगनबाड़ी केन्द्र समय पर नही जाते है, उन पर कार्यवाही के लिए निर्देशित किया गया है, सेक्टर पर्यवेक्षक को नियमित रूप से प्रत्येक केन्द्रो का निरीक्षण करने के लिए निर्देशित किया गया। स्वास्थ्य विभाग से समन्वय कर नियमित रूप से गर्भवती महिलाओं को स्वास्थ्य परीक्षण एवं बच्चों का टीकाकरण, संस्थागत प्रसव के लिए निर्देशित किया गया है।

जिले में प्री बीएड और प्री डीएलएड परीक्षा संपन्न

गरियाबंद(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ व्यावसायिक परीक्षा मण्डल रायपुर द्वारा आयोजित प्री बीएड और प्री डीएलएड की परीक्षा आज जिले में शांतिपूर्वक सम्पन्न हो गया।कलेक्टर दीपक कुमार अग्रवाल ने आज प्रथम पाली के परीक्षा में शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गरियाबंद, शासकीय बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय और शासकीय वीर सुरेन्द्र साय महाविद्यालय परीक्षा केंद्रों का आकस्मिक निरीक्षण कर परीक्षा संचालन का जायजा लिया। निरीक्षण के समय सभी परीक्षा केंद्रों में सुचारू रूप से परीक्षा संचालित किया जा रहा था। इस अवसर पर परीक्षा के नोडल अधिकारी संयुक्त कलेक्टर राकेश कुमार गोलछा भी मौजूद रहे। इस दौरान समन्वयक एवं शासकीय वीर सुरेन्द्र साय महाविद्यालय गरियाबंद के प्राचार्य डॉ आर के तलवरे ने जानकारी देते हुए बताया कि जिले में संचालित परीक्षा केंद्र में परीक्षार्थियों के बैठने की सुचारू व्यवस्था एवं अन्य प्रशासनिक व्यवस्था की गई थी। उल्लेखनीय है कि जिले में दो पाली में परीक्षा का आयोजन किया गया। प्रथम पाली में प्री बीएड परीक्षा के लिए 19 परीक्षा केन्द्र एवं द्वितीय पाली में प्री डीएड परीक्षा के लिए 26 परीक्षा केंद्र बनाए गए थे। प्रथम पाली में प्री बीएड परीक्षा सुबह 10 बजे से दोपहर 12:15 तक आयोजित की गई।

जल जीवन मिशन को पीएचई के अफसरों-ठेकेदारों ने बनाया भ्रष्टाचार मिशन...

बीजापुर में पीएम मोदी के ड्रीम प्रोजेक्ट में भ्रष्टाचार की सेंध लग चुकी है

बीजापुर(विश्व परिवार)। केंद्र सरकार की महत्वपूर्ण योजना जल जीवन मिशन को पीएचई के अफसरों ने भ्रष्टाचार का मिशन बनाकर रख दिया। ठेकेदारों के साथ सांठगांठ कर करोड़ों के काम रेवड़ी की तरह बांट दिया। नतीजा करोड़ों के कार्यों में जमकर भ्रष्टाचार किया गया और जेब भरे होने से अधिकारी घृतराष्ट्र बने बैठे रहे। जिससे करोड़ों का काम होने के बाद भी आज भी गांवों में ग्रामीणों को पानी नहीं मिल पा रहा है।टंकी और नल कनेक्शन शोपीस बनकर रह गए हैं। यहां बताना होगा कि जिले के लगभग 1570 गांवों में हर घर जल के नारों के साथ पीएम मोदी की मंशानुरूप ग्रामीणों को उनके घरों तक घरेलू नल कनेक्शन के माध्यम से जलापूर्ति करने जल जीवन मिशन की शुरुआत की गई है।ताकि माताओं बहनों को पेयजल के लिए मजबूरन हैण्डपम्प ,तालाब ,कुंआ ,नहर व अन्य जल स्त्रोतों तक जाने मशक्कत न करनी पड़े। सुरक्षित व गौरवपूर्ण जीवन जी सकें।लेकिन योजना में तमाम दिक्कतों की वजह से इसकी मियाद बढ़ती रही।अब छत्तीसगढ़ को जल जीवन मिशन की योजना दिसंबर 2024 तक पूर्ण करने का लक्ष्य दिया गया है।लेकिन शुरुआती दौर से ही भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ चुकी जल जीवन मिशन की योजना छत्तीसगढ़ में सिसक रही है। बीजापुर में पीएम मोदी की ड्रीम प्रोजेक्ट जल जीवन मिशन को भ्रष्टाचार की सेंध लग चुकी है केंद्र सरकार की महत्वकांक्षी योजना छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले के गांवों तक आकर दम तोड़ रही है।

भोपालपटनम नगर पंचायत क्षेत्र में जगह-जगह रेत का अवैध भंडारण...

भोपालपटनम(विश्व परिवार)। बीजापुर जिले के भोपालपटनम नगर पंचायत क्षेत्र में इन दिनों जगह-जगह अवैध रेत भंडारण की घटनाओं पर हंगामा मचा हुआ है। नगर के ह्रदय स्थल कृष्णा पामभोई क्लब प्रांगण एवं नगर पंचायत कार्यालय के पास अवैध रेत का भंडारण किया जा रहा है, जो स्थानीय जनता और अधिकारियों के बीच चिंता का विषय बन गया है। बिना रॉयल्टी और अनुमति के हो रहे इस अवैध भंडारण पर वरिष्ठ पत्रकार एवं समाजसेवी अफजल खान ने कड़ी आपत्ति जताई है। उन्होंने कहा कि नगर के महत्वपूर्ण स्थलों पर हो रहे इस अवैध भंडारण के खिलाफ तुरंत कड़ी कार्यवाही की जानी चाहिए। खान ने मांग की कि अवैध तरीके से रेत परिवहन में संलिप्त वाहनों को चिन्हित कर उन्हें राजसात किया जाना चाहिए। अफजल खान ने बताया कि इंद्रावती नदी के तिमेड घाट से रेत माफिया अवैध तरीके से रेत का उत्खनन कर भोपालपटनम नगर में भंडारण कर रहे हैं। यह गतिविधि बिना रॉयल्टी और अनुमति के हो रही है, जिससे कई संदेह उत्पन्न हो रहे हैं। खान ने बताया कि रेत माफिया शासन को लाखों रुपयों का राजस्व नुकसान पहुंचा रहे हैं और खनिज विभाग इस पर चुप्पी साधे हुए है, जो समझ से परे है। खान ने यह भी कहा कि भोपालपटनम में रेत माफिया और ठेकेदारों की मिलीभगत से अवैध रेत का व्यवसाय धड़ल्ले से चल रहा है। उन्होंने जोर देकर कहा कि इस अवैध व्यवसाय पर तत्काल रोक लगाई जाए और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाए। भोपालपटनम नगर पंचायत क्षेत्र में हो रहे अवैध रेत भंडारण पर अफजल खान की आपत्ति ने एक गंभीर मुद्दे को उजागर किया है। इस पर त्वरित और सख्त कार्यवाही की जरूरत है ताकि नगर में कानून व्यवस्था बनी रहे और शासन को राजस्व की हानि न हो।

कलेक्टर ने भोपालपटनम ब्लॉक का किया सघन दौरा

बीजापुर(विश्व परिवार)। कलेक्टर अनुराग पाण्डेय ने भोपालपटनम ब्लॉक का औचक निरीक्षण कर विभिन्न मूलभूत सुविधाओं की जानकारी ली तथा विकास कार्यों में प्रगति लाने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस दौरान सर्वप्रथम देशी-विदेशी मदिरा दुकान का औचक निरीक्षण कर दुकान खुलने के निर्धारित समय पर ही मदिरा विक्रय करने निर्धारित मात्रा से अधिक का मदिरा विक्रय नहीं करने तथा निर्धारित राशि से अधिक मूल्य पर मदिरा विक्रय नहीं करने के सख्त हिदायत दी। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र के अवलोकन के दौरान अस्पताल में मरीजों को मिलने वाली सुविधाएं, स्वास्थ्य सेवाओं, अस्पताल परिसर की स्वच्छता संबंधी आवश्यक निर्देश दिए। वहीं अस्पताल परिसर में उपलब्ध पुराने जनरेटर का अपलेखन कर नए जनरेटर स्थापित करने के निर्देश दिए। भ्रमण के दौरान सहकारी सेवा समिति में खाद-बीज का वितरण किया जा रहा था। कलेक्टर ने खाद-बीज का वितरण समुचित मात्रा में समय-सीमा पर किसानों को उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। तत्पश्चात भोपालपटनम के तारलागुड़ा के कोत्तूर पंचायत में तेन्दूपत्ता संग्राहकों को पारिश्रमिक राशि का नगद भुगतान कार्यक्रम में शामिल होकर संग्राहकों से आवश्यक चर्चा करते हुए शासन की विभिन्न योजनाओं से अवगत कराते हुए शतप्रतिशत योजनाओं का लाभ लेने प्रोत्साहित किया गया एवं शासन की योजनाओं से लाभान्वित होने के लिए बैंक खाता, आधार कार्ड इत्यादि की उपयोगिता को विस्तृत रूप से बताया गया। भद्रकाली में 133 केव्ही सब स्टेशन निर्माण कार्य समय-सीमा में पूर्ण करने के निर्देश दिए अनावश्यक विलंब पर ठेकेदार के ऊपर सख्त कार्रवाई की जाएगी। कलेक्टर पाण्डेय ने इस दौरान इन्द्रावती नदी घाट का अवलोकन घाट में साथ-सफाई एवं स्वच्छता के लिए निर्देश दिए। आम नागरिकों के मांग पर इन्द्रावती नदी पर आरती कार्यक्रम के आयोजन पर सकारात्मक चर्चा भी किया। बरसात के मौसम को मद्देनजर रखते हुए इन्द्रावती नदी के बहाव पर सतत निगरानी रखने के निर्देश दिए। वहीं नदी के इस पार सामुदायिक भवन के समीप रेत का वृहद स्तर पर भंडारण का अवलोकन करते हुए मौके पर उपस्थित राजस्व अधिकारी को जांच के निर्देश दिए। भ्रमण के दरमियान एक्सिस बैंक शाखा का औचक निरीक्षण करते हुए स्व सहायता समूह, केसीसी एवं अन्य व्यक्तिमूलक हितग्राहीमूलक प्रकरणों का समय-सीमा में निराकरण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। इस दौरान डिप्टी कलेक्टर दिलीप उईके, एसडीएम भोपालपटनम वाय के नाग, सीईओ जनपद पंचायत सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

खेल-व्यापार

रायपुर मंगलवार 02 जुलाई 2024

व्यापार समाचार

मानसून में फैशन के लिए नायलॉन और पॉलिएस्टर का इस्तेमाल करती हैं विदिशा श्रीवास्तव

मुंबई(एजेंसी)। टीवी के पॉपुलर शो 'भाबीजी घर पर हैं' में गोरी मेम का रोल अदा करने वाली विदिशा श्रीवास्तव ने मानसून फैशन ट्रेंड्स पर बात की। उन्होंने कहा कि वह मानसून में नायलॉन और पॉलिएस्टर जैसी सिंथेटिक मटेरियल पहनना पसंद करती हैं, क्योंकि वे मॉइश्चर-रेजिस्टेंस है और जल्दी सूख जाते हैं। मानसून फैशन का मतलब है स्टाइलिश और कंफर्टेबल रहते हुए मौसम को एन्जॉय करना। विदिशा सिटकॉम 'भाबीजी घर पर हैं' में अनीता भाभी का किरदार निभा रही हैं। उन्होंने कहा, बारिश के मौसम में, आपको स्टाइल से समझौता करने की जरूरत नहीं है। जब बारिश शुरू होती है, तो मैं नायलॉन और पॉलिएस्टर जैसे सिंथेटिक कपड़े पहनना पसंद करती हूं, जो मॉइश्चर को सोख लेते हैं और जल्दी सूख जाते हैं। उन्होंने कहा, मैं बारिश में हैवी कॉटन और वूलन कपड़ों को पहनने से बचती हूं, क्योंकि इन्हें सूखने में ज्यादा समय लगता हैं। मुझे ज्यादा आकर्षक दिखने के लिए ब्राइट और बोल्ड प्रिंट वाले कपड़े पहनना पसंद है। प्लास्टिक जूलरी इस मौसम में फैशनेबल बने रहने के लिए एक बढ़िया ऑप्शन है। विदिशा ने कहा, मेरा पसंदीदा लुक एक स्टाइलिश वाटरप्रूफ जैकेट है, जिसे कलरफुल वाटरप्रूफ फुटवियर के साथ पेयर करना, और अपने आउटफिट में स्टाइल जोड़ने के लिए एक ट्रेंडी, कॉम्पैक्ट छाता ले जाना न भूलें। वर्कफ्रंट की बात करें तो, विदिशा ने 2007 में एसपी एंटरटेनमेंट की तेलुगु फिल्म 'मां इद्दारी मध्य' से एक्टिंग की शुरुआत की थी। उन्होंने 'अला', 'प्रेम', 'अथिली सत्तीबाबू एलकेजी' जैसे अन्य तेलुगु प्रोजेक्ट्स में भी काम किया। वह कन्नड़ फिल्म 'नलि नलियुथा' का हिस्सा रहीं। तमिल फिल्मों में उन्होंने 'कथावरायण' और मलयालम फिल्म 'लकी जोकर्स' में भी काम किया है। छोटे पर्दे की बात करें तो उन्होंने टीवी शो 'ये है मोहब्बतें' से शुरुआत की थी। इसके बाद, वह 'मेरी गुड़िया', 'श्रीमद् भागवत महापुराण', 'दुर्गा-माता की छाया' और 'काशीबाई बाजीराव बल्लाल' जैसे टीवी शो में नजर आईं। विदिशा अपनी पर्सनल लाइफ को सीक्रेट रखती हैं। उन्होंने साल 2018 में सायक पॉल संग बनारस में सात फेरे लिए। शादी के पांच साल बाद, पिछले साल जुलाई में कपल ने अपने पहले बच्चे का स्वागत किया। 'भाबीजी घर पर हैं' एंड टीवी पर प्रसारित होता है।

'नेक्स्ट्रा बाय एयरटेल', 'आरई100' में शामिल हुई, 100त्न नवीकरणीय ऊर्जा डेटा केंद्र कंपनी बनने के लिए प्रतिबद्ध है

गुरुग्राम (भारत): भारत की अग्रणी डेटा सेंटर कंपनियों में से एक, 'नेक्स्ट्रा बाय एयरटेल', 'आरई100' पहल में शामिल हो गई है - जो कार्बन डिस्क्लोज़र प्रोजेक्ट (सीडीपी) के साथ साझेदारी में क्लाइमेट ग्रुप के नेतृत्व वाली एक प्रमुख वैश्विक पहल है — और इसने बिजली की 100त्न आपूर्ति नवीकरणीय स्रोतों से प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त की है। इसके साथ, नेक्स्ट्रा भारत का एकमात्र डेटा सेंटर संगठन बन गया है, जिसने 'आरई100' के समक्ष पर्यावरणीय सस्टेनिबिलिटी के प्रति अपनी प्रतिबद्धता और 2031 तक कार्बन उत्सर्जन के मामले में नेट-जीरो बनने का लक्ष्य प्राप्त करने का वचन दिया, और 'आरई100' को ऐसा वचन देने वाली 14वीं भारतीय कंपनी बनने की उपलब्धि हासिल की है। कंपनी ने अपने कार्य संचालनों में नवीकरणीय ऊर्जा को अपनाए जाने में काफी वृद्धि की है और अब तक 422,000 मेगावॉट नवीकरणीय ऊर्जा के लिए अनुबंध किया है। वित्त वर्ष 2023-24 में, नेक्स्ट्रा ने पावर परचेज एग्रीमेंट्स और कैप्टिव सोलर रूफटॉप प्लांट्स के माध्यम से नवीकरणीय स्रोतों से ऊर्जा की आपूर्ति प्राप्त करके 9 156,595 tCO_2e उत्सर्जन करने से खुद को बचाया। आशीष अरोड़ा, सीईओ — 'नेक्स्ट्रा बाय एयरटेल' ने कहा, हम पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार ब्रांड हैं और स्वच्छ ऊर्जा विकल्पों को तेजी से अपना रहे हैं। हम 2031 तक कार्बन उत्सर्जन के मामले में नेट-जीरो बनने के लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में मजबूत कदम उठाते हुए आगे बढ़ रहे हैं। और 100त्न बिजली की आपूर्ति नवीकरणीय स्रोतों से प्राप्त करने की प्रतिबद्धता के साथ 'आरई100' पहल का हिस्सा बनकर गर्व अनुभव कर रहे हैं। सिरेम्स चेंज — इंडिया के निदेशक, अतुल मुदलियार ने कहा, डेटा सेंटर बहुत अधिक ऊर्जा का उपयोग करते हैं, फिर भी यह बात अनदेखी की जाती है कि कार्बन उत्सर्जन के मामले में इनका पर्यावरण पर कितना नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। नेक्स्ट्रा को अपने कार्बन फुटप्रिंट कम करने के लिए सर्वोत्तम प्रथाएं अपनाने के लिए आगे बढ़कर जिम्मेदारी भरे कदम उठाते हुए देखना सभी के लिए बहुत प्रेरणादायक है। अपने परिचालनों के लिए ऊर्जा की आपूर्ति नवीकरणीय स्रोतों से प्राप्त करने की नेक्स्ट्रा की पहल, डेटा सेंटर कंपनियों के लिए स्वच्छ भविष्य की दिशा में तेजी से प्रगति करने के लिए उपयुक्त उदाहरण होगी। 'नेक्स्ट्रा बाय एयरटेल' को 'आरई100' में स्वागत करते हुए हमें बहुत खुशी हो रही है।

दुनिया पर मंडरा रहा है बड़े वित्तीय संकट का खतरा, डॉलर के ढह जाने का अनुमान

नई दिल्ली (एजेंसी)। अर्थशास्त्री और लेखक शनमुगनाथन. एन ने दावा किया है कि दुनिया पर एक बहुत बड़े वित्तीय संकट का खतरा मंडरा रहा है। यह खतरा 2007-09 के दौरान के हाउसिंग बबल और उस कारण उत्पन्न हुए वित्तीय संकट से भी कई गुना ज्यादा बड़ा होगा। अपने आंकड़ों और शोध परिणामों के आधार पर उन्होंने कहा अमेरिकी डॉलर की बुनियाद भुरभूरी है और कभी भी ढह सकती है। शनमुगनाथन ने दुनिया को फिर से स्वर्ण मानक (गोल्ड स्टैंडर्ड) को अपाने की सलाह दी है। पब्लिक पॉलिसी थिंकटैंक सेंटर फॉर सिविल सोसायटी द्वारा कॉस्टिट्यूशन क्लब में आयोजित पुस्तक आरआईपी यूएसडी: 1971-202ङ्क.. एंड द वे फॉरवर्ड के विमोचन के दौरान किताब के लेखक शनमुगनाथन एन ने कहा कि अमेरिकी सरकार एक बबल पर पर्दा डालने के लिए लगातार नई मुद्रा छापकर एक के बाद एक कई बड़े बबल तैयार करती जा रही है और इस ओर किसी का ध्यान नहीं जा रहा है। शनमुगनाथन ने लोगों से भी करेंसी की बजाए अधिक से अधिक मात्रा में सोना रखने की सलाह दी। विमोचन के दौरान उपस्थित लोगों को वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से संबोधित करते हुए स्विश निवेशक और ग्लूम, बूम एंड डूम के संपादक डा. मार्क फेबर ने कहा कि इस बात पर हम सभी सहमत है कि हम एक बड़े आर्थिक संकट की ओर बढ़ रहे हैं।

विराट कोहली और रोहित शर्मा ने किया संन्यास का ऐलान, टी20 फॉर्मेट में अब टीम इंडिया के लिए नहीं खेलेंगे दोनों खिलाड़ी

नई दिल्ली(एजेंसी)। टी20 वर्ल्ड कप के फाइनल में टीम इंडिया ने इतिहास रच दिया। फाइनल मुकाबले में टीम इंडिया ने साउथ अफ्रीका को 7 रनों से हराया और इसके साथ ही उसके दिग्गज कप्तान रोहित शर्मा ने संन्यास का ऐलान भी कर दिया। इससे पहले विराट कोहली भी ञ20 इंटरनेशनल से संन्यास का ऐलान कर चुके हैं। साउथ अफ्रीका के खिलाफ खिताबी जीत हासिल करने के बाद रोहित शर्मा ने सभी के सामने ऐलान किया कि वो अब टीम इंडिया के टी20 फॉर्मेट में नहीं खेलेंगे। रोहित ने 2007 के टी20 वर्ल्ड कप में ही इस फॉर्मेट में टीम इंडिया के लिए अपना डेब्यू किया था और तब भारत को पहले इवेंट में ही चैंपियन बनाने में अहम भूमिका निभाई थी। अब अपने 9वें टी20 वर्ल्ड कप में रोहित ने कप्तानी करते हुए टीम इंडिया को 17 साल बाद दूसरी बार यही खिताब दिलाया और इस टूर्नामेंट के फाइनल के साथ ही फॉर्मेट को हमेशा के लिए अलविदा कह दिया। टीम इंडिया की खिताबी जीत के बाद रोहित शर्मा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में ये ऐलान किया। उन्होंने कहा कि ये टीम इंडिया के लिए उनका आखिरी टी20 मैच था और इससे संन्यास लेने का इससे शानदार वक्त और तरीका कोई दूसरा नहीं हो सकता था। भारतीय कप्तान ने कहा कि वो इस टूर्नामेंट को जीतने के लिए बहुत ही बेसब्र थे और आखिरकार वो रुकावट पार करने में सफल हो ही गए, जिस पर पिछले 10 सालों से अटक रहे थे। रोहित ने सिर्फ अपनी कप्तानी में टीम इंडिया को चैंपियन ही नहीं बनाया, बल्कि खुद अपनी विस्फोटक बल्लेबाजी से इसमें अहम भूमिका निभाई। टूर्नामेंट के फाइनल में भले ही वो सिर्फ 9 रन बनाकर आउट हो गए लेकिन भारतीय कप्तान ने इससे पहले सेमीफाइनल में इंग्लैंड के खिलाफ और उससे पहले सुपर-8 के आखिरी मैच में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ धमाकेदार अर्धशतक लगाए थे। रोहित ने पूरे वर्ल्ड कप की 8 पारियों में भारत के लिए सबसे ज्यादा 257 रन बनाए, जिसमें 3 अर्धशतक शामिल थे। इस फॉर्मेट में रोहित का सफर शानदार रहा। उन्होंने अपने करियर का अंत टी20 इंटरनेशनल में सबसे ज्यादा रन, सबसे ज्यादा शतक और सबसे ज्यादा छक्के जमाने वाले बल्लेबाज के रूप में किया।

रोहित शर्मा ने बनाया वर्ल्ड रिकॉर्ड, आज तक कोई भी देश ऐसा काम नहीं कर पाया

नई दिल्ली(एजेंसी)। रोहित शर्मा की अगुवाई में टीम इंडिया ने टी20 वर्ल्ड कप 2024 का खिताब अपने नाम किया। फाइनल मैच में भारत ने साउथ अफ्रीका को 7 रनों से हरा करोड़ों दिलों पर अपना कब्जा किया। भारत ने 17 सालों के लंबे इंतजार के बाद टी20 वर्ल्ड कप का खिताब अपने नाम किया है। को 7 रनों से हरा करोड़ों दिलों पर अपना कब्जा किया। भारत ने 17 सालों के लंबे इंतजार के बाद टी20 वर्ल्ड कप का खिताब अपने नाम किया है। बता दें कि इससे पहले महेंद्र सिंह धोनी की कप्तानी में भारतीय टीम टी20 वर्ल्ड कप 2007 की ट्रॉफी जीती थी। अब टीम इंडिया एख बार फिर से रच रोहित शर्मा की कप्तानी ऐताहासिक हो गई। फाइनल मैच की बात करें तो टीम इंडिया के कप्तान रोहित शर्मा ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। बैटिंग में टीम इंडिया ने 7 विकेट खोकर 176 रन बनाए। 177 रनों के टारगेट का पीछा करते साउथ अफ्रीका की टीम मैदान में उतरी और 20 ओवर में 8 विकेट खोकर 169 रन ही बना सकी। भारत के लिए जसप्रीत बुमराह और हार्दिक पांड्या ने अपनी शानदार गेंदबाजी कर भारत को जीत की ओर धकेला। बैटिंग में विराट कोहली ने 76 रन और अक्षर पटेल ने 47 रनों की शानदार पारी खेली और लिए विराट कोहली को प्लेयर ऑफ द मैच क्रिकेट में चैंपियन बनी है। टी20 वर्ल्ड कप 2024 में भारतीय टीम ने कमाल का प्रदर्शन किया बता दें कि इस पूरे टूर्नामेंट में कोई भी विरोधी टीम भारतीय टीम को हरा नहीं पाई। भारत ने इंग्लैंड, साउथ अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया जैसी मजबूत टीमों को हरा कर अस ट्रापी पर अपना कब्जा किया। टीम इंडिया ने टी20 वर्ल्ड कप 2024 में लगातार 8 मुकाबले जीते। भारत पहला ऐसा देश बन गया है, जिसे टी20 वर्ल्ड कप के किसी एडिशन में बिना मैच गंवाए टी20 वर्ल्ड कप की ट्रॉफी अपने नाम की। इससे पहले ऐसा इतिहास रचने वाली कोई टीम नहीं है। वहीं अब ऐसा कीर्तिमान का अवॉर्ड दिया गया है।

विश्व विजेता बनने के बाद रोहित शर्मा ने पिच को किया नमन, मैदान की मिट्टी खाई

नई दिल्ली(एजेंसी)। टीम इंडिया ने टी-20 वर्ल्ड कप 2024 का खिताब अपने नाम कर लिया है। भारत ने फाइनल में दक्षिण अफ्रीका को हराकर दूसरी बार विश्व विजेता बनी है। धोनी के बाद रोहित शर्मा ऐसे कप्तान बने जिनकी कप्तानी में भारत ने टी-20 वर्ल्ड कप का खिताब अपने नाम करने में...टीम इंडिया ने टी-20 वर्ल्ड कप 2024 का खिताब अपने नाम कर लिया है। भारत ने फाइनल में दक्षिण अफ्रीका को हराकर दूसरी बार विश्व विजेता बनी है। धोनी के बाद रोहित शर्मा ऐसे कप्तान बने जिनकी कप्तानी में भारत ने टी-20 वर्ल्ड कप का खिताब अपने नाम करने में सफलता हासिल की। इस जीत के बाद कप्तान रोहित शर्मा, विराट कोहली और हार्दिक पांड्या समेत सभी खिलाड़ी इमोशनल नजर आए। कई खिलाड़ियों के मैदान पर ही आंसू झलक पड़े। भारत के चैंपियन बनने के बाद रोहित शर्मा ने जो किया, उसे जानने के बाद आप भी उन्हें सैल्यूट करने से नहीं रोक पाएंगे। -रोहित शर्मा ने पिच को नमन किया विश्व विजेता बनने के बाद रोहित शर्मा ने बारबाडोस की पिच को नमन किया और पिच की मिट्टी खाई। सोशल मीडिया पर एक वीडियो सामने आया है, जिसमें रोहित शर्मा पिच की मिट्टी चखते हुए नजर आ रहे हैं। रोहित शर्मा ने इस पल को यादगार बनाने के लिए यह किया।

भारत को कार्बन उत्सर्जन कम करने के लिए 1.5 अरब डॉलर का ऋण देगा विश्व बैंक

नई दिल्ली(एजेंसी)। विश्व बैंक ने कम कार्बन उत्सर्जन वाले ऊर्जा उत्पादन के विकास में तेजी लाने के लिए दूसरे ऑपरेशन के तहत भारत को 1.5 अरब डॉलर के ऋण को मंजूरी दी है। विश्व बैंक ने शुक्रवार को वाशिंगटन में बताया कि 'लो-कार्बन एनर्जी प्रोग्रामेटिक डेवलपमेंट पॉलिसी ऑपरेशन' का दूसरा चरण ग्रीन हाइड्रोजन और इलेक्ट्रोलाइजर के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए सुधारों में मददगार होगा, जो ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादन के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण तकनीक है। यह ऑपरेशन सरकार की ऊर्जा सुरक्षा और विश्व बैंक की हाइड्रोजन फॉर डेवलपमेंट (एच4डी) भागीदारी के अनुरूप है। विश्व बैंक के अनुसार, सुधारों के परिणामस्वरूप वित्त वर्ष 2025-26 से प्रति वर्ष कम से कम 4,50,000 टन ग्रीन हाइड्रोजन और 1,500 मेगावाट इलेक्ट्रोलाइजर का उत्पादन होने की उम्मीद है। इसके अलावा, यह अक्षय ऊर्जा क्षमता को बढ़ाने और कार्बन उत्सर्जन में प्रति वर्ष पांच करोड़ टन कमी लाने में भी महत्वपूर्ण रूप से मदद करेगा। यह ऑपरेशन राष्ट्रीय कार्बन क्रेडिट बाजार को और विकसित करने के कदमों का भी समर्थन करेगा। भारत में विश्व बैंक के निदेशक ऑगस्त तानो कुआमे ने कहा, विश्व बैंक को भारत की लो-कार्बन विकास रणनीति का समर्थन जारी रखने की प्रसन्नता है, जो देश के शुद्ध-शून्य लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद करेगा और निजी क्षेत्र में स्वच्छ ऊर्जा के क्षेत्र में नौकरियां पैदा करेगा। कुआमे ने कहा, पहले और दूसरे, दोनों ऑपरेशनों में ग्रीन हाइड्रोजन और नवीकरणीय ऊर्जा में निजी निवेश को बढ़ावा देने पर ज़ोर दिया गया है। भारतीय अर्थव्यवस्था के तेज़ी से बढ़ने की उम्मीद है। विश्व बैंक के अनुसार, आर्थिक विकास के साथ उत्सर्जन वृद्धि पर लगाम लगाने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ाना होगा, ख़ास तौर पर औद्योगिक क्षेत्रों में। ऑपरेशन के लिए टीम लीडर की भूमिका निभा रहे ऑरेलियन क्रूस, शियाओडोंग वांग और सुरभि गोयल ने कहा, भारत ने ग्रीन हाइड्रोजन के लिए घरेलू बाज़ार विकसित करने के लिए साहसिक कदम उठाए हैं, जो तेज़ी से विस्तारित नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता पर आधारित है।

कृषि क्षेत्र की चुनौतियों के निदान के लिए पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप जरूरी : विशेषज्ञ

रायपुर। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) और अग्रणी कृषि-इनपुटकंपनी धानुका के विशेषज्ञों ने किसानों के सामने आने वाली चुनौतियों कासमाधान करने के लिए पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप को प्रगाढ़ करने केउद्देश्य के साथ एक साथ आकर रायपुर के आईजीकेवी के प्रांगण मेंआईसीएआर और धानुका एग्रीटेक द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित केवीकेकार्यशाला को संबोधित किया। कृषि क्षेत्र की चुनौतियों के समाधान के लिए सरकार पब्लिक-प्राइवेटपार्टनरशिप को बड़े पैमाने पर प्रोत्साहित कर रही है। इस तरह से सहयोग सेसरकारी और निजी संस्थाओं के संसाधन, विशेषज्ञता और नवीन समाधानएक ही जगह लाने में मदद मिलती है, जिसकी कृषि विस्तार सेवाओं कीपहुंच और प्रभावशीलता को बड़े स्तर पर ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका है, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय (आईजीकेवी) के उपकुलपति डॉ. गिरीशचंदेल ने कहा। विशेषज्ञों ने इस अवसर पर देशभर में कृषि उत्पादन और किसानों की आय मेंवृद्धि के लिए अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी को अपनाने पर भी जोर दिया। कार्यशाला में मुख्य भाषण में धानुका समूह के चेयरमैन डॉ. आर. जी. अग्रवाल ने कहा, भारतीय खेती-बाढ़ी को आईटी, आईओटी, प्रिसिजनएग्रीकल्चर और ड्रोन जैसी अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी से तुरंत जोड़ना बेहदजरूरी है। प्रति एकड़ कृषि उत्पादन बढ़ाने में इसकी बहुत ही महत्वपूर्णभूमिका रहेगी, जो कि कुछ विकसित और चीन जैसे विकासशील देशों कीप्रति एकड़ उत्पादकता से काफी कम है।

रियलमी ने 8,999 रुपये मूल्य में अपने सेगमेंट के एकमात्र वेगन लैदर डिज़ाईन के साथ रियलमी सी 63 पेश किया

नई दिल्ली। भारतीय युवाओं के सबसे लोकप्रिय स्मार्टफोन ब्रांड, रियलमी ने आज अपनी चैंपियन सीरीज़ में सबसे नया स्मार्टफोन रियलमी सी63 पेश किया। रियलमी सी63 एक बजट-फ्रेंडली स्मार्टफोन है, जो अपने सेगमेंट में एकमात्र वेगन लैदर डिज़ाईन के साथ स्टाईल और ड्यूरेबिलिटी प्रदान करता है। रियलमी सी63 में 45 वॉट का फास्ट चार्जर दिया गया है, जो इसे बहुत तेजी से चार्ज कर देता है। साथ ही इसकी 5,000 एमएएच की बैटरी भारी उपयोग के बाद भी पूरे दिन पर्याप्त पॉवर प्रदान करती है। रियलमी सी63 में फ्लैगशिप लेवल के एआई अनुभव और इनोवेटिव फीचर्स जैसे एयर गेस्चर, रेनवॉटर स्मार्ट टच और इसका अत्यधिक लोकप्रिय मिनी कैप्सूल 2.0 फीचर दिए गए हैं। इस लॉन्च के बारे में रियलमी के प्रवक्ता ने कहा, ''हम अपनी चैंपियन सीरीज़ में नया स्मार्टफोन, रियलमी सी63 पेश करके उत्साहित हैं। रियलमी में हम ऐसी इनोवेटिव टेक्नोलॉजी प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं, जो हमारे युवा ग्राहकों की जरूरतों और अपेक्षाओं को पूरा कर सके। रियलमी सी63 इसी प्रतिबद्धता का प्रमाण है, और किफायती मूल्य में अनेक आधुनिक फीचर्स प्रदान करता है। हमारा मानना है कि रियलमी सी63 अपने अद्वितीय स्टाईल, ड्यूरेबिलिटी और अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी के साथ बजट स्मार्टफोन के सेगमेंट में नए मानक स्थापित कर देगा।''

सोनी इंडिया की शानदार ब्रेविया 7 मिनी एलईडी सीरीज़ के साथ घर में लें सिनेमा का आनंद

नई दिल्ली: सोनी इंडिया ने आज नई ब्रेविया 7 सीरीज़ के लॉन्च की घोषणा की, जो अपने उन्नत फीचर्स और अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी के साथ बेजोड़ ऑडियो और विज़ुअल अनुभव प्रदान करती है। यह सीरीज़ सिनेमैटिक कंटेंट में वास्तविकता के अहसास को और बढ़ाती है और घर पर बेहतरीन पिक्चर और साउंड क्वालिटी प्रदान करती है, जिससे दर्शक बड़ी स्क्रीन के जादू के साथ फिल्मों का आनंद ले सकते हैं। ब्रेविया 7 सीरीज़ में शानदार कॉग्निटिव प्रोसेसर एक्सआर, मिनी एलईडी और एक्सआर ट्रिलुमिनोस प्रो टेक्नोलॉजी का मेल है ताकि जीवंत दृश्य और इमर्सिव साउंड प्रदान किया जा सके। इस सीरीज़ में गूगल टीवी इंटीग्रेशन और सोनी पिक्चर्स कोर (जो पहले ब्रेविया कोर था) जैसे स्मार्ट फीचर भी शामिल हैं, जो उपभोक्ताओं को मनोरंजन का शानदार अनुभव प्रदान करते हैं। सोनी अपने ब्रेविया ब्रांड को बेहतरीन होम सिनेमा अनुभव प्रदान करने के लिए नया स्वरूप दे रही है और स्ट्रीमिंग सेवाओं के विस्तार के मद्देनज़र घर पर फिल्में देखने के बढ़ते रुझान का लाभ उठा रही है। डिजिटल सिनेमा कैमरे, पेशेवर मॉनिटर और हेडफोन सहित अपने व्यापक उत्पाद लाइनअप के मद्देनज़र सोनी को सिनेमा उद्योग और फिल्म निर्माताओं के रचनात्मक इरादों की गहरी समझ है। ब्रेविया 7 सीरीज़ स्टूडियो कैलिब्रेटेड मोड से लैस है जो घर के माहौल में कंटेंट क्रिएटर अपनी पसंद की इमेज क्वालिटी पा सकते हैं। स्थापित नेटफ्लिक्स एडेप्टिव कैलिब्रेटेड मोड और सोनी पिक्चर्स कोर कैलिब्रेटेड मोड को आगे बढ़ाते हुए, सोनी प्राइम वीडियो कैलिब्रेटेड मोड पेश कर रही है। यह नया मोड ग्राहकों को शानदार इमेज क्वालिटी प्रदान करता है जो फिल्मों, सीरीज़ और पहली बार लाइव स्पोर्ट्स के लिए स्वचालित रूप से कैलिब्रेट किया जाता है। ब्रेविया 7 सीरीज़ आईमैक्स एन्हांस्ड है और डॉल्बी विजन0 और डॉल्बी एटमॉस0 दोनों को सपोर्ट करती है, जो डिज्नी+, प्राइम वीडियो, नेटफ्लिक्स और अन्य लोकप्रिय स्ट्रीमिंग सेवाओं पर पसंदीदा कंटेंट में अविश्वसनीय चमक, शार्प कंट्रास्ट, समृद्ध रंग और इमर्सिव साउंड प्रदान करती है।

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dvpnews.in
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, मंगलवार 02 जुलाई 2024

जैन समाज का चातुर्मास 20 जुलाई से प्रारंभ

रायपुर (विश्व परिवार)। नगर में इस वर्ष भी जैन समाज के अनेक चातुर्मास हो रहे हैं। फलस्वरूप जैन संतों व साध्वियों के आगमन भी प्रारंभ हो चुके हैं। उक्त जानकारी देते हुए सामाजिक कार्यकर्ता ओमप्रकाश बरलोटा ने बताया कि इस वर्ष चातुर्मास 20 जुलाई से प्रारंभ हो रहा है।

संक्षिप्त समाचार

आयुक्त ने स्वयंसेवी संस्थाओं की सहभागिता से वृक्षारोपण अभियान चलाने दिये निर्देश

रायपुर (विश्व परिवार)। आज नगर पालिक निगम रायपुर के आयुक्त श्री अबिनाश मिश्रा ने वृक्षारोपण, रैन वाटर हार्वेस्टिंग, स्वच्छ भारत मिशन तथा वार्ड परिसीमन के संबंध में सभी जोन कमिश्नरों की बैठक ली. बैठक में आयुक्त ने सभी जोन कमिश्नरों को वृक्षारोपण के लिए जोनवार लक्ष्य दिए तथा वृक्षारोपण हेतु इच्छुक स्वयंसेवी संस्थानों की सहभागिता से समाजहित में पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से वृक्षारोपण करवाने के निर्देश दिये हैं। आयुक्त ने नगर में सफाई व्यवस्था चुस्त - दुरुस्त बनाने सहित रैन वाटर हार्वेस्टिंग कार्य का सतत निरीक्षण और वार्ड परिसीमन का कार्य तय समयसीमा के पूर्ण करने के निर्देश दिये.

वार्ड परिसीमन, सफाई व्यवस्था, रैन वाटर हार्वेस्टिंग पर दिये निर्देश

निगम जोन 9 की टीम ने सड्डू क्षेत्र में नाले में गिरे मवेशी को सुरक्षित बाहर निकाला

रायपुर (विश्व परिवार)। आज रात्रि नगर पालिक निगम जोन नम्बर 9 के तहत सड्डू आवासीय क्षेत्र के रहवासियों ने वहाँ नाले में एक मवेशी के अचानक गिर जाने की जानकारी नगर पालिक निगम रायपुर को दी. इस जानकारी को तत्काल संज्ञान में लेकर नगर निगम आयुक्त श्री अबिनाश मिश्रा द्वारा दिये गए आदेशानुसार नगर निगम जोन 9 जोन कमिश्नर श्री संतोष पाण्डेय के निर्देश पर नगर निगम जोन 9 स्वास्थ्य विभाग की काऊ कैचर टीम काऊ कैचर वाहन लेकर जोन स्वास्थ्य अधिकारी श्री आत्मानंद साहू, स्वच्छता निरीक्षक श्री महेंद्र कलिहारी, स्वच्छता पर्यवेक्षक श्री भोला तिवारी की उपस्थिति में तत्काल सम्बंधित क्षेत्र सड्डू के नाला के स्थल पहुंची और रात्रि में नाले में अचानक गिरे मवेशी को सुरक्षित बाहर निकाल लिया. सड्डू आवासीय क्षेत्र के रहवासियों ने नाले में अचानक गिरे मवेशी को बाहर सुरक्षित निकाले जाने के इस कार्य को लेकर नगर निगम जोन क्रमांक 9 के स्वास्थ्य विभाग की काऊ कैचर टीम की सराहना की।

पढ़ाई की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दें : मुख्यमंत्री विष्णु देव साय

कलेक्टर सहित विभागीय अधिकारी स्कूलों का करें सतत निरीक्षण

शिक्षकों और स्कूलों के युक्ति-युक्तकरण के लिए तैयार करें प्रस्ताव, स्कूलों में 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के तहत बच्चों से लगवाएं पेड़

- शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए नीति होगी तैयार
- स्कूलों के जीर्णोद्धार कार्यों की होगी जांच
- स्कूलों के अधूरे निर्माण कार्य कराएं पूर्ण

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने स्कूल शिक्षा विभाग की समीक्षा बैठक में कहा कि शिक्षा उन्नति का मूल मंत्र है। बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जाए। यह सुनिश्चित करें कि स्कूलों में अनुशासन बना रहे। विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी मैदानी स्तर पर जाकर स्कूलों में अध्ययन-अध्यापन की गुणवत्ता की मॉनिटरिंग करें। कलेक्टर भी हर माह दो से तीन स्कूलों का दौरा कर वहां निरीक्षण करें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सुशासन और पारदर्शी प्रशासन हमारा लक्ष्य है। राज्य सरकार का यह प्रयास होगा कि बच्चों को स्कूल का बेहतर भवन मिले और वहां पढ़ाई-लिखाई की अच्छी व्यवस्था सुनिश्चित हो। मुख्यमंत्री ने स्कूलों के जीर्णोद्धार कार्य की धीमी गति पर कड़ी नाराजगी जताते हुए कहा कि जर्जर स्कूलों के जीर्णोद्धार के काम में ढिलाई बर्दाश्त नहीं की जाएगी। कलेक्टर स्कूल भवनों की सुदृढ़ता की स्वंय मानिटरिंग करें। मुख्यमंत्री ने कहा कि जर्जर स्कूलों के जीर्णोद्धार के लिए प्रारंभ की गई स्कूल जतन योजना के तहत जीर्णोद्धार कार्यों की जांच की जाए तथा स्कूल जतन योजना में आबंटित राशि का उपयोग कर कार्यों को पूरा किया जाए। समीक्षा के दौरान मुख्यमंत्री ने शिक्षकों और शालाओं के युक्ति-युक्तकरण के लिए प्रस्ताव अगले कैबिनेट की बैठक में प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि इससे शालाओं में शिक्षकों की कमी दूर करने में मदद मिलेगी। बैठक में मुख्यमंत्री के सचिव श्री राहुल भगत और डॉ. बसवराजू एस., स्कूल शिक्षा सचिव श्री सिद्धार्थ कोमल सिंह परदेशी भी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी ने मन की बात कार्यक्रम में ''एक पेड़ मां के नाम'' लगाने का आव्हान किया है। बारिश के मौसम में ऐसे स्कूल जहां चार दीवारी हो, वहां बच्चों से पेड़ लगवाए जाएं। बच्चे ही पेड़ों की देखभाल करें। नीम, गुलमोहर, करंज आदि प्रजातियों के पेड़ लगाए जाएं।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि शिक्षकों को रोटेशन के आधार पर प्रशिक्षण देने के लिए प्रशिक्षण नीति तैयार की जाए, ताकि सभी शिक्षकों को प्रशिक्षण प्राप्त हो सके। मुख्यमंत्री ने कहा कि स्कूलों से बच्चों के पालकों को भी जोड़ा जाए। छत्तीसगढ़ के शासकीय स्कूलों में इस वर्ष पहली बार 6 अगस्त को प्रदेशव्यापी मेगा-पीटीएम आयोजित किया जा रहा है।

आरटीई के तहत ड्राप आउट रोकने मेंटॉर होंगे नियुक्त : छत्तीसगढ़ में आरटीई के तहत गैर अनुदान प्राप्त अशासकीय विद्यालयों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के ड्राप आउट पर अंकुश लगाने के लिए जिलेवार अधिकारियों को मेंटॉर के रूप में नियुक्त किया जाएगा। इस संबंध में स्कूल शिक्षा सचिव ने सभी कलेक्टरों को पत्र लिखा है। मेंटॉर के रूप में नियुक्त अधिकारी आरटीई के तहत चयनित विद्यार्थियों का प्रवेश सुनिश्चित करेंगे। बच्चों को यदि कोई समस्या आती है तो उनके पालकों, शाला प्रबंधन और प्रशासन से मिलकर उसका समाधान करेंगे और पढ़ाई जारी रखने के लिए बच्चों और उनके पालकों को प्रोत्साहित करेंगे। -शेष पेज 5 पर

शिक्षा हमारे जीवन की सबसे बड़ी धरोहर है : लखन लाल देवांगन

नोनबिर्रा में जिला स्तरीय शाला प्रवेश उत्सव का किया गया आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। वाणिज्य, उद्योग एवं श्रम मंत्री श्री लखन लाल देवांगन आज कोरबा जिले के पाली विकासखंड के ग्राम नोनबिर्रा में शाला प्रवेश उत्सव समारोह में शामिल हुए। उन्होंने उपस्थित बच्चों को देश का बेहतर नागरिक बनने और प्रतिदिन स्कूल आकर पढ़ाई करने का आव्हान किया। श्री देवांगन ने कहा कि शासन की मंशा है कि सभी विद्यार्थी शिक्षा अर्जन कर बेहतर नागरिक बनें। शिक्षा हमारे जीवन की सबसे बड़ी धरोहर है, जिसका बंटवारा नहीं किया जा सकता। शिक्षा से ही देश की प्रगति होती है। घर का एक व्यक्ति शिक्षित होने पर परिवार जागरूक और शिक्षित होता है।

मुख्य अतिथि श्री देवांगन ने उपस्थित ग्रामीणों से अपने बच्चों को स्कूल भेजने तथा बच्चों की पढ़ाई लिखाई में स्वयं रूचि लेते हुए बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए अधिक से अधिक प्रयास करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने शासन की कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी देते हुए बताया कि देश के पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री अटल बिहारी बाजपेयी ने सर्व शिक्षा अभियान प्रारंभ कर दूरस्थ क्षेत्रों के बच्चों को शिक्षा से जोड़ा। हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा नई शिक्षा नीति के माध्यम से शिक्षा के विकास को बढ़ावा दिया गया है। उन्होंने कहा कि माता-पिता को अपने बच्चों को पढ़ाई-लिखाई के लिए प्रेरित करना चाहिए एवं शिक्षा में किसी प्रकार की बाधा नहीं आने देना चाहिए। उन्होंने बालक एवं बालिकाओं को शाला में लाने एवं शाला में निरंतर बनाये रखने में सहयोग प्रदान करने की अपील ग्रामीणों से की।

मंत्री श्री देवांगन ने कहा कि शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति जागरूक होता है तथा बेहतर नागरिक बन पाता है। उन्होंने कहा कि शासन का लक्ष्य है कि कोई भी बच्चा स्कूल न छोड़े, उनकी नियमित उपस्थिति बनी रहे एवं उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त हो।

25 वर्षों से अपनी सेवाओं में कार्यरत तारवानी एंड एसोसिएट्स नवनिर्मित भवन हरिगिर टॉवर में स्थानांतरित

ज्ञान बढ़ाये निर्भय होकर बिज़नेस करे इसी दिशा में हमारी टीम सदा कार्य करेगी : सीए चेतन तारवानी

रायपुर (विश्व परिवार)। तारवानी एंड एसोसिएट्स सदर बज़ार का कार्यालय अपने नवनिर्मित भवन हरिगिर टॉवर में शिफ्ट हो गया है, नये भवन का उद्घाटन संत डॉ. युधिष्ठिर लाल शदाणी के कर कमलों से हुआ साथ में शक्तिधाम स्वामी हरिगिर महाराज धर्मशाला के पिठाधीश साईं रामचंद जी वाधवा श्रीचंद सुंदरानी साईं कुलदीप जुनेजा जल कुमार मसंद पूरन लाल अग्रवाल विधान मिश्रा क़ेदार गुप्ता प्रमोद दुबे अमर परवानी महेश दरयानी भीमन दास तारवानी भी उपस्थित थे। नये भवन हरिगिर टॉवर में ग्राउंड फ्लोर में रिसेप्शन एवं वेटिंग एरिया बनाया गया है।

प्रथम मंजिल में ऑडिट, जीएसटी, कंपनी लॉ मैटर्स एवं कैश काउंटर से संबंधित पूर्ण कार्य सीए सिद्धांत माखीजा एवं सीए सुरक्षा तारवानी, रोशनी वैद्य, अर्पणा नायक एवं अन्य आर्टिकल की टीम के अंतर्गत होगा। द्वितीय मंजिल में इनकम टैक्स, फाइनेंस, सब्सिडी, सभी प्रकार के लाइसेंस, अकाउंट्स से संबंधित कार्य, एनजीओ, एवं समिति से संबंधित पूर्ण कार्य सीए भावना अजवानी एवं सीए दिनेश तारवानी, रुपाली सोनी, सीमा खोंडे, श्रीजन गुप्ता, अंशु अग्रवाल, मुस्कान शर्मा एवं अन्य आर्टिकल की टीम के अंतर्गत होगा। तृतीय मंजिल में सीए चेतन तारवानी जिनके लीडरशिप में पूर्ण कार्य होगा उनके चैंबर एवं बोर्ड रूम होगा। चतुर्थ मंजिल जिसे मीटिंग एवं डाइनिंग हॉल के रूप में प्रयोग करने के लिए विशेष रूप से बनाया गया है।

साईं युधिष्ठिर लाल जी ने उद्घाटन के मौक़े पर सीए चेतन तारवानी की प्रशंसा करते हुए कहा सीए की प्रैक्टिस करना एक बात है लेकिन हर व्यापारी की मदद करना एवं उन्हें ज्ञान बढ़ा कर निर्भय हो कर व्यापार करने की प्रेरणा देना चेतन तारवानी की ख़ासियत है साईं राम चंद जी ने बधाई देते हुए उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएँ दी।

एनआईटी रायपुर में भारतीय न्याय संहिता के तीन नए अपराधिक कानूनों के प्रसार के लिए विशेष जागरुकता सेमिनार और क्विज कम्पटीशन का हुआ आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान रायपुर में दिनांक 1 जुलाई को संस्थान के ई-हॉल में भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) के तीन नए अपराधिक कानूनों के लिए विशेष जागरुकता सेमिनार और क्विज कम्पटीशन आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में प्रभारी निदेशक डॉ. आर. के. त्रिपाठी मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रहे। इसके साथ ही डीन (अकादमिक) डॉ. श्रीश वर्मा, हेड (सीडीसी) डॉ. समीर बाजपेयी, डीन (छात्र कल्याण) डॉ. नितिन जैन भी इस कार्यक्रम में उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता एचएनएलयू के लॉ के असिस्टेंट प्रो. डॉ. परवेश कुमार राजपूत रहे। संस्थान के ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर और बीएनएस के नोडल ऑफिसर डॉ. वाई. विजया बाबू ने इस कार्यक्रम के कॉर्डिनेटर की भूमिका निभाई। यह कार्यक्रम संस्थान के फैकल्टी मेम्बेर्स, स्टाफ मेम्बेर्स, स्कोलर्स और विद्यार्थियों के लिए काफी लाभदायक साबित हुआ जिससें उन्हें नए कानूनों से सम्बन्धित सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त हुई।

भारत सरकार ने दिनांक 1 जुलाई 2024 को भारतीय न्याय संहिता 2023 के नाम से जाने वाले तीन नए अपराधिक कानूनों के प्रावधानों को लागू कर दिया है। यह जागरूकता सेमिनार विशेष रूप से उन नए नियमों पर केंद्रित रहा जो मुख्य रूप से ई-एफआईआर दाखिल करने, पहली बार अपराधिक कृत्य में लिप्त अपराधियों, देशद्रोह, कम्युनिटी सर्विसेज इत्यादि और भारतीय न्याय संहिता 2023 के विभिन्न प्रावधानों की जानकारी देने में सहायक साबित होंगे।

डॉ. आर. के. त्रिपाठी ने ब्रिटिश काल के कानूनों को अपडेट करने और यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर बल दिया कि अपराधियों को नए कानूनी ढांचे के तहत उचित सजा दी जाए। मुख्य वक्ता डॉ. परवेश कुमार राजपूत ने समाज को आकार देने में कानूनों के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने भारत में पहले विधि आयोग के ऐतिहासिक गठन और भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) और आपराधिक प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) जैसे प्रमुख कानूनों के बारे में संक्षिप्त चर्चा की। डॉ. राजपूत ने भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) 2023 के साथ आईपीसी के रिप्लेसमेंट के बारे में विस्तार से बताया, जिसमें ई-एफआईआर की शुरूआत सहित एफआईआर और एनसीआर दर्ज करने के नए तरीकों के बारे में जानकारी दी गई। उन्होंने बीएनएस 2023 के तहत गवाहों और महिलाओं के लिए बढ़े हुए अधिकारों और सुरक्षा पर बात की और बीएनएसएस (भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता) और बीएसए (भारतीय साक्ष्य अधिनियम) पर भी चर्चा की। इन नियमों के तहत बारीकी से जानकारी देते हुए उन्होंने कहा कि किसी भी घटना की नए कानूनों के अनुसार की गई नियमत: कार्यवाही अपराधी को उचित सजा दिलाने में सहायक साबित होगी। उन्होंने विभिन्न घटनाओं का उदाहरण देते हुए अपनी बात सभी को बताई।

इसके साथ ही कार्यक्रम में नए बीएनएस कानूनों पर एक क्विज कम्पटीशन भी आयोजित किया गया। जिसमें जीरो एफआईआर क्या है? और जमानती अपराध क्या है? जैसे प्रश्न शामिल रहे। प्रतियोगिता के बाद सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये गये। डॉ. बाबू ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए नए कानूनों के बारे में जागरूक होने और व्यक्तियों और समाज दोनों के लिए उनके लाभों पर प्रकाश डालने के महत्त्व पर बल दिया।

मेगा प्लेसमेंट कैंप में हजारों युवाओं को मिला रोजगार

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के निर्देश पर जिला प्रशासन द्वारा आयोजित मेगा प्लेसमेंट कैंप से कई युवाओं को रोजगार मिल गया है। सालों से रोजगार की तालाश में भटक रहे बेरोजगारों के लिए प्लेसमेंट कैंप ने नई दिशा दिखाई है। इस कैंप के जरिए युवाओं और उनके परिवारों ने आंखों में जो सपने संजोए थे वे पूरे होने लगे है। इन्हीं युवाओं में भारतीय नगर निवासी दिव्यांग श्री सनी कुमार कुर्रे भी शामिल है। 25 वर्षीय श्री सनी ने बताया कि उन्हें जब मेगा प्लेसमेंट कैंप के आयोजन की जानकारी मिली तब उन्होंने बिना देरी किए इसमें शामिल होने का निर्णय लिया। आज उन्हें रोजगार मिल गया हैं। श्री श्याम अस्पताल के डायरेक्टर ने आज उन्हें नियुक्ति पत्र सौंपा। उन्हें बिलिंग स्टाफ के रूप में काम दिया गया है। वे कहते है कि उन्हें कभी उम्मीद नहीं थी कि इतनी अच्छी जगह उन्हें नौकरी मिल जाएगी। वर्ष 2012 में अपने साथ हुई दुर्घटना को याद कर वे आज भी सहम जाते हैं।

देश की न्याय प्रणाली के लिए आज ऐतिहासिक दिन : अरुण साव

आज लागू हुए तीन नए कानूनों के संबंध में जागरुकता कार्यक्रम में शामिल हुए उप मुख्यमंत्री

रायपुर (विश्व परिवार)। उप मुख्यमंत्री तथा विधि एवं विधाई कार्य मंत्री अरुण साव ने कहा कि आज देश की न्याय प्रणाली के लिए ऐतिहासिक दिन है। पुराने कानून को समाप्त करके नया कानून लागू किया गया है। जब कोई कानून बनाया जाता है, तो उसमें कानून बनाने वाले की सोच क्या है, उद्देश्य क्या है, ये बड़ा महत्व रखता है। कोई पीड़ित दंड नहीं, न्याय चाहता है। आज से प्रभावी हो रहे तीनों नए कानूनों को समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार किया गया है। इनके जरिए नागरिकों को पूरी पारदर्शिता के साथ समय पर न्याय मिल सकेगा। उप मुख्यमंत्री श्री अरुण साव ने आज मुंगेली जिला मुख्यालय के थाना सिटी कोतवाली में नए कानूनों के लागू होने के मौके पर आयोजित कार्यक्रम में ये बातें कहीं। उन्होंने भारतीय न्याय संहिता, भारतीय साक्ष्य अधिनियम और भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता के नए स्वरूप में आज अस्तित्व में आने पर लोगों को बधाई दी। उन्होंने इन कानूनों को बनाने की पृष्ठभूमि के बारे में विस्तार से बताया।

कार्यक्रम में मुंगेली के विधायक पुन्नूलाल मोहले ने कहा कि नए कानून के अनुसार अब लोग घर बैठे ऑनलाइन रिपोर्ट दर्ज करा सकते हैं। इसमें कई नए प्रावधान शामिल किए गए हैं जिससे लोगों को अब त्वरित न्याय मिल सकेगा। उन्होंने इन नए कानूनों के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को धन्यवाद ज्ञापित किया। मोहले ने पुलिस विभाग को समाज को न्याय दिलाने में ज्यादा से ज्यादा कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। मुंगेली के कलेक्टर राहुल देव और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक गिरिजाशंकर जायसवाल ने कार्यक्रम में मौजूद लोगों को नए कानूनों की उपयोगिता और उनके महत्व के बारे में विस्तार से जानकारी दी। वनमंडलाधिकारी संजय यादव, मुंगेली नगर पालिका के अध्यक्ष हेमेन्द्र गोस्वामी, उपाध्यक्ष मोहन मल्लाह, मुंगेली जनपद पंचायत के उपाध्यक्ष पवन पाण्डेय, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक पंकज पटेल और अधिवक्ता संघ मुंगेली के अध्यक्ष टीकम चंद्राकर सहित विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी और जनप्रतिनिधि भी कार्यक्रम में बड़ी संख्या में मौजूद थे।

कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह ने स्कूल शिक्षा विभाग के कार्यों और योजनाओं की समीक्षा की

छात्राओं को जल्द मिलेगी सायकिल, पंचायतों व स्कूलों की लाइब्रेरी में रखे जाएंगे बच्चों के लिए पुरानी स्कूली किताबें

कीचन गार्डन में उपयोगी साग-सब्जी का करें उत्पादन, बच्चों को जल्द मिलेगा दो-दो जोड़ी स्कूल ड्रेस

तीन वर्षों से अनुपस्थित कर्मियों पर होगी कार्रवाई : कलेक्टर

रायपुर (विश्व परिवार)। जिले के स्कूली बालिकाओं को जल्द ही साइकिल उपलब्ध कराए जाएंगे। इससे बालिकाओं को घर से स्कूल आने-जाने में बड़ी राहत मिलेगी। साथ ही पंचायत व स्कूलों की लाइब्रेरी में पुरानी ऐसी किताबें रखी जाएगी, जो अतिरिक्त हो या जिसे पढ़ा जा चुका है। यह नए विद्यार्थियों के लिए उपयोगी साबित होगी और विद्यार्थी अवकाश के दिन में भी उन किताबों को पढ़ सकेंगे। संकुल की पुरानी किताबों को जल्द ही लाइब्रेरी में संग्रहित किए जाएंगे। शासकीय, अनुदान प्राप्त और निजी स्कूलों में पाठ्य पुस्तकों का समय बद्ध वितरण किया जाए।

कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह ने कलेक्ट्रेट परिसर स्थित रेडक्रॉस सभाकक्ष में समीक्षा करते हुए कहा कि स्कूलों में कीचन गार्डन में ऐसे साग-सब्जी जैसे टमाटर, मिर्ची, धनिया का उत्पादन किया जाए, जो उपयोगी हो और बच्चों के मध्यान्ह भोजन में सब्जी काम आए। साथ ही बच्चों को दो-दो जोड़ी स्कूल ड्रेस जल्द से जल्द उपलब्ध कराया जाएं। कलेक्टर ने कहा कि यदि कोई स्कूल भवन या उसका कोई हिस्सा जर्जर हो और नए भवन का निर्माण कराया जाना हो तो पुराने भवनों का विधिवत रूप से नष्ट किया जाए और उनके मलबे का नीलामी की प्रक्रिया भी करें, इसकी जानकारी स्कूल अभिलेख में दर्ज करें। उन्होंने परीक्षा परिणाम में सुधार लाने और पढ़ाई में गुणवत्ता बनाए रखने के निर्देष दिए।

डॉ. सिंह ने स्कूल शिक्षा विभाग में तील साल से अनुपस्थित कर्मियों की सूची उपलब्ध कराने के निर्देश दिए गए है। इसके पश्चात उन कर्मियों पर कार्रवाई की जाएगी। कलेक्टर ने प्रत्येक विकासखंड से दो-दो स्कूल भवन के निर्माण मरम्मत और कीचन शेड बनाने के लिए प्रस्ताव तैयार कर भेजने के निर्देश भी दिए है। उन्होंने कहा कि किचन शेड ऐसा बनाया जाए जो उपयोगी हो। बालबाड़ी के बच्चों प्राथमिक शाला में दाखिला दिलाया जाए। उन्होंने कहा कि मध्यान्ह भोजन की जानकारी प्रतिदिन जिला पंचायत सीईओ को भेजी जाए। इसके अलावा आरटीई, छात्र दुर्घटना बीमा योजना, छात्रवृत्ति, नवाचार, शिक्षक सेटअप, महतारी दुलार योजना, समग्र शिक्षा के कार्यों की समीक्षा की। इस अवसर पर जिला पंचायत सीईओ श्री विश्वदीप, डीईओ श्री विजय खंडेलवाल, जिला समन्वयक समग्र शिक्षा श्री के. एस. पटले समेत अन्य अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे।

छत्तीसगढ़ के सभी 33 जिलों में प्रभारी सचिव नियुक्त

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के निर्देशानुसार छत्तीसगढ़ के सभी जिलों में जनकल्याणकारी कार्यक्रमों के क्रियान्वयन और विकास कार्यों की मॉनिटरिंग के लिए प्रभारी सचिव नियुक्त किए गए हैं। राज्य शासन द्वारा राज्य के सभी 33 जिलों के लिए अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव, सचिव, संचालक, विशेष सचिव को जिले का प्रभार दिया गया है। संबंधित जिले के प्रभारी सचिव, जिले में संचालित योजनाओं और विकास कार्यों की सतत् मॉनिटरिंग करेंगे, ताकि विकास कार्यों को गति दी जा सके। प्रभारी सचिव अपने भ्रमण के संबंध में एक संक्षिप्त टीप प्रतिमाह मुख्य सचिव को प्रस्तुत करेंगे।

Ajay Advt.

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा मे. विश्व परिवार इंडस्ट्रीज, प्लॉट नं.-421 सेक्टर-सी, सड़क नं.-7 उरला इंडस्ट्रीयल एरिया उरला, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354